



MA LIBRARY AMU



PE532



آرٹ  
پیشہ



पाव  
भार्या न  
स्य जी

پایے باکمی ہے آید  
دور شمس کی ہے آید  
الطاف زلف کی ہے آید  
ہف سیران کی ہے آید  
ذو دروان بہن کو کمی ہے آید

क्षणं वातो भूत्वा क्षणं मपि युवाव  
 म गसकः क्षणं विन हीनः क्षणं म  
 पिच सं पूर्ण विभवः ॥ जराजीर्णं  
 गै नंद इव वली माडित तनु नरः सं  
 सारात विशातियम धानी जघनिका  
 सु ॥ ११२ ॥

گهی مفلس گهی صاحب از مرد  
 گهی ترسان ز غف مشر میگرد

ہی طفل گہی عاشق جوان مرد  
 ہی پیری گہی باری گرسہ کرو

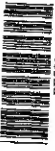
अहो वा हार वा बलवति रिपौ वा  
 सुहादिवा मणौ वा लोष्ट्र वा कुसु  
 म शयने वा हयदिवा ॥ तूणे वा  
 स्त्रेण वा मम सम दृशो योति  
 साः क्वचित्पुण्या राये शिव ।  
 शिवानि प्रलयतः ॥ ११३ ॥

شود و دشمن و یار و دوست یکبار در خوش  
 زمین با عشق یازنبا و یا خشک تر و تاز  
 شود و مردم بشوید بشوید بدین چنین

ز مار یا مالا یا خوش باشد  
 بهیتر گل خرد و تاز  
 ز لار ابدل آرم

इति श्रीभट्टहरिकृतवैरा  
 सम्पूर्णम्

MA LIBRARY AMU



PE532

یسا فسران انسان کا اور انسان کا اور

یسا فسران انسان کا اور انسان کا اور

सृजति तावद शेष गुणा कां पुरुष  
यत्न मत्तं करणं भुवः तदापि तत्क्षण  
गति करोति चेदहह कष्टम पंडित  
नाविधे ॥१९०॥

یہ عقل زبور جو بہر بہرین جسمیں آراست  
تو یہ لعل عقلش زلالہ سان پیش آراست

چو رہا طہیم ان ترا پے صن مین آراست  
بوی بہتر کردی جاودا فی جہنم انسان را

गानं सं कुचितं गति विगलिता भ  
ष्टाच दत्ता वलिः दृष्टि नश्यति व  
धते वधिरता वक्त्रं च लालायते ॥  
वाक्ये नाद्रियते च बान्धव जनो  
भायां न रुभ्रयते हा कष्ट पुरुष  
स्य जीर्ण वयसः पुनोप्यामित्रा  
यते ॥१९॥

تیزی چاہیے باکمی میے آید  
ضعف و رخصت و کجی میے آید  
لطف و لطاف ز کمال کجی میے آید  
رطف و مہربان کجی میے آید  
ذور دوران بہین کو کجی میے آید

این چہ حالیت کہ جسم کجی میے آید  
ہمہ دندان شکستند خالی و ہن  
تف و ہن بہت روان لطف و دل خوشاوت  
بہلہ بہن حالت پرست کہ قومی بینی  
کشت گنہ شام ہمین ترجمہ از بہر تر ہر



ہر روز عشرت عروج و مرجع

ہر آن نیست یک لمحہ آرام

ब्रह्मज्ञान विवेकिनोऽमलाधियः कु  
बन्त्यहो दुष्करं यन्मुचं स्युप भाग  
कोचन धनान्येका ततो निःस्पृहाः  
न प्राप्तानि पुरान स प्रति नव प्रा  
प्तौ हृद प्रत्ययो वाञ्छा मात्र परि  
ग्रहा एवपि परं त्यक्तं न शक्तायय

॥१९०८॥

کنند که ترک حقیقتا صدق پس انوسن آید  
ز خوشبختی تبول ترک پس انوسن آید  
مرا حاصل شد ز بهار پس انوسن آید  
به یک یک گزشتن خویش پس انوسن آید  
و بیله بر ترک به عقلان پس انوسن آید

به صاحب عقل و افتخار انوسن آید  
ز روز ویران و خوشش و صندل است بر ترک  
بماز مثل ترک خط دل و کس نمیدارد  
نه حاصل شد گفتوگو بود و نیند و چه امیر است  
کنند گنبدش اگر از ترک دنیا تا چه می باشد

व्याधीव तिष्ठति जरा परितर्जयती  
रोगाश्च शत्रव इव ग्रहणानि देह  
म् ॥ आयुः परित्यजति भिन्न घटा  
दि घास्यो लोक सत्था प्याहे तमा  
चरतीति चित्रम् ॥१९०९॥

عدو و دشمنان و بیماریها بران می آید

چه شیرازین بر پیرانی مشین و غران می آید

श्लेष दुःस्वयति करविषमे यौवने  
 विप्रयोगः ॥ नारीणा मप्यवज्ञा वि  
 लसति नियतं वृद्धभावोऽप्यसाधुः  
 संसारेरे मनुष्या वदति यदि सुखं  
 स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ॥ १०६ ॥

بمانند لطفه در جسم بر آنست  
 بهین طفلی چه سال گذرد ز مشکل  
 چه باید وصل لطفه بول آنست  
 نشیند سر کمون مردود باشد  
 بنیاد فوس جانان سیه ترا آرام شد حاصل  
 بنی نمیمی آری تو دل ناگن بر ب اصل

بجای پاک پر بول و بر آنست  
 نشیده دست و پا گذرد ز مشکل  
 جوانی صدمه از فرقت آنست  
 به پیری از زمان محجوب باشد  
 بنیاد فوس جانان سیه ترا آرام شد حاصل  
 بنی نمیمی آری تو دل ناگن بر ب اصل

प्रासु वर्ष शतं चणो परिमिते रात्रौ  
 तदर्थं गतं तस्या ह्यस्य परस्य चाह  
 सुपरं वातल हृदययोः ॥ शेषव्या  
 धि विप्रयोग दः स्व सहितं सेवा दि-  
 भि नीयते जीवि वारितरंग चञ्चल  
 तरे सौख्य कुतः प्राणिना ॥ १०७ ॥

و نصف شب و خواب برون  
 جوانی طفلی و پیری نخواستند  
 جوانی رفعت و بکار نشینی

عمر آن ساله شمر و نذر  
 بهائی حصه سر ترکیب دا و نذر  
 بهائی طفلی پیری در ضعیفی

वा॥१०४॥

<p>جوانی رفت پیری پیش آمد          زمان بر دزد چون آتش از کبر          زمار اخوش زمین جنگلا نرا          ز تیزی چاکه آرام جان را          که توده نشان ز یک یک را نشان شد</p>	<p>چو شد پیداکه خوف مرگ آمد          تر خواش از بر بقدر دولت صبر          ز خود بنیان عسلم و گیر آنرا          بصفت بر به عفتل را جگانه را          بین یک را از یک جاسد جدا شد</p>
---	---

आधि व्याधि शतैर्जनस्य विविधैरा  
 रोग्य सुन्मूल्यते लक्ष्मी यत्र पतति  
 तत्र निहतं हारा इव व्यापदः ॥  
 ज्ञातं ज्ञातं मवश्य माशु विवशं म  
 स्युः करो स्यात्मासा तत्किं नाम नि  
 रं कुशेन विधिना यन्निर्मितं सु-  
 स्थितम् ॥१०५॥

بدل و سولاس جسم از خوف بیماری کند جان را  
 مانند تن درستی ز ریشود و کرتا ملال آنرا  
 نقد پیدا که اورا خوف مرگ از پیش میگذرد  
 نمیدانم که آن شیء چیست که کیسان به میگزرد

कच्छेणा मेध्यमध्ये नियमिततु  
 नुभिः स्थीयते गर्भ मध्ये कान्ता वि

॥१०२॥

بدان فانی همه را جا خوف است اکبر می بینی  
بند اول به بشنیده خویش را از نفس پاک آرد

بدان تو انقدر لذات دنیا را که می بینی  
همینک مرگ و پیرایش کند بنده این کار

धन्यानां गिरि कन्दरे नि वसतां ज्यो  
तिः परं ध्यायता मानन्दा शुजलं पि  
वन्ति शकुना निःशक मङ्कु शयाः ॥  
अस्माकं तु मनोरथो पर चित्त प्रा  
साद वापी तट कीडा कानन कलि  
कौतुक जुषा मायुः परि क्षीयत ॥

॥१०३॥

تجلی حق به بیند زین دوازدهم چون دلش  
نهد بر دست و زانو باد و اندوخته چشمش را  
که میگذرد و نمیداند به عیش مشغول و بس شوار

عینی مردانکه گذرانند بخار کوه عمر خویش  
نه ترسد مرغ صحرایی و نه شد آب چشمش را  
بدان عمر خیال و هم چاه است لبش شوار

आघ्रातं मरणेन जन्म जरया वि  
ह्वलं यौवनं सन्तोषो धन लि  
प्ताया शम सुखं प्रौढां गना विभ्र  
मैः ॥ लोके र्मत्सारिभिर्गुणा वन भु  
वो व्याले चृपा दुर्जने रस्यै र्येण वि  
भ्रान्ति रप्यप हता यस्तं न किं केन

چرخ این خوش کلو داره گمان را که پیر و غم سیرانچاری سجان را عبادت عشوه کشته دل را در دل مہمان را	چرا تو یکیشی ای جان کمان را منبدای زن بے ماتو میان را ز بوس پاکشید کوماہ را دوسر تمید ارد
---	---

कौपीनं शतखण्डजर्जरतरं कन्या  
पुनस्तादृशी निम्बितं सुखसाध्यमे  
क्षयमशने शय्या समशाने वने ॥  
मित्रा मित्र समानताति विमला  
चिन्ताति भूत्यालये ध्वस्ताशेषमद  
प्रमाद सुदिनोयोगी सुखं तिष्ठति ॥

۱۱۹۱۱۱

فرولقش بسشکسته نیزکش بے آرام جانے مروہ جانی دلش خانے ز فکر و بیم ایمین نشد ز در جنگل خدا دوست	زعد بوسیدہ و کوہین کہنہ ترود قطع اسل ازمان گدائی نباشد دوست اورانے ز دشمن بران تو این چنین را از خدا دوست
--	--

भोगा भंगुर वृत्तयो बहुविधा स्तैरे  
व चायं भव सत्कस्यव वृत्त परि  
भ्रम तरे लोकाः कृतं चोष्टितैः ॥आ  
शा पाशा शतोप शान्ति विशदं  
चेतः समा धीयता कामोच्छिति  
वश स्वधा मन यदि भ्रष्ट यमस्म

ला त्पिण्डो कस्य मगत्सं कुलालव  
इमयति मनो नो जानीमः किमत्र  
विधास्यति ॥६८॥

کلالی ساکھارو چ خرابرم چ کل و سبت  
نمیدانم کسی از فضل او یا چه خواهد ساخت

بہین برہارہ عاشقان محفل کی افقہ  
نمیدانم چه میسازد ولم را او چہ خواہد ساخت

महेश्वरे वा जगतां मधीश्वरे जना  
दने वा जगदन्त रात्मनि ॥ तयो न  
भेद प्रति पत्ति रस्ति मे तथापि भक्ति  
स्तरुणोन्दशेखरे ॥६९॥

جبار دینے با جگہ نہایت منی  
دلے دل ہائے شب شدہ  
بہ بخشاید یا فانی کند  
بلے دل ما بہاے شیو ترین ست

ہیشوری با جگتا در ہیشوریہ  
نہ فرق دارم من جان درین دیو  
میان شیو و در سپدا کنندہ  
دہانتم نہ قمری از رین ست

रेकंदर्पकरंकदर्थयसि किंकोदाडुरं  
कारवे रेरेकोकिलकोमलेः कलरवेः  
कित्वं हपाजल्यसि मुग्धोस्निग्धविदाध  
क्षेप मधुरैर्लोलैः कटाक्षै रलं चे  
तश्चाम्बित चन्द्रचूडचरण ध्याना  
मृतं वर्तते ॥१००॥

वस्य ममिनं भिक्षादने माद नम ॥  
 आसन्न मरणं च माल समयस्या  
 समुत्पद्यते ना काशीं परिहृत्य हन  
 विवधै रस्यत्र किं स्थीयते ॥ ८६ ॥

ریاضت کش ریاضت کیش زاده  
 گدائی نان پے زریا سیتن بود  
 ندید بهتر ازین چیزے سرافرا  
 که دانا و انداز احوال تفسیر

تجاربہ ہیش خوردن میوہ تازه  
 مکی کرین بجایے پیرین بود  
 رسیدن ترک جو بس زمت افزا  
 ازین بہتر نایس را بکمان گیر

नायंते समयो रहस्य मधुना निद्रा  
 ति नाथो यदि स्थित्वा द्रक्ष्यति कु  
 प्यति प्रभुरिति हारेषु येषां चः ॥  
 चेत स्नान पहाय याहि भवनं देवस्य  
 विश्वेशितु निर्दो वारिक निर्दयोक्त  
 परुषे निःसीम शममदं ॥ ८७ ॥

لشینی اگر شود و خوش جو بنید و دای نام  
 که انجانیت در یانے تو یابی کار با کام

نخلیہ ہست اکنون برو کنون اتقا در آرام  
 شرم بابر ایدل بارس رو بہ مشو شیر

प्रिय सरिख विपदराड व्रातप्रताप  
 परंपरातिपरिचपलेचिन्ताचक्रे  
 निधाय विधिः स्वतः ॥ मृदमिव च

न मुचितं तस्यैव विद्या गता मय्येते  
परमेश्वराः शिरसि ये ब्रह्म न सेवा  
जालि ॥ ६४ ॥

زیر پوشش است آفتاب و ستاره  
روان است خوش زن علم بهر نگار  
که بهتر است از گفتار ما هر آنچه میگوید

پای آرام نگار کوه غار کوه خانه را  
سیر اشجار غرم و غرض غلامی علف زنی را  
نجات کند گذران اول او را تبی گویم

सत्यामेव विलोकी सारिणि हरशि  
रश्चुम्बनीच च्छटाया सदृति कल्प  
यन्त्या वट विटप भवे बल्कलैः सत्  
फलेश्च ॥ कोऽयं विहान् विपन्तिञ्च  
रजनिन रुजा तीव दुःशासिकानां  
वक्त्रं वीक्ष्येत् दुःस्थे याद हि न वि  
भूयात्स्वेकुदुस्वः नुकम्पाम् ६५

بماند از آمد بس بهتر اینجا  
فقران را چنان و کش با خوش  
که می آرد بر تیا لغت انس  
همین بهتر دلد در کنار نگار جا گیرد

کنار نگار سرخس و ستاره اینجا  
خوشا بر پوست اش باشد با خوش  
و بعد دل گیرد پیدایش انس  
و بعد دل کو صیفان را که میخ از روغن بر گردد

उद्यानेषु विचित्र भोजन विधि स्त्री  
व्राति तौघे तपः को पीना वरणां सु



प्रदीपे कामाग्नौ सुहृत्तरसा ज्जिष्णु  
ति यधु प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति  
विपर्यस्यति जनः ॥६२॥

بے گزند خوش غذا سرخ و زرد  
ملاؤ کہ نیک است با عسر کن  
فدین جسم فانی بحس کسی است

بے تشنگی میخورد آب سرد  
بہ تنہوت دہر رو بے وصل زن  
نہم کہ زمین یک دواے یکی است

स्नात्वा गाङ्गैः पयोभिः शुचिकुसुम  
फलै रचयित्वा विभो त्वा ध्येयं ध्या  
नं नियोज्य क्षिति धर कुहर प्राव  
पर्यंक मूले ॥ आत्मा रामः फलाशी  
गुरु वचन रत्न स्वत्प्रासादात्मरा  
रे दुःखान्मोक्ष्य कदाहं तव चरण  
रतो ध्यानमार्गेकप्रश्नः ६३

چشمتش شو کوئم دل را ز دل دریا شیو دارم  
خورم بر رستم از دنیا بیای مثل چیان دارم

ز آب گنگے دھسل مندل بیت آرم  
نشتیم اندر زو عازمی زمر شد قول یاد آرم

शय्या शैल शिला गृहं गिरिं पुहा  
वस्त्रं तरुणां त्वचः सारंगाः सुहृ  
दो ननु क्षिति रुहां वृत्तिः फलैः  
कौमलैः ॥ येषां निर्भरमस्य पा

ज्ञानं सतां मानमदादि नाशनं केषां  
चिदेन न्मद मान कारणम् ॥ स्थाने  
विविक्तं यमिनो विसुक्तये कामातु  
राणां भति काम कारणम् ॥ ६० ॥

همینک دز نظریان از پے تمخی توابع شد  
همینک شهوتی را از پے شهوت توابع شد

لیاقت و شیرینان از پے خالق توابع شد  
پیشانی نشستن بر عقلا سحر دیدن

जीर्णा एव मनोरथाः स्वहृदये यातं  
जरां यौवने हन्तांगेषु गुणाश्च घंध्य  
फलतायाता गुणै विना ॥ किंयु  
क्तं सहसा भ्युपैति बलवान् कालः  
कृतांतोऽक्षमा ह्याज्ञाने स्मरशासनं  
द्वियुगलं सुवत्वास्ति नाभ्यागतिः ६१

جوانی رفت چون پیری اثر کرد  
ندیدم کس قدر دانا می علم  
شناخته نه من چیز شنیده  
نمی بینم را بائی خویش اسی جان

ضمیفی در خیال ما اثر کرد  
ضمیفی شد بر قفا تو به علم  
تفت از چاکلی پیشم رسیده  
کنون جزای قاتل نفس ای جان

लृषा भुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं  
स्वादु सुरभिस्तु धार्तः सन् शालीन्  
कवलयति शाकादि वलितान् ॥

प्रदीप्ते कामानौ सुहृत्तरसा श्लिष्य  
ति वधु प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति  
विपर्यस्यति जनः ॥६२॥

بے گزشتہ خوشنغذا سرچ دراز  
ملائکہ کہ نیک است با عسکرین  
وزیرین جسم فانی تجسس کسی است

بے تشنگی میخورد آب سرد  
بے شہوت و ہر رو پئے وصل زن  
نہ فہم کہ زین یک دوائے کیکی است

स्नात्वा गाङ्गेः पयोभिः भुवि कुसुम  
फलै रचयित्वा विभो त्वां ध्येयं ध्या  
नं नियोज्य क्षिति धर कुहर श्राव  
पर्यंक मूले ॥ आत्मा रामः फलाशी  
गुरु च चन तत्स्वत्प्रा सादात्मरा  
रे दुः स्वान्मोक्ष्य कदाहं तव चरण  
स्तो ध्यानमौगैक प्रश्नः ६३

پرستش شیو کنم دل را ز دل دریا کشید دارم  
خورم بر پرستم از دنیا پایت دل چپان دارم

ز آب گنگہ دہ غسل مند دل پرست آرم  
نشدیم اندر دل ماز می زمر شد قول یاد آرم

शय्या शैल शिला गृहं गिरि गुहा  
वस्त्रं तरुणां च चः सारंगाः सुहृ  
दो ननु क्षिति रुहां क्षितिः फलैः  
कौमलैः ॥ येषां निर्भर मन्वया

ज्ञानं सतां मानमहादि नाशनं केषां  
चिदेन न्मद मान कारणम् ॥ स्थानं  
विवेकं यमिनां विसुक्तये कामातु  
राणामति काम कारणम् ॥ ६० ॥

همینیک در نظر لیان ز پے تلخی توابع شد  
همینیک شهوتی را از پے شهوت توابع شد

لیاقت و شیرینان از پے خاطر توابع شد  
بیتنهائی شستن بهر عطر اسحق دیدن

जीर्णा एव मनोरथाः स्वहृदये यातं  
जरां यौवनं हन्तां गेषु गुणाश्च बंध्य  
फलता याता गुणज्ञै विना ॥ किं यु  
क्तं सहसा भुपति बलवान् कालः  
कृतांतोऽक्षमा ह्याज्ञातं स्मरशासनं  
द्वियुगलं सुवत्सालि नान्यागतिः ६१

جانی رفت چون پیری اثر کرد  
ندیدم کس قدر روانای مسلم  
شنا نیده نه من چیزه شنیده  
نمی بینم رهایی خویش اسی جان

ضعیفی در خیال ما اثر کرد  
ضعیفی شد بر تقاضای مسلم  
تفت از جاسکی پیشم رسیده  
کنون خبر پای قاتل نفس امارتی

तृषा भुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं  
त्वाद सुरभिस्तु धातः मन् शालीन  
कवलपति शाकादि वलितान् ॥

यावत्त्वस्यमिदं कलेवर गृहे यावच्च  
दूरे जरा यावच्चैन्द्रियशक्तिरप्राप्ति  
हता यावत्क्षयो नायुषः ॥ आत्मश्रे  
यसि नावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो  
महा न्यो ह्यसि भवनेच कूपखननं  
प्रस्यधमः कीदृशः ॥ ८८ ॥

تا تو در لعلی زبیری تا توئی در نفس دان  
عاقل آنست که فخر حق را زنجیر  
نیست ممکن عاقل کند بدن پیر آتش گرفت

نوداری تند رستی تا توئی ای نوجوان  
ترا عمرت نه کم گشته نه تو گشتی شریف  
ان شدی مجبور بر و صبق نفس را گرفت

नाभ्यस्ता भुवि यदि घृन्द दमनी वि  
द्या विनीतो चित्ता खड्गाग्रैः करिषु  
म्भ पीठ दलने न कं न नीतं यशः ॥  
काला कोमल पल्लवा धर रसः  
पीतो न चन्द्रो दये तारुण्यं गत  
मेव निष्फल महो भूत्यालये दी  
पयत ॥ ८९ ॥

نخوازم علم کز دمی نام باشد و هم بولا  
که باشد بول از تیغ بر آسمان برتر  
گذشته عمر او در خانه عالی چون شمع افور

پیر دلاری علما خودی کردن ز دل جلا  
پیران تیغ سر فیلان پریم نه دشمن سر  
بوشیدم لب زیبا ز حرر نافعین گل بر

پراپت کونیا ساری نیماںیو نیرہے  
تی: شام سوراہا کبھی کبھی ॥۷۶

کہ ابی سہر خورماندن بالسان محض بے الفت  
نماون بے گرفتن بودن و درخود بلا سلفست  
بہ میدان اے زوینا دل برب وادون دھڑکرون  
بارہ لہ چندن سہر پشش شبہ اشک دن  
نمائند نفس روشن دل شود از نور حق انور  
ہی باشد ویے بس کم کہ بنید نور حق انور

ما تہی دینا تا ت ماروت سارے تہج: س  
کونو جال آت بھاس نیوڈھ اے م  
بتا مہی پنا ماسلی: ॥ یوہ سنا  
بسیو جات سکو تو دیک سکو نیما  
لہ جانا پاس سمس مہ مہ مہ  
لیوے پورہ سنا ॥۷۷

از ہمسایہ آب ہم فلک را خوانم برادر و پور	ایسی باد پریم بہ پنج عنقریب زمین دست نور
بروم نور ز روح خود برتر با دیگر نہ سازم بہ نور	رہنک بہت سلام آخر ز ما کہ شد نیک نور

سے وا دے دھر بپنج ان سار دہر می دو سونور اجڑھ سنا یہ  
آوہ س فک کار وا دے ویرا دے وپور ॥ دینک ہست سنا م آری  
رہ سنا کج ما کی شاد نہ ک نور و دے نور جی سنا و دے و  
دیہر نی سنا سنا ۵ ॥



जगदपि ॥ इदानीमस्माकं पदुतर वि  
वेकाजनचुषां समीभूता हृष्टिस्त्रिभु  
वनमपि व्रह्मतनुते ॥८४॥

جهان در شکل زن بیدر نفس  
نانه نفس زن نه ظلمت نفس

قیام ما حو بدور ظلمت نفس  
ز نور حق حو در دل ما اثر کرد

रम्याश्चन्द्रमरीचयस्तृणवतीरम्याव  
नान्तस्थली ॥ रम्यः साधुसमागमः श  
मसुरवंकाव्येषुरम्याः कथाः ॥ कोपो  
पाहितवाष्पविन्दुतरलं रम्यं प्रियाया  
सुरवं सर्वरम्यमनित्यतामुपगते चित्ते  
न किंचित्पुनः ॥८५॥

زمر و فرش در محراب خوشا بود  
حکایت عشق با از بس شرم  
بباغوش بود دامن از رویا  
غدار از خودی خور داو نظر

بباد لیس مارا فقیر بود  
بسا و لیس رفقا نمودم  
به تلخی که ادا نمی روزه زیبا  
چون ثابت شد جهان فانی به نظر

भिक्षाशी जनमध्य संग रहितः स्वा  
यत्तचेषुः सदा दाना दान विरक्त मा  
गं निरतः काश्चिन्नपस्वी स्थितः ॥ र  
थ्याक्षीण विसीर्ण जीर्ण वसनेः सं

<p>چه حاصل کردن زمین کار با بیان همینک کار با بی نور مولا</p>	<p>نسا ز می نور حق را اگر تمام بیان چو بقا آمنتد ویرین اندر دلا</p>
---	---

आयु कल्लोल लोलं कति पय दिवस  
 स्थायिनी यौवन श्री रथाः संकल्प  
 कल्पा घन समय तडि द्विभमा भोग  
 पूराः ॥ कराठा श्लेषो प गूढं तदपि  
 चन चिरं यत्प्रियाभिः प्रणीतं ब्रह्म  
 एषा सक्त चिन्ता भवत भव भया स्मो  
 धि पारं तरीतुम् ॥ २२ ॥

<p>چو میوح بحرین عمرم روان ست چو میوشم بر شگال این وصل دولت باید بس که دل در رب بداری</p>	<p>جوانی برق سان در تن نهان ست وصال نازنین را نیست مهربان که به باشد برادرین داری</p>
---	---

बह्मराड मण्डली मात्रे किं लोभा  
 यमन स्थिनः ॥ शफरी स्फरिते नाथः  
 स्फुट्यता जातु जायते ॥ २३ ॥

<p>به بنید نور حق کانرا چه ممکن در غلا نیدن</p>	<p>که میوح بحر اماسی تو اندر نه طپانیدن</p>
---	---

यदा सीद ज्ञानं स्मरति मिर संस्कार  
 जनितं तदा दृष्टं नारी मय मिद मशेषं



<p>پیدا کرد بزم بزمین بستر بستر به غیوض یا کشتن این باره شمشیر میش نیست این رام شاه دهر را اینجا</p>	<p>لے شکر شد این آسمان دلکش خوشکام برجائے ملک اعلیٰ یادرب بهر ضا و طور که دارد یار و نیازا بهر چون بهر اینجا</p>
--	--

त्रैलोक्याधिपतित्वमेवाविरसंयस्मि  
न्महाशासने तत्त्वव्यासनवत्प्रज्ञान  
घटिने भोगे रतिं साक्ष्याः॥ भोगः को  
पि स एक एव परमो नित्यो दितो ज्ञ  
म्भते यत्त्वादा हिरसा भवन्ति विषया  
त्रैलोक्यराज्यादयः॥८०॥

<p>چو بینی نور حق باطل شود همه سلطنت دنیا همین را راستی است آن تو وصل الفت بچند راه</p>	<p>بنیان و جان خود بینی مبر تو ذلت دنیا حشی کر چاشنی را تو دانی ذلت دنیا</p>
---	--

किं वेदैः स्मृतिभिः पुराण पठनैः शा  
स्त्रैर्महाविस्तरेः स्वर्ग ग्राम कुटी नि  
वास फलदैः कर्म क्रिया विभ्रमैः  
सुत्कैर्क भव बन्ध दुःख रचना विध्वं  
स कालानल स्वात्मा नन्द पद प्रवेश  
कलनं शेषा वधिा गहनयः॥८१॥

<p>چه از بند و چه از مسلم ریاضی قصص مشرب و یا علم مجلیس</p>	<p>چو از منطلق چه شد از علم قاضی نیچه حاصل چیست از این و بس</p>
---	---

कथमात्मनीतं तद्वत् न स्मरति नि  
र्वाते मापि येन ॥७७॥

نہم ایدل حیات ویر کر و تیزیت کم نیست لیل  
کہ قدسی با شتی یالی تو اور نور حق اب دل

رؤیو ز زمین با بر فلک ہستم  
نہی بروی تہکان کیدم تو دل حق بنداری

रात्रिः सैव पुनः स एव दिवसो मत्वा  
बुधा जन्तवो धावन्त्युद्यमिनस्तथे  
वनिभूतप्रारब्धतत्त्विक्याः ॥ व्या  
पारैः पुनरुक्तमुक्तविषये रेवं विधे  
ना मुना संसारेण कदार्थिताः कथ  
महो मोहान्न लज्जा महे ॥७८॥

ہمان خورشید ہمان نور و شمع یکساں نیکند  
ہمین نامہم انسان اگر اشعرش نیکند و

ہمین لیل و ہزار صاحب عقلا نیکند و  
ہمان کار و ہمان گفتنی ز نہا چہ شان نیکند

मही रम्या शय्या विपुल सुपधानं  
भुजलता ॥ वितान चाकाश व्यजन  
मनु कूलोऽयमनिल ॥ स्फुरद्दीपश्च  
द्भो विरतिवनितासङ्गमुदितः सुखं  
शान्तः शोते मुनिरतनु भूतिर्नृप इव  
॥७९॥

زینت باخوری کر تو دیا از جو لوت شام | زینتی نور حق در دل چیر از شاه و پایا ده

भक्ति भवे मरण जन्म भयं हृदि स्थं  
लेहो न वन्धुषु न मन्मथ जा विकारा  
सं सर्ग दोष रहिता विजना वनान्ता-  
वैराग्य मास्ति किमनः परमार्थ नीयम् ॥५५॥

وہم دل گر یہ شیوہ باشد مہدیہ | نہ دہشت مرگ نے فحش زہدیہ  
محبت از محبت نے نفس در دل | رہا بی از ہمہ داری تو در دل  
نشستن در بیابان زان بسا بہ | فقیری را ہمین پاشند بسا بہ  
دعا کردن ازین زایر پے چیت | کہ بہتر لطف بہت این از پے زیت

तस्मा दनन्त मजरं परमं विकासि  
तद्दृष्ट चिन्तय किमे भिर साद्वि क  
ल्पे ॥ यस्यानुषंगिण इमे भुवना-  
धि पत्य भोगा दयः कृपण लोक म  
ता भवन्ति ॥५६॥

شال نور ز نور حق بیاید در دولت بجان | بدانی مثل خرمہرہ تمامی سلطنت بجان  
چہ حاصل دادن دل در خرقا صاحبان فانی | ریاضت کن کہ یابی نور حق را در دولت بجان

पाताल मा विशसि यासि नभो वि  
लंघ्य दिङ्माण्डलं भ्रमासि मानस  
न्वापलेन ॥ भ्रान्त्यापि जातु विमलं

एका की निःस्पृहः शान्तः पाणि पा  
त्रो दिगम्बरः ॥ कदा शम्भो भविष्या  
मि कर्म निर्मूलनक्षमः ॥ १२ ॥

طروف از دست سهر روشن سوار  
که کت من یخ کار ویر میسر

به تنهایی بلا خواہش و آزاد  
چہ سان اے شہو مرا اید میسر

प्राप्ताः श्रियः सकल काम दुधास्ततः  
किं दत्तं पदं शिरसि विद्विषतां ततः  
किम् ॥ सस्मानिनाः प्रणयिनो विभ  
वेस्ततः किं कल्पं स्थितं तनुभृतां त  
नुभिस्ततः किम् ॥ १३ ॥

مینی گریا تو بر دشمن چه حاصل میشود از او  
بایں زنده نامچر چه میشود از وی

چو رویایی مراد آور چه حاصل میشود از او  
کینی گریا تو بر دشمن رفقا از زرتا هم چه می بیند

जीर्णा कंथा ततः किं सितममलप  
टं पदं सूत्रं ततः किं एका भार्या ततः  
किं हय करि सुगणै राहतो वा ततः किं  
भक्तं भुक्तं ततः किं कद्र शनमथवावा  
सरांते ततः किं व्यक्तभ्योतिर्नवां त  
मथितभवभयं वै भवं वा ततः किम् ॥ १४ ॥

تو پویشی جثہ با عطا و یا از پیشہ سادہ ॥ ابداری زن و یا زنها از پیشہ نبل و سادہ ۱۰

که سدری برین پیش نذر بے تمیز  
روان ابرو اشش مثل خنجر بود  
فقر می به عمو از مبد و سکون

چه از پوست اسب شمر غانده عطر  
کنسے کوز مغلس گو نگمر بود  
آزان به سین روسه دنیا و دن

गङ्गातरङ्गकणशीकरशीतलानि  
विद्या धरा ध्रुवित चारु शिलानि  
लानि ॥ स्थानानि किं हिमवतः प्र  
लयं गतानि यस्माच्च मान परपिराड  
रता मनुष्याः ७०॥

چرخ باشد غانده تیز تابش  
بیاد رب علیحدہ از قبوے  
سجوار می میخوری یک لقمه در راه

ز موج گنگ در افشار آبش  
نشسته جابجا رضوان سبوحی  
قیامت چو مہر با چنین مہاہ

यदा मेरुः श्रीमानिप ततियुगान्तानि  
निहतः समुद्राः भुष्यन्ति प्रचुरनिक  
रग्राह निलयाः ॥ धरागच्छत्यन्त-  
धराणि धरपादैरपि धृता शरीरका  
वार्ता करि कलभकर्णाग्रचपलं ॥ ७१

بہ سوزانند شنگان راو آبی سحرار ہولہ  
چہ ذکر از جسم کو چون گوشن چہ فیل میہا کنند

فتد روز قیامت کوہ نزار آتش شعلہ  
مہا باشد زمین و کوہ بیجا ش فنا باشند



کھا اندر گل تر آتش شعله نهان او	سند چون سرو بسجاست کت این زن
---------------------------------	------------------------------

रम्यं हर्म्यं तलं न किं वसतये श्राव्यं  
न गेयादिकं किंवा प्राण समा समा  
गम सुखं नेवाधिकं प्रीतये ॥ किं नू  
हान्त पतत्पतङ्ग पवनव्यालीलदीपा  
कुरञ्छाया चंचलमाकलय्य सकलं  
संतो घनांतगता ॥ ६६ ॥

خدا دوستان را چه قصر نبود ولا رام جان زن و یا وصل او بر انست این دیر را نفس آب چه آنسان که غارت کند جسم را	ز خنیاں و قوال حسن نبود همه بود لیکن نه تبرا اصل او که رفته به صحرای عبادت تاب چو گریه به شمع کوه در جسم را
---	--

किं कन्दाः कन्दरेभ्यः प्रलयमुपगता  
निर्भरावागिरिभ्यः प्रध्वस्तावान  
रुभ्यः सरसफलभृतो वल्कलेभ्य  
श्च शाखाः ॥ दीक्ष्यन्ते यत्सुखानि प्र  
सभमुपगतप्रश्रयाणां खलानां दुः  
खोपातात्प्रवित्तस्मयवशपवना  
नर्तितभूलतानि ॥ ६७ ॥

چه کند از زمین و روان آب کوه	خانه چه پر مینوه شاخ ستهوه
------------------------------	----------------------------

شہی تو در خودی صاحب تیرم

چہ فرق افتاد اکنون ایسے عزیزم

वाले लीला मुकुलित ममी मन्थरा-  
हृषि पाताः किं क्षिप्यन्ते विरम वि  
रम व्यर्थ राष भ्रमस्ते ॥ संप्रत्यन्येव  
यु मुप रतं वाल्यमास्या वनान्ते क्षीणो  
मोहस्त्रणामिव जगज्जालमालोकया  
मः ॥ ६६ ॥

کہ من پوشیدہ ام چلتہ فقیری خود حق ترن  
ہمیں ہم چرخسل میں دیر راہم حرکت اکنون

چرا سیرید ہی میر و کمان تیر نظر بر من  
کمانہ وقت بازی شد مرا فرت ز دنیا و دن

کہ ناز و بازی و در دل چایا چرخواری  
قطع کردم محبت ہم خوشن نیا و دل داری

چرا از بند و اگر دن ز چشمات سنان باری  
برفتم وقت طفلی امی کنون خواہن بجزا

इयं वाला मां प्रत्यनवरतमिन्दी चर  
दल प्रभाचोरे चक्षुःक्षिपाति किम्  
मि प्रेत मनया ॥ गतोमोहोऽस्माकं  
स्मर कुसुमवाणव्यातिकरज्वलज्या  
लाशान्ता तदपि नवराकी विरमति ॥  
॥ ६७ ॥

نہی فہمی کہ کردم ترک اکنون من نیم ناریہ

بہ بین چشم نیلوفر چرا با باشد با سہ

<p>تظلم ہے زرنہ صاحب تمیز و خیرات تا حد ہم نیک دان به بند می لب و گوش آفتاب نویسان بدان قول پیشین روا که را به زرقا صان حق خوانده ام</p>	<p>بکن ترک ز جان کشتی ای عزیز نه گفتن به راسخی نیک دان شمیدن قصص از زمان نیست به هم بر همه ترک و سر عمل هوا جو ای به همین بهر ت داده ام</p>
--	---

मातर्लक्ष्मि भजत्स्व कंचिदपरं मत्कां  
क्षिणीमास्मभूभोगेभ्यः स्पृहाल  
चो नहिं वयंकानिः स्पृहाणामसि ॥  
सद्यः पूतपलाशपत्रपुटि का पात्रेप  
विचीकते भिक्षासक्तुभिरेव सं प्रति  
वयं वृत्तीं समीहा महे ॥६४॥

<p>که قابل نه ام پوریت را کنون محبت ز خواہان عقبی بکن خدا دوستی کو که باشد فقیر سویق که آرم که ای سریه</p>	<p>تو ای ماورم لکشمین رو کنون کسی دیگر را بتلاشی بکن که بند ترا آنگاه حقیر نصیب بر م بر لاسه بریه</p>
--	---

यूयं वयं वयं यूय मित्यासीं न्मतिरा  
वयोः ॥ किं जातमधुना मित्र येन  
यूयं वयं वयम् ॥६५॥

<p>میان من و تو فرق نمی بود</p>	<p>بزا بر بود بس فرق نمی بود</p>
---------------------------------	----------------------------------



سینان زبان در پس مغز سلمه سیاره  
 سگمار و چور دست نازکش زن زن کند باریا  
 بکن غارت تو خود را گر بیا بیی انقدر حشمت  
 وگر نه دل برب درده که به باشد بے بصیرت

विरमत बुधा योषित्संगासुखात् क्ष  
 णभंगुरात्कुरुत करुणामैत्रीप्रज्ञा व  
 धूजन संगमम् ॥ नावलुनरकेहारा क्रांत  
 घन स्तन मण्डलं शरण मथवा श्रा  
 णी विस्व रणान्मणि मेखलम् ॥ ६२ ॥

رمد عاقل ز صحبت زن که یک لحظه خوش باشد  
 بیا بد صحبت خاصان که در حشمت به خوش باشد  
 کشی چون ریخ در دوزخ نباشد مهرمانت زن  
 نه روی زن نه پستان زن نه زیور زن نه جسم زن

प्राणा घाता निवृत्तिः पर धन हरणे  
 संयमेः सत्य वाक्यं काले शक्त्या प्र  
 दानं युवति जन कथा मूक भाव परे  
 षाम् ॥ लक्ष्मा स्तोतो विमङ्गो गुरुषु  
 च विनयः सर्वभूतासु कम्पा सामा  
 न्यः सर्वशास्त्रेष्वनुप हत विधिश्चे  
 यसा मेष पन्थाः ॥ ६३ ॥

मोहं मारजयता मुपार्जय रतिं चंद्रार्ध  
चूडा मणो चेतःस्वर्ग तरणिणी तटभु  
वा मा सङ्ग मङ्गी कुरु ॥ कोवा वीचिषु  
बुद्बुदेषु च तडिल्लेखा सुच स्त्रीषु च  
ज्वालायेषु च पल्लवेषु च सरिदेगेषु  
च प्रत्ययः ॥ ६० ॥

مکن الفت یہ ترک ایدل بیائے شیو بیارایے جان  
کہ وارد دوسر خود ماہ اول رانسان اسے جان  
کنار گنگ زیر اشجار پاک آرام کن کا سجا  
نباشد زن کہ از زن مغفرت شکل شود آسجا  
کہ زن چون آتش شعله ویا چون جوش بھرست این  
و دل چون برق یا سیلاب بہرہ و رواست این

अग्ने गीते सरस कवयः पार्श्वतोदा  
क्षिणात्याः पृष्ठलीला वश परिण  
ति श्रामर ग्राणी नाम ॥ यद्यस्ये  
वं कुरु भवरसा स्वादने लंपटत्वं ।  
नोचै चेतः प्रविश सहस्रानिर्विक  
ल्प समाधौ ॥ ६१ ॥

چو کم عقلان شہان یابی تو عیش عشرت آرام  
کہ تو الان پیشیت راست و چپ ہر جنوب آسا

برادر از دل خود همیت و شهوت و خیا را

زین و آسمان شفاف بر دقید دنیا را

एतस्मा हिरमौद्रियार्थं गहना दाया  
सकादा श्रया च्छेयो मार्गं मशेष  
दुःख शमन व्यापार दक्षं क्षणात् ॥  
शान्तं भाव मुपैहि सं त्यज निजं क  
ह्योल लोलो गतिं मा भूयो भज भणु  
रां भवरतिं चेतः प्रसीदा धुना ॥५८॥

از شهوت نفس بر دم عمر آخر نیست تا با کنون  
جهان چون برق لالگو بیار آمد بخود و کنون

بهار بنجیده ام ایدل تو ترک این نفس لا کنون  
کنون کن گوشت بیخ این و آرامی بر راه راست

पुराये मूल फलैः प्रिये प्रणयिनी प्री  
तिं कुरुष्व धुना भू शय्या नव वल्क  
लैर करणैरुलिष्ठ यामो वनम् ॥क्ष  
द्राणाम विवेक मूढ मनसा यत्रैश्व  
राणां सदा चित्त व्याध्य विवेक वि  
ह्वल गिरां नामापि न श्रूयते ॥५९॥

همینک است بستره عرض ما از عقل ما دل ما  
زمین بستر خوش ما در بهر پوشش پوست تازه  
همین باشد ریاضت کس دنیا کس نمیشد

تو هم بنخیز زینک میروم صرا تو ای دل ما  
کین صخر نشینی اکل از میوه تروتا ز  
که آنجا زانی و بیکار و سنگ دنیا نمیشد

۲۵  
 بد را نیک استخوان که آتش هم بر کرده  
 رو و پر روز تا هم نیست کلفت در دل ایشان  
 نه آن بهتر که پر کردن شکم از دود و دمان پرده

चाण्डालः किमयं द्विजाति रथवाभू  
 द्रोऽथ किं तापसः किं चातत्व निवे  
 शापे शल मति योगी श्वरः कोऽपि  
 किम् ॥ इत्युत्पन्न विकल्प जल्पमु  
 खरैः सम्भाष्य माणा जनैर्नृकु  
 द्वाः पथि नैव तुष्टमनसो यान्ति स्व  
 यं योगिनः ॥ ५६ ॥

بر همین پایه ای فحشی عالم و در این فقر نیست  
 نمیرنجد نه آزار اندر و دیکسان فقیر نیست

که گویند بهتر که سبک بود فقیر این است  
 شسته در راه دل در رب به گفتن شایسته دارد

सखे धन्याः कोचित् च्रुति भव  
 चन्ध व्यति करा वनान्ते चित्तान्तर्वि  
 षम विषयाप्री विषगताः ॥ शर  
 चन्द्रज्योत्स्ना धवल गगना भोग सु  
 भागा नयन्ते ये रात्रि सुकृत चय चि  
 त्तैक शरणाः ॥ ५७ ॥

زیادت کش کند خورشید پاک که آزار اندر

بر آن صبا بقیان را که در شب گذرانند

ازین ایریست بهتر نیکی این را بحقدار  
که علما زام و فاضل بحقداری بحقداری

भोगा मेघ वितानमध्य विलसत्सौदा  
मिनी चञ्चला आयु वायु विघटिता  
भ पटली लीनाम्बु वद्गुरम् ॥ ली  
लायोवन लालना तनुभूता मित्या  
कलय्यदुत योगे धैर्य समाधि सि  
द्धि सुलभे बुद्धि विधुं बुधाः ॥ ५४ ॥

درا بر برق سان انسان را این وصل دولت هست  
چو مصر می برد او را چنان دم زندگی این هست  
نمی ماند جوانی نیل ز حسن و نیل متور زور  
باید کرد خدمت رب که انیک راست دولت هست

पुण्ये ग्रामे वने वा महति सित पट  
च्छन्न पाली कपाली मादाय न्या  
य गर्भ द्विज मुख इत भुग्भूम धूम्रो  
प कण्ठम् ॥ द्वार द्वार प्रवृत्तौ वर सु  
दरदरी पूरणाय क्षधार्त्त मानी प्रा  
णी सधन्या न पुनरनुदिनं तुल्य कु  
ल्येषु दीनः ॥ ५५ ॥

پشهر و جنگی و کاسب گدائی را یکف برده

که بگذارد چنان در نیک کردار

که دای نیک شد از وی پدیدار

पाणिपात्रं पवित्रं भ्रमणं परिगतं  
भैक्षमक्षप्यमने विस्तीर्णं वरुण  
माशा मुदशकममलं तल्पमस्वल्प  
मुर्वी ॥ येषां निःसंगताङ्गीकरणप  
रिणतिः स्वात्मसंनोषिणस्ते धन्याः  
संन्यस्तदेन्यव्यति करिणः कर्म  
निर्मूलयन्ति ॥ ५२ ॥

که دای جز ندارد و دیگر می حرف  
کند گوشه نشینی با خدا کام  
همه در در زکار کار دنیا

که کند کو پاک دست خویش را ظرف  
جیات از سه پوشش بر زمین رام  
نه خواش ماند باقی نی ز دنیا

दुराध्यः स्वामी तुरगचलचित्ताः  
क्षितिभुजो वयं तु स्थूलेच्छा मह  
तिचूपदे वद्धमनसः ॥ जरा देहं मृ  
त्युहरति सकलं जीवितमिदं सखे  
नान्यच्छ्रेयो जगति विदुषोऽन्यत्र त  
पसः ॥ ५३ ॥

دلشان مثل سیامت بس شکل سیرین  
که خوف مرگ پیش آید چو لاغر جسم می باشد

بسیامشکن بود خدمت شما گذر کردن  
ز مایان عقل بر لبه دل و حق کجا باشد



<p>شود ترک همه مخطوطات دل در حق تصور ما نصویر بر او را که شن در جنگل چون در این</p>	<p>که بگذارد شب با ما به تنهایی کنار ما نزیاد آید از دنیا دل نشینم از پریم آسن</p>
---	--

ययमिव परितुष्टा यत्कलैस्त्वं च  
लक्ष्म्या सम इह परि नो यो निविशे  
षा व शेषः ॥ स तु भवति दरिद्रो य  
स्य तृष्णा विशाला मन सिच परि  
तुष्टे को र्थवान् को दरिद्रः ॥ ५० ॥

<p>ترا از زمره از پوست اشجار بیاورد صبر رفته حرص بیرون به صابر نیک و زردیور بر ابر</p>	<p>چو شد همه نمانده بارش چار خرمید آست گودار دلدون چهار از پنبه چه از ریشم بر ابر</p>
--	---

यदेतत्त्वाच्छन्दो विहरणमकार्षण  
मशनं सहायैः सवासः श्रतमुपग्रा  
मैक व्रत फलम् ॥ मनो मन्द स्पन्द  
वहिरपि चिरस्यापि विमृश न्न जा  
ने कस्यैषा पारेणाति रुदारस्य त  
पसः ॥ ५१ ॥

<p>رویش آزاد اکل آری سوا لی چنان گفتن شنودن مثل ساکت اگر باشد مهو او حرص پیدا</p>	<p>به سایه عاطفت بودن حوای که باشد از جوهر مهو بالک خوامد دل کند در حق شهید</p>
---	---

بلندی یابد آن روزی گزوا سید و اردو کس  
 شود دست نگر از صاحب زربا زاندر پس  
 نماید روز کم کانرا که شهبوت گم شد از حبش  
 همی ترسد که شب آمد چنان سازم من از حبش  
 به بینم از تبسم هر دو را به سنگ بنشینم  
 بجای باشد فقیری در نصیبش و بنشینم

विद्या नाधिगता कलंक रहिता वित्तं च  
 नो पजितं शुश्रूषापि समाहितेन म  
 नसा पित्रोर्न सम्पादिता आलोलाय  
 नलोचना युवतयः स्वप्नेपि नालिङ्गि  
 ताः कालोयं पर पिण्डलोलुपतया  
 काकेरिव प्रेरितः ॥ ४८ ॥

نه کردم خدمت ابوبکر و لشاوی کینه  
 به لقمه غیر مثل زان بر دم عمر بیه وینا

نه گشتم عالم و فاضل نه صبار نه کنجینه  
 نه بر دم خواب هم از وصل محبوبان چشم

वितीर्णे सर्वस्य तरुणा करुणा पूर्ण  
 हृदयाः स्मरन्तः संसारे विगुण परि  
 णामा बाधि गतीः ॥ वयं पुण्या राये  
 परिणत शरच्चन्द्र किरणौ स्त्रिया  
 मां नेष्यामी हर चरण चितैक श  
 रणाः ॥ ४९ ॥



रुदकोपाक अर्द्धे जेखदादस्त	फ़ीरै राके बाशदुश्मन دوست
----------------------------	---------------------------

आसं सारं त्रिभुवन मिदं चिन्वतां ता  
त तादृङ्गै वास्माकं नयन् पदवीं श्रौ  
त्र वत्सां गता वा ॥ योऽयं धत्ते विष  
य करिणी गाढगूढा भिमानः क्षीव  
स्यान्तःकरणकरिणः संयमात्मान-  
लीला ॥४६॥

نمی بینیم نمی شنوم زدیگان  
بیارد خویش را بر نیک انجام  
کراتاب بر رهایی گردانے شد

ز آغاز جهان تا حال ایجان  
که شد پید از آن چون مخفی کام  
اسیریه کو زلف عنبرین شد

सांप्रतं निर्वदतायाः स्वरूपमाह  
ये वर्द्धन्ते धनपतिपुरः प्रार्थनादुः  
खभाजो ये चात्मत्वं दधति विषया  
क्षेपपर्यस्त बुद्धेः ॥ तेषां मन्तः स्फु  
रितहसितं वासराणां स्मरेयं ध्या  
नच्छेदे शिखरि कुहरग्रावशय्या-  
निषण्णः ॥४७॥

शिवः शार्व स्वर्गात् पशुपति शिरस्तः  
क्षिति धरं महीधातुं तुंगा दधनि मव  
ने श्यापि जलधिम् ॥ अधो गंगा सेयं  
पदमुप गता स्नोक् मथवा विवेक  
भ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमु  
स्वः ॥४४॥

زکوستان فستة زدل دریا شد در زمین  
بره گشتا نهها شود نزل ایشان به زمین

زجبت سرشاریم فتد از سر شیبو بر زمین  
به زمین این گنگا را که بر ضوای پس تبا

जिजन्मत्सि शार्वे फितद अजसि शिव्वरजमी ॥ जि को हि स्तार से जिदिल  
दरया श्वदरजमी विवी नी गंगा राकि बुदीरजवानी पस कुजावर हंगुग शता  
हा शवद बुजलेशाव सह मो ॥ ३ ॥

आशा नाम नदी मनो रथ जला तृष्णा  
तरंगा कुला राग ग्राह वती वितर्क  
विहगा धैर्य दुम ध्वंसिनी ॥ मोहा  
वर्त सुदुस्तराऽति गहना प्रोतुङ्ग चि  
न्ता तदी तस्या पारगता विशुद्ध म  
नसो नन्दति योगी श्वराः ॥४॥

چیه خوش گرد آب پر شد اندر انجا  
په کندن ز شجره استقامت  
لبش از فکیر بیرون فکر دشوار

ز خواش سیل اخیال اندر واد  
نهنسگان زمان از جهالت  
محبت بحر رفتن بر دے دشوار

سر آنگه من لب گنگا بنگ کوه هم نه ششم خمار آید حقیقی ان کجا باشد نصیب ما	نشین نیلوفری ندیم تصور لاشرک کنیم بجز پنهان که سودیر شاخ آید شوقی از جستم من به ششم
--	--

स्फुरत्स्फास्योत्साधवलितलेष्वा  
पिपुलिने सुखासीनाः शान्तिध्वनि  
षु रजनीषु ह सरितः ॥ भवाभोगोहि  
माः शिव शिव शिवेत्यर्तवचसा क  
दास्यामानन्दोद्गतयहलवाष्पस्रुत  
दृशा ॥ ४२ ॥

خوشا قیوم خوشا ماه و خوشا جا نه آوازے کسی و شب بدل سوز	لب گنگا تفکر ترک تنب به بشیو بشیو بشیو کم چشمان دل دوز
---	---

تصور سر پشته ایست از خوف از کار دنیا  
روان آب از مره کس نشینم مخور نیل

महादेवो देवः सरिदपिच सैषा सुर  
सारि जुहा एवा गारं वसन मपि ता ए  
व हरितः ॥ सुहृद्वा कालोऽयं व्रत मि  
दमदै न्यव्रत मिदं कियद्वा वक्ष्या  
मो चट विटप एवास्तु दयिता ॥ ४३ ॥

خدا یک شیو ز گنگا سیل غار نیست خان ما بگویم تا کجا این بر شجر باشد دلا را محرم	پے پوشش جہات از دوست یک ترکہ وال ما کہ حق باشد ز ما خدمت ز ما بہر خدا یہ ما
---	--

<p>نہایت خانہ کہ یک کس بود آبار ز دل شادان نمی بینم سیکے را قضا را آن همه لقمہ اجل شد اجل را بازے ایشان خوش آمد</p>	<p>نہایت خانہ لب بود دل شاد ز یک آبادی شاد خانہ ہارا چو چوسہ بازور آخر خجل شد تعب گونہ ہمد زین خوش آمد</p>
---	--

तपस्यन्तः सन्तः किमधिनिवसामः  
सुरनदी गुणोदकानि दारानुतपारि  
चरामः स विनयम् ॥ पिबामः शास्त्रो  
घान् दुता विविधकाव्यामृतसाम्  
विमः किंकुर्मः कतिपयनिमेषाद्युपि  
जने ॥४०॥

<p>کسم آتش پرستی برب گنگ یہ نو ششم علم از صحبت ہندوان ہمین عمرم کہ روز پنج باقی ست</p>	<p>و یا وصل حسینان دلاں سنگ و یا از شاعران بے نقط خوان چرا ہم کہ مارا کردیے چیت</p>
--	---

गंगातीरे हिमगिरिशिलावद्दृष्ट्वा  
सनस्य ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना  
योगिनिद्रागतस्य किंतेभाव्यमम  
सुदिवसैर्यत्र ते निर्विशंकाः संया  
प्रयन्ते जरठहरिणाः भृंगकंद्विना  
दं ॥४१॥

گر و ہی عالمان بردا دن پند  
چنان زمینده بد چون شاه رضوان  
سکن تسلیم بهر سرانکه را ندره

سبا فرزند نیک اختر هنرمند  
رقوالان رقا صکان هنر خوان  
به بین اکنون نشان شان مانده

पुनः काममुद्दिशपाह॥

वयं येभ्यो जाता श्रिर परिगता राव  
स्थलुते समं येः संहृद्वाः स्मृति वि  
षयायिता तेषां गमिताः ॥ इदानीमे  
तेस्मः प्रतिदिवसमासन्नपतना ह  
तास्तुल्या वस्थां सिकतिलनदीतीर  
तरुभिः ॥ ३८ ॥

صغیر مرگ اور ازود بر بود  
تضا با او به کرده ترکے تازی  
چو دریا اشجری را بهر باشد

کسی کو بهر بهم پیدا شده بود  
ببازی لفظها با ما بازی  
کنون سرماز پیری رخ نما شد

यान्नानेकः क्वचिदपि एहेतत्र तिष्ठ  
त्यथैकौ यन्नाय्येकस्तदनुवहव  
स्तत्र चान्तेन चेकः इत्थं चैमौ रजनि  
दिवसो दीलयन् ह्यपि वासौ का  
लः काल्या सह बहुकलः कीदृति प्रा  
णसारिः ॥ ३९ ॥

زمرگ این جسم فانی شد ترسنا  
و بی بے خوف و در دنیا فقیر هست

به علم از بحث نکته چین هنر را  
چو دیدم خوف یک را از یکی هست

अमीषां प्राणानां तुलित विसिनी प  
त्र पयसां कृतं किन्नास्माभिर्विगलि  
त विवेकैर्व्यवसितम् ॥ यदात्पाना  
मग्रे द्रविणमदनिः शंकमनसां क  
तं वीतव्राडैर्निजिगुणकथापातक  
मपि ॥ ३६ ॥

روان ماند بران لولوی شان تاب  
و ظالیم و در کردم ترک از دل  
نفسه سیدم کجا بودم که بودم

سیر نیلوفر چو قطره آب  
بگر دیدم بسا برخواستش دل  
حیا را پیش کشش حرص نمودم

भातः कष्टमहो महान्स नृपतिः सा  
मन्त चक्रचतत्पाशैर्वत्स्य च सापि  
राजपरिषत्ताश्चन्द्रविम्बाननाः ॥  
उद्रिक्तः स च राजपुत्रनिवहस्तेव  
न्दिनस्ताः कथाः सर्वेष्वस्य वशाद  
गास्मृतियदं कालाय तस्मै नमः ३७

شهر آباد خوش منیان نگاه  
حسینان جهان مجلس سرانجام

چه سان عادل در نیجا بود شاه  
بسا در باریان نیک فرجام

جوانی غارت از تن سنان  
گذارد بدمان گنگاستوه

برادر زن و پور سبک جان  
خوش آنکس روز و در بیا بان و کوه

परेषां चेतांसि प्रतिदिवस माराध्य  
बहु हा प्रसादं किं नेतु विशासि हृद  
य लेश कलितम् ॥ प्रसन्ने त्वप्य  
न्तः स्वयमुदेत चिन्ता माणि गुणे-  
विमुक्तः संकल्पः किमभिलषितं  
पुष्पतिनते ॥३४॥

بمن یکسو حق با بین دل و حق حق در دل

چرا دل داری اختیار ادا بی بدل ایل

अथ भोगयद्वतिः ॥  
भोगे रोग भयं कुले च्युति भयं वि  
त्ते नृपाला इयं मौने दैन्य भयं व  
ले रिपु भयं रूपे जरा या भयम् ॥  
शास्त्रे वाद भयं गुणे खल भयं का  
ये कृतान्ता इयं सर्वं वस्तु भयान्वि  
तं भुवि नृणां वैराग्य सेवा भयम् ॥३५॥

به صاحب نسل بد اعلیٰ هویدا  
سپهوانان زد دشمن رنج جان  
چو لرزان بید خوش جسمی نشان شد

به عیش و وصل خوف از مرض پیدا  
بزر از شاه خاموشی ز جا ایل  
ز پیری چسب ز رنج چنان شد



غورم چون بنجار از جسم رفته لکبه پست آمد

निर्ममलास्वरूपमाह  
अति क्रान्तः कालो लटम ललना भो  
ग सुभगो भ्रमन्तः भ्रान्ताः स्मः सुचि  
र मिह संसार सरणौ ॥ इदानीं स्वः  
सिन्दोस्तदभुवि समा कन्दनगिरः सु  
तारैः फूत्कारै शिव शिव शिवेति प्रत  
नुमः ॥ ३२ ॥

به عیش و وصل محبوبان جوانی خوش زما رفته  
روان در دیر فانی عمر ما آخر پاکشده  
کنون خواهمش به بد گفتن زنان را بر کنار گنگ  
همین کافی ست در دما زبان شیویشویشو بسته

माने म्लायिनि खाण्डिते च वसुनि  
व्यर्थ प्रयाते धीनि क्षीणे बन्धुजने  
गते पारिजने नष्टे शनै र्योचने ॥ युक्तं  
केवल मेतदेव सुधियां यज्जन्दुक  
न्या पयः घृतग्राव गिरीन्द्र कन्दरदरी  
कुञ्जे निवासः क्वचित् ॥ ३३ ॥

شکر و زور رفت شد بی نصیب | گدایان بیه یوزه رفته غریب



अर्थानामी शिखेत्वं वयमपिच गिरा  
मी प्रमहेयावदित्यं भूरस्त्वं यादिद-  
प्पे ज्वर शमन विधा वक्ष्यं पाटवंनः  
सेवन्ते त्वां धनाद्या माति मल हतये  
सामपि श्रोतु कामा मय्यप्या स्थान  
चेत त्वायिमम सुतरामेष राज नानां  
स्मि ॥ ३० ॥

سنم مالک ملک علم و سمن  
کنم کل معمار عالم جہان  
بما علم خواہان ہزاران سرید  
ہی میروم دور تر از شما

توئی مالک ملک گنج و گہر  
توئی مشت زن بر سر دشمنان  
ترا از طبع نیک فاجر مرد  
بہ بین گر ترا نیست رغبت ز ما

यदा किंचित् तद्भोऽहं द्विप इव मदा  
न्धः समभव तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभ  
वदबलिप्तं मम मनः ॥ यदा किंचि  
त् किंचिद् बुधजन सकादशादव  
गतं तदा सूर्योऽस्मीति ज्वर इव मदा  
मैव्यपातः ॥ ३१ ॥

ز کم علمی تکبر در سرم چون فیل مست آمد  
به فہمیدم کہ شلم در جہان نیست ہست آمد  
چو آمد ہوش رقتہ در سرم از صحبت علما

पुरा विद्वत्तासी दुपु समवतां लेश हत  
ये गता काल नाशो विषय सुख सिद्धे  
विषयिणाम् ॥ इदानीं तु प्रेक्ष्य क्षि  
ति तल भुजः शास्त्र विमुखा नहो क  
सं सापि प्रति दिन मधाधः प्रविश  
ति ॥ २८ ॥

وزان پس از پنهان شدن  
هنر را در جبهه ادنی فزون شد

به اول این هنر بهر دنیا بود  
چو به علمی به شاهان رو برد شد

साहंकारं पुरुषमुद्दिश्याह  
सज्जनः कोप्यामान्मदन रिपुणा मू  
र्ध्नि धवलं कपालं यशो चै विनिहि  
त मलंकार विषये ॥ नृभिः प्राण  
त्राण प्रवण मतिभिः केचिद धुना-  
नमद्भिः कः पुंसा मय मनुज दपे ज्व  
रभरः ॥ २९ ॥

گذشتند انجمنان زهد که اسما پاک می گفتند  
که از سر پاک شان قدسی رب تسبیح می گفتند  
کنون زاهدان را که چند اشخاص را جمع شد  
سیکتر تر بر شان از زمین بالا می رفتند

بروین ناز حتما خوش را راجه می گفتند

मृत्पिण्डो जल रेवया बलयितः स  
वोऽप्यय न त्वण रगी कृत्य स एव  
सं युग शतै राज्ञां गणै भुज्यते तद्  
घ्न ददतेऽयत्रा न किमपि क्षुद्राद  
रिद्रा भृशं धिक् धिक् धिक् तान्युरु  
पा धमान्धनकर्ण वाञ्छन्ति तेभ्यो  
ऽपिये ॥ २६ ॥

زمین یک گردگان گل زحق برابر شد پید  
ز بس بد مختصر بروی دل شاهان شد پید  
چو شد تقسیم بس یکجمله حصه را ببا گفتند  
بدان لعنت ایران کانرا کاین خواهش شود پید

दुर्भगसेवकस्यवाक्यमाह  
न नटा न विटान गायना न परद्रो  
ह निवद्ध बुद्धयः ॥ नृप सस्यनि ना  
म केवय कुचभारा नमिता न यो  
षितः ॥ २७ ॥

نه جابل نه فنیان نه راوی منم  
که پرسد مراد ریشهان بود پرو

نه ام دار بازو نه زاسی منم  
نه ام زن خوشا سینه و خوبزو

निःस्पृहाणामधिकारमाह  
 त्वं राजा वयं मय्युपासितं गुरुप्रज्ञा  
 भिमानीन्मताः ख्यातस्त्वं विभवैर्य-  
 शांसि कवयो दिक्षु प्रतन्वति नः इ-  
 त्यं मानद नाति दूरमुभयो रष्या व  
 योरन्तरं यद्यस्मासु पराङ्मुखोऽ-  
 सि वयमप्येकान्तानि निःस्पृहाः २४

توئی را جاو من برخیزت بر شد همی نازم  
 تراجاه وحشم مارا خزینه مسلم بسیارم  
 برین هم گر ترا از من تنفر می شود پیدرا  
 مرا هم گوشه تنهاییست کافی دل نمی بازم

अभुक्तायां यस्यां क्षणमपि न या-  
 तं नृपशते भुविस्तस्या लाभे कद्  
 व बद्धमानः क्षितिभुजाम् ॥ तदं-  
 शस्याप्यंशो तदवयव लेशोऽपि य-  
 तयो विषादे कर्तव्ये विदधति जडाः  
 अत्युत मुदम् ॥ २५ ॥

هزاران را جگان این دیرافهمیده خود رفتند  
 کرا حاصل شود اکنون برو چه ناز می سفست  
 چو شد او پاره پاره پاره او حاصل شود تاجه

सी च ॥ नव धनमधु पान भान्त सर्वे  
द्वियाणा मावि नय मनु मनु नोत्सह  
इजना नाम् ॥ २२ ॥

خوش پر طعم آب ذالقه دار آبه نوز نشه در سر گشته هر عضو در در	خسب زمین پستی و پستی شیب پر شین که شند از دوزان تلخ گفتار ایشان
--	--

खुशवरतुमहायाजायकादारभाव खुसपजमिनपुशे पोस्तप्र  
श्जार पोशी नवजरनशदर्सगश्तहउज्वददर किशकनद  
अजदूनातलवगुफाररेशां ॥

मानितामुद्दिश्याह  
विपुल हृदये धन्यैः कौश्रिज्जागज्ज  
नितं पुरा विधृत मपरं दंत चान्ये  
विजित्य तृणा यथा ॥ इह हि भुव  
ना न्यन्ये धीरा अतुर्दश भुज्जने-  
कति पय पुरस्वाम्ये पुसां क राप  
मदज्वरः ॥ २३ ॥

زمین و آسمان را جای به بهاد که بعضی کرده خود را بروی قیانی گذشته زمین بحق پیوسته دل داد هوا و حرص را فهمید چون کرد تکبر بر پستی فهمد ز فخر خبی	شده آن کسی کو کرد نبیاد که شد پیدا پرو این ویر فانی کسی کو در ریاضت دل و زبان داد کسی کو پرورش کون و مکان کرد به بین آنرا که دارد حصه ارضی
--	--

वित्युपमितो मुखे श्लेष्मागारे तदपि  
च शशांकेन तुलितम् ॥ स्ववन्मूत्र  
क्लिन्नं करघरं करस्पर्शं जघनं म  
हो निन्द्यं रूपं कविजनविशेषैरुक्तं  
कृतम् ॥२०॥

سجانه تف و هن تشبيه از مهر پاره سفتند  
چنان بي لطف جيمي راز شعر مثل تو سفتند

دوستان بخت طبعي را مثال كوزه زر گفتند  
چنگان ابني از ران مثال بنبي فيلان

अजानन् माहात्म्यं पतन्तु शालभो  
दीप दहने समीनो व्यजाना हृदि  
शयुतमश्नातु पिशितम् ॥ विजान  
तोऽप्येते वयमिह विपज्जालजटि  
ला न्नमुच्चाभः कामानहह गह  
नो मोहमाहिमा ॥२१॥

و ما هي سیر لقمه جان بازو  
نمیدانند راز خفیه را بیش  
نه سازد ترک گرافسوس بر حال

به بین کرمی که در شمع جانگذازد  
از نهالیکه از جانبار می خویش  
ز نیک و بد که آن واقف حال

दुर्जनमुद्दिश्याह ॥  
विसमलमशनाय स्वादुपानायतो  
यं शयनमवनि दृष्टे वल्कले वास

कलशतै रा हतमनुः ॥ द्वाधा द्वाधो  
जीर्णः पिठ रज कपालापित गलः  
भुनी मन्वेति श्वा हतमपिच हन्ये  
वमदनः ॥ १८ ॥

بریده گوش و دم زخمی و بی تنگ  
کلوئے خم شکسته طوقی شد نیز  
کند کشته راکشته نفس زاده

ضعیف و واحد العین و پانگ  
ز بس ریخی و گرمی گرسنه نیز  
به این حالت رود و دنبال ماده

विषयाणामधिकारमाह  
मिक्षाशनं तदपि नीर समेक वारं  
शय्याच भूः परिजनो निज देहमा  
श्रम् ॥ वस्त्रेच जीर्णं शत खराडम  
लीन कन्था हा हा तथापि विषया  
न परित्यजन्ति ॥ १९ ॥

کشیف و بے مزه چون خورد و بے سوز  
نه فهمیده هم برادر تن او  
ضعیف و بار و نقش شکسته گشته  
باید گریز این نفس گره که بسته

گدائی کرده اکل در شب روز  
زمین و بستر آرام هر دو  
ز لته پاره پاره لته بسته  
وسیه در خواب و یان خوب بسته

रूपतिरस्कारमाह  
स्तनौ मांसयन्थी कनक कलशा



ति न जनो यत्स्वयममृन् ॥ व्रजन्तः  
स्वा तन्म्रा दतुल परतो पाय मनसः  
स्वयं त्यक्त्वा ह्यते शम सुखमनन्त-  
विदधाति ॥१६॥

چه گذرانی به عیش جاودانی  
که او خود ترک میسازد لذات  
و دیرینج و تعب از حد در مرگ  
مسرت یابی و در روضه باشی

رو دیکر و ز این لذات فانی  
از آن بهتر که سازی ترک لذات  
چو آمد وقت آخر پیش از مرگ  
و گرازد تو تارک نفس باشی

तृष्णाधिकारमाह  
विवेक व्या कोश विदधाति श मे शा  
म्याति तृषा परित्यङ्के तुङ्गे मसरति  
तरां सा परिणतिः ॥ जरा जीर्णेष्व  
यत्र सन गहना क्षेप क्षपण स्तृषा पा  
त्रे यस्यां भवति मरुता मप्याधिपति ७

رو در دم طبع مانند کافور  
نه ممکن ترک او از شاه رضوان

شود هر گه که روشن روشنی نور  
اگر دل در دهر عیش نسوزان

मदनविडम्बनमाह  
क्षश. काणः स्वप्नः श्रवण रहितः पु  
च्छ विकला व्रणी प्रीति क्षिप्तः क्षामि

भिक्षैस्तेः फलैर्वचितम् ॥१३॥

کز و یا بهم امید جاودانه  
فقیری را سپی حق ره نبردم  
خیال حق شده از حد محالم  
خیال عابدان بر عکس ما بود

نکردم ترک من آرام خانه  
از خوف باد و آتش و یخ نکردم  
مانده روز و شب در زخمیالم  
چهره کردم آنچه ناکردن زنا بود

वलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरंकि  
तेशिरः ॥ गात्राणि शिथिलायन्ते  
तृणौका तरुणायते ॥१४॥

سپیدی شل رخ سراکشان  
جوانی حرص را اکنون فزاید

از نقشا نقش پیری رونمایان  
خمیده جسم از پیری بسابد

ये नैवाम्बर खंडेन सम्बन्धितो निशि  
चन्द्रमाः ॥ ते नैव च दिवा भानुर  
होदोगत्यमेतयोः ॥१५॥

بجز گردش نه حاصل هیچ اثری  
تعجب مرگ را بهم نیست همی

کنند سایه باده و مهر ابریه  
مذلت میدهد یکبار ره ابریه

प्रवश्यं यातार स्थितरमुपित्वा  
पि विषया वियोगे को भेदस्त्यज

नारी पीन पयोधरोरु युगलं स्वप्नेऽ  
पि ना लिङ्गितं मातुः केवलमेव या  
यनयन च्छेदे कठारा वयम् ॥११॥

نشوم تارک زردون دنیا به پاسی  
به جنت مهربا باشد مددگار  
نه دیدم خواب از حوران جینی  
نه سینہ را پسینه در برم من  
که زاده مثل ما فاسخ و فاجر

نه کردم بندگی حق را سیاسی  
نه خیر ای که کرد آسان شو و شکار  
نه کردم عیش باستان سیمی  
نه ساق حر را کردم کمر من  
چه کردم تلخ نو عمری مادر

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ता स्तपो  
न तप्तं वयमेव तप्ताः ॥ कालो न  
यातो वयमेव याता स्मृणा न जी  
र्णा वयमेव जीर्णाः १२

نه آتش را پرستم سوختم من  
نه رفتم وقت ما رفتیم آخر

نه خواش وصل رفتم میروم من  
نه رفتم بخل ما رفتیم آخر

क्षान्तं न क्षमया एहो चित सुखं त्य  
क्तं न संतोषतः सोढा दुःसह शीत  
वात तपनाः क्लेशान्न तप्तं तपः ॥ ध्या  
तं विन महर्निशं नियमित प्राणेन  
शंभो पदं तत्तत्कर्म कृतं यदेव मुनि

सुयोत्थानं घन तिमिर रुद्धे च नयने  
अहो धृष्टः कायस्तदपि मरणा पाय  
चकितः ॥८॥

زیریں ریشہ شد در جسم باران  
دیے از مرگ خوف اکنون نسبت باقی

نه خواہش ماند باقی سنیے زیاران  
نه پیشم گوش نبوش از عقل باقی

हिंसा शून्यमयत्त लभ्य मशानं धा  
त्रामरुत्कल्पितं व्यालाना पशव  
स्त्रणां कुरभुजः सृष्टास्थली शायि  
नः ॥ संसारार्णव लंघन क्षमाधियां  
वृत्तिः कृता सा चृणां यामन्वेषय  
तां प्रयान्ति सततं सर्वे समाप्तिं शु  
णाः ॥९॥

به ماران باد حق کرده محاصل  
به انسان داد خدمت حق را کام  
و طایف و در و زره ترک بد ذات  
که حق بود آنچه حق کرد حق پرستی

نه خوف جان کشتی بیرنج حاصل  
به حیوان کاه خوردن بر زمین رام  
عبور و یرفانی ترک لذات  
به انسان داد خدمت حق پرستی

न ध्यातं पदमीश्वरस्य विधिषत्  
संसार विच्छिन्नये ॥ स्वर्ग द्वार कपा  
दपादन पदु धर्मोऽपिनो पार्जितः ॥

जन्म जरा विपति मरणं त्रासश्च नीत्य  
 क्षते पीत्वा मोह मयीं प्रमाद मदिरा  
 मुन्मत्त भूतं जात ॥७॥

ز بار دیر فانی سینہ را کم فتد خبری  
 عجب نوشیده الفت دیر کز وی میشود خبری

ز رفتن قمر در روز و شب کم میشود عمر  
 ز بود و مرگ پیری خوف هم در دل نمی آید

दीना दीन मुखैः सदैव शिशु कौरा  
 कृष्ट जीणो म्वरा कौशद्धिः क्षुधि  
 तैर्नैर्न विधुरा दृश्येत चेद्देहिनी  
 याञ्चा भङ्ग भयेन गद्गद लसतनु  
 द्यहिली ना क्षरं को देहीति यदे  
 त्व दाध जठरस्यार्थे मनस्वी जनः ८

ز گسستی عاجز زان فریادی شد با  
 که باشد که گوید بجز غریبان نفلس نمان

مرب نفلس انسان کشد و نقش طفل گریان  
 ز خوف و ریا نباشد بدرد شد خویش گمان

जिवस्मु फालिस् इत्सां कशदलक शतिफल गिरयां जिगुर्सर्गो  
 जाजिजिजिन फरयादी शुदवसा जिखौ फेदरवां हावदरदर भुदखा  
 हशकुना किवा शदको गोयदक्जुज गुरवां मुफलिस जिनान

निवृत्ता भोगेच्छा पुरुष बुद्धमानो  
 विगलितः समानाः स्वर्गोत्ताः सपु  
 दि सुहृदो जीवित समा ॥ शनैर्य

कया काकव तृष्णो दुर्मति पापकर्म  
निरते नाद्यापि संतुष्यसि ॥ ५॥

کردم شک ز خود و نفس خود را شد بندگی بی صلا  
حرص کم بخت گناہ شدنی اکنون صبر را بگیر

کردم قلم با و کوه دور یا حائل نه شد یک برم  
نزد من بلکه نه کنم نیز اگر با خوف چون ز اغیب

गदीदं किल हावको हृदयाहं सित्त्वन भुदरा कवरं कंदितं केजि  
हन फल सुदरा भुदरा वे सित्त्वा सुदं वस्किमज हितं वरादिगर बाखौ फ  
चैजा गहा हिसे कं वरत्ते गुनाह भुद ईउ क्क सवरा वगीर ॥ १॥

खलोत्था पाः सोढा कथमपि तदारा  
धन परै निर्गृह्यान्तर्वाष्यं हसित  
मपि भूत्येन मनसा ॥ कृताश्चित्तस्त  
म्भः प्रहासितं धिया मञ्जलि रापि -  
त्वमाशे मोघाशे किम परमतो नर्त  
यसि माम् ॥ ६॥

کشیدم خنده شان بهر دوان بود  
گزیدیم تاگزید نه از نادان  
کجا رقصانی از بهر پیشینیه

به دوانان بندگی بهر دوان بود  
دور و نم پر زاشت روی شادان  
نه شد حاصل مرا ای نقش خیزیه

आदित्यस्य गतागतै रह रहः संक्षी  
यते जीवितं व्यापारै र्वह कार्य भार  
गुरुभिः कालोन विज्ञायते ॥ दृष्ट्वा

نه شد پيدا كسي در دیر فانی  
كه كوكار بايے نيك فخر نم  
بهشتی حور را باشد دوران سیر  
لهذا ترك دنیا واجب آمد

كه گذرانده عیش جفا و دانی  
كه ترش می برد در محبت انجام  
چو شد آخر بیار و باز در دیر  
كه بهر راه حق این فاجر آمد

उत्खातं निधि शंकया क्षिति तलं  
धमाता गिरे धातिवो निस्तीर्णः सरि  
तां पति र्चपतयो यत्नेन सन्नोषिताः  
॥ मन्त्रा राधन तत्परेण मनसा नीताः  
प्रमशाने निशाः प्राप्तः काण वराह  
कोऽपि न मया नृषोऽधुना सुञ्च  
माम् ॥४॥

ز بهر ز زمین را چاک کردم  
به دریا گشت و شه را ناز داری  
شب تجو را چون روز دیدم  
کنون خواهش که این در مانیا ید  
کنون خواهش خواهش میکنم بار بار بانی ده

به کوه و دشت کان را راه بروم  
و ظالیف را قبور ان جای تاری  
و سیل یک جبه از قسمت نه چیدم  
که در مان به ازین از مانیا ید  
که از منید تو من بر آدم مارا ر بانی ده

भ्रान्तं देशमनेक दुर्गविषमं प्राप्तं  
न किञ्चित्फलं त्यक्त्वा जाति कुला  
भिमानमुचितं सेवा कृता निष्फला  
मुक्तं मानविवर्जितं परि ग्रहे साशं



श्रीगणेशायनमः॥

## अथ वैराग्यशतकं

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नाऽनन्तचिन्मात्र  
मूर्तयः॥ स्वाचुभूत्येकमानायनमःशा  
न्तायनेजसे॥१॥

که کیسان نژاد و ظاهر و باطن نیک فاجرت  
قدر و کبریا و تقا در دستار و نام صرا

که من سجد به سهر خالق داور و داور را  
نه پوشیده نه پوشده از جبات نور حق نور

योद्धारोमत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयद्  
पिताः॥ अवोधोपहताश्चान्येजीणे  
मङ्गसुभाषितम्॥२॥

جهالت جاہلان را داد و دران توانائی

عقلمندان بخوبیتی تو نگرا تو انائی

नसंसारोत्पन्नं चरितमनु पश्यामि कु  
शलं विपाकः पुण्यानां जनयति भ  
यं मे विमृशतः॥ महद्भिः पुण्यै धे-  
श्चिर परिगृहीताश्च विषया महा  
न्तो जायन्ते व्यसनमिव दातुं विष  
यिणाम्॥३॥

# अथवैराग्यश तर्क

वैराग्ये सचत्यका न्येकोनीतौ भम  
तिचापरः ॥ भृंगारे रमते कश्चिद्दुवि  
भेदाः परस्परम् ॥ ६६ ॥

کیسے در عشق سے ماند طہیری شناسیدن خدا بس نفوذ نگر	کیسے انصاف گیر و کس فقیری بدینا یک ز یک نقشیت دیگر
--	---

यद्यस्य नास्ति रुचिरं नास्मिन्स्तस्यास्य  
हामनञ्चोपि ॥ रमणीयेऽपि सुधांशौ  
नमनः कामः सरोजिन्याः ॥ १०० ॥

تزیین و وصل از بیدار و برون که دارد و در قفس دل بسته را راه	بأن کس دل نخواهد عیش کردن نہ نمیشد گفت در شب ساه
--	---

इति शृंगारशतकम्

किं कंदर्पकरकदर्थयसि किं कोदंड  
भकारितै ररेकोकिलकोमूलंकल  
रवं किं त्वं ह्या बलाम् ॥ सुगधालिगध  
विदग्धसुगधमधुरैलोलैः कटाक्षैर  
लम् चेति शुभितचंद्रचूडचरणध्या  
नाभ्यंतं वर्जिते ॥ ६७ ॥

کمان خویش را توده به پرواز  
زیر بامکن کاین نمبه را نی  
میکن ناوک از بهر ز چشمه  
سها دم لطف عیش و دیر در گل

چرا ترسانی ای نفسم ز آواز  
چرا ای خویش گلو کو کل سدا نی  
چرا ای زن کنی ناز و کرشمه  
بیای شب ز دل آویختم دل

यदा सोदज्ञाने स्मरति मित्रं चारज  
नितम् तदा सर्वे नारी मय मिदमश  
यं जगदभूत् ॥ इदानीं मस्मकं पद  
तरविवेकाजनदशाम् समीभृता-  
हृष्टिस्त्रिभुवनमापि ब्रह्ममनुते ॥ ६८ ॥

نمایان شد جهان چون زن بچشم  
عجازی را حقیقی کرد در سکن  
نانه خبر حقیقی حق مطلق

به شهوت نفس تا کی ماند جسم  
کنون از نفس چون برداشتم دل  
چون نظر ببت در معبود مطلق

सुभं सय सविभ्रमायुवतयः श्वेतात  
 पत्रोज्ज्वला लक्ष्मी रित्यनुभूयते स्थिर  
 मिव स्फीते शुभे कर्मणि ॥ विच्छिन्ने नि  
 तरामनगकल ह क्रीडा नुदत्तनुकम्  
 मुक्ता जालमिव प्रयाति भाटिति भ्रश्य  
 दिशो दृश्यताम् ॥ ८५ ॥

دل عاشقان درو یے آویخته  
 سیر خوش و شبنمی استوار  
 به ایام نیگی شود شاد کام  
 شکسته جو لالی پیتر مرده مرد

مکان صاف آراسته ریخت  
 زن خویر و ناز و عشوه گزار  
 چو زرش مثل عیش سازد مدام  
 ز بونی کند ورد می عیش گردد

सदायोगाभ्यासव्यसनवशयोरात्म  
 मनसो रविच्छिन्ना मैत्री स्फुरति यामि  
 नस्तस्य किमुतैः ॥ प्रियाणामाला  
 पैरधरमधुभिर्वक्त्रविधुभिः सनि  
 श्वासामौदैः सकुचकलशश्लेषसु  
 रतैः ॥ ८६ ॥

محبت در دل جهان شد زیاده  
 تکلم خویر و یان خوش و دیر  
 شود کانرا که خواشش سوی رضوان

بالغرضش چو دل در حق نهاد یه  
 پیر افشش به خنیا گردد بدرو  
 خزان بد وصل نیه مالش بیستان

بدان بر او خدا از بس رحیم است

نزار دل بزن هر کس فهم است

वाले लीला मुकुलित ममी सुन्दर हृष्टि  
याताः किं क्षिप्यन्ते विरम विरम व्यथे  
पश्रमस्ते ॥ सुप्रत्यय वयमुपरतं वाल्म  
मास्थावनान्ते क्षीणो मोहस्थणा भिक्वा  
ज्जलनमालोकयामः ॥ ८३ ॥

شوی شرمنده از این ترک تازی  
سهاوم دل بر او حق پئے سیر  
که دنیا دون چو خس شد در نظر ما  
که بس شتم ز دیدار تو بیزار

شنوایے زن چو این نظر باری  
که دل برداشتم از سیر این دیر  
روم صخرانہ خواہش دیگر ہے ما  
بہ کن آرام بہ سرم دل سیار

इयंवालानां प्रत्यनवरत मिन्दो वरदल  
प्रभा चोरे चक्षुः क्षिपति किमभिप्रतम  
नया गता मोहाः स्माकं स्मरशवरवाण  
व्यतिकर ज्वलज्वालाः शान्तास्तद  
पिनवराकी विरमति ॥ ८४ ॥

چرا تیر نگہ بر بارہا سئے  
شدہ سنج نفس آتش تار کم من  
گذشتم من ز جد از سیر دنیا

بنار و غمزہ بر ما چون فدایے  
چہ حاصل خواہی از تار کم من  
چرا این یے و قوفی از پئے ما

वैश्यासौमदनज्वाला रूपेन्धनसमे  
धिता ॥ कामभिर्यत्र हन्यन्ते यौवना  
निधनानि च ॥

درو آتش نهان از نفس خیمه  
سند گواندرو یک نفس پیرا

طوالیف غوبر و ابنوه همیشه  
به سوزاند جوانی را و زرد را

कश्चुम्बतिकुलपुरुषोवैश्याधर  
पह्ववमनोज्ञमापे ॥ चारभटचोरच  
टकनटविठनिष्ठीवनशरावं ॥ ६१ ॥

نگیرند از لپش بوسه غمخیزان  
ز غنایان ناکل و ساحر نوردان  
بها شرمندگی بوسه ز شرم فاست

طوالیف سیمیر خوش روحریان  
ز نا کاران و مجر و بهات و دزدان  
چلبی و طوالیف بهر اینهاست

धान्यास्तरावतरलायतलोचनाना  
म् तारुण्यरूपघनपीनपयोधरा  
णाम् ॥ क्षामोदरोपरिलसच्चिवली  
लतानाम् दृष्ट्वा ह्यतिविह्वलिमति  
मनोनयेषाम् ॥ ६२ ॥

جوان و سینه چون سرخاب زاله  
خوشا نقشش به افتاده به قاتم

دو چشمان صغوه یا آهوه غزاله  
مگر بارش شکش مثل قاتم



न गम्यो मन्त्राणा न च भवति भेषज्य  
विषयो न चापि प्रध्वंसं व्रजति विवि  
धैः शान्तिक शतैः ॥ भ्रमा वेशा देगे  
किमपि विदधद्भ्यमसमम् स्मरोऽप  
स्मारोय भ्रमयति दशं घूर्णयति च ८८

چه از خواندن و طالعیت است  
نماید خوشتن را خورده و دق  
به بنید در نظر هر وقت یک نقش

نه قابل سحر و لایق و واسی  
بهر گه برده بوده در ره حق  
شع و هر کس که تابع مشهور و نفس

जात्यं धाय च दुर्मुखाय च जरा जीर्ण  
खिलां गाय च ग्रामी णाय च दुष्कुला  
य च गलत्कुला भिभूताय च ॥ यच्छ  
लीष मनोहरं निज वपुर्लक्ष्मीलव  
भद्रया पश्य स्त्रीषु विवेक कल्पल  
तिका शस्त्रीषु रज्ये नकः ॥ ८९ ॥

زیر می ضعف شد و شرع به هر اک  
به کمتر ذات دیهاتی و چون نوک  
طوالیف به زرد دل را نهاده  
طوالیف را و بد دل کوپه نار  
بشر فا کوست کو با و پازو

با در زاد تا نبیا و بد شکل  
شده به عضو دیر پیش چون دوک  
خدا به بر صبی و کرم افستاده  
بشر در راه ضلالت به سب نار  
به جسم ناز با و عیش سازد

مرود و سگید باشد با نجام	که اندازد و غارت گر کام
--------------------------	-------------------------

व्यादीर्घेण चलेन वक्र गतिना तेज  
स्विना भोगिना नीलाब्ज घति नाहि  
ना वर महं दष्टो न तच्चक्षुषा ॥ दष्टे  
सन्ति चिकित्सकादिशि दिशि प्राये  
ण धर्मार्थिनो मुग्धा क्षी क्षणवी  
क्षितस्य नहि मे वैघो न चाप्योष घं २६

سکالان سرشنز قنارش گره دار همان به از گزندش دور بودن اطبای اهل یونانی و از سبب وسپه کان را گزند زن نوجوانی	کبودی مثل نیلوفر کلان مار گزدگر سبزه اش تریاق سودن دوا دارند و هم مرهم و هم پند نباشد دار و اس در دوجانی
---	---

इह हि मधुर गीतं नृत्य मेतद्रसो य  
म् स्फुरति परिमलोऽसौ स्पर्शा य  
स्तनानाम् ॥ इत हत परमार्थे रिद्धि  
यै भ्राम्यमाणो सहित करण दक्षैः  
पंचभिर्वैचतोऽस्मिः ॥ २७ ॥

به دنیای شهوت و خنیان بر قاص از نیهای تو شدی ناری و شادی همین نفس از پیت و شمن شده است	مساس سینه و خوش بوی و نخاس تو ناری از حق و دینج عادی گمارد جابجا دشمن شده است
--	---

षष्ठे शत्रुरचनिता भोगि यस्तस्यज  
निहिम त्रिणः ॥ ८३ ॥

نہادہ دل دروچون تیز خنجر  
اگر دانشور سی دل باز بردار  
رسند سو دہم سر پہنچ برودہ  
گریزدگر طبیعت عالم گزیدہ

تو ناوک جسم را دان مثل انگہ  
ادا و ناز را دان چون سہرار  
زافسون و دو از مار خورده  
ولیکان را کہ زن انھی گزیدہ

विस्तारितं मकर केतन धीवरेण-  
रुन्नी संज्ञितं वडि शमन्न भवास्तु  
राशो येना चिरा तद धरा मिष लो  
ल मर्त्य मत्स्यान् विवक्ष्य पचती  
त्यनु राग वन्द्यो ॥ ८४ ॥

نہادہ جبل زن پر عشوہ و سحر  
چو باہی آمدہ انسان در دام  
بہ آتش عشق اورا می پردہ پس

ز صیاد و نفس در پایی این دیر  
درواز لب نہادہ طعمہ خام  
کشیدہ پوست اورا میدرد لبس

कामिनी काय कांतारे कुच पवति  
दुर्गमे ॥ मास चर मनः पान्त्य तत्रा  
स्ते स्मर तस्करः ॥ ८५ ॥

چو درشت ابنزوہ پستان کوہ نبیان

شنوایدل کہ جسم نازنینان

بہا سسٹل لب ایش رسیدن بفہم اول اگر غرق تو درو سی اگر خواہی تو ترک دیر در یا	سنگان را درو باست دیرن رسی در بحر برای نہ از وی ز جو آسان زمان تو دور در آ
---	--

जल्पन्ति सार्द्धमन्येन पश्यन्त्यन्यंस  
विभ्रमाः ॥ हृदये चिन्तयन्त्यन्यमि  
यः को नाम योषिताम् ॥ ८१ ॥

بیک کس گفتگو یاد گیر یہ تاز وفا از فرقہ نسوان نباشد	بہ الفت دیگر یہ را میکند ساز اگر باشد از فرقہ زن نباشد
--	---

मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदि हा  
ला हल मेव केवलं ॥ अत एव नि यी  
यते ऽधरो हृदयं मुष्टिभि रेवता इव  
त ॥ ८२ ॥

زبان زمان پرز آب حیات مکنه از زبان زمان مست حال	دل ایشان پر از سقم قاتل صفات بیسینه زنان میکند مشت مال
--	---

अपसर सखे दूरा दस्मात्कटाक्षशि  
खानलात् प्रकृति विषमा द्योषि  
त्सर्पा हिलास फणा भूतः इतर फ  
णिना दष्टाः शक्याश्चिकित्सितु मी

گل نیلوفر ی را ابو چنان داد	که گرد و گرداو بخش پاز بیداد
-----------------------------	------------------------------

यदेतस्पर्णेदु घति हरदुदा रा कति  
वरम् सुखाज्जतन्वंग्याः किल वसति  
तत्रा धर मधु ॥ इद ताव त्याक दु  
म फल मिवा तीव विरसम् व्यतीति  
ऽस्मिन्काले विष मिव भविष्यत्यसु  
स्वदे ॥७८॥

لبانش را چه یا بد بر یا را  
رسیده بر که دار و ذایقه لب  
زنان را چون ز صبشم و رشده نور  
بران هم زال را چون مار تلخی

زمان خویر و یان ماه پاره  
شنیدم حیات آب در لب  
گذشته از رسیدن را برود و  
نماند از روجر شور و تلخی

उन्मील त्रिवली तरंग निलया प्रोतुं  
ग पीन स्नन हृन्द नोद्यत चक्र वाक  
मिथुना वक्रां बुजो द्वासिनी कांता  
कारे धरा नदी यम भितः कूरा सपा-  
नेष्यते संसाराणवमज्जनं यदि ततो  
दूरेण संत्यज्य नाम ॥८०॥

در و پستان چو یک جفت سرخاب  
جوی در شکل زن آمد نهفت

بران فچ زنان را شناختن آلاب  
در و ریش چو نیلوفر شکفته

<p>محل تعجیل ہم مخزن گنایات          بدو زخ پے پردے فکر و منت          یقین کن را بشارت می برد پس          فرمیده بانس از مهر و از قهر          چه نامش و از زن اندر جهانی</p>	<p>خزاین بے ادب جای شکوگان          به صد با کبر و ریب در جنت          قابل اعتبار و بے یقین پس          فریب و برج نیر از امت و زهر          چنان یقین که سزد و در جهانی</p>
--	---

सत्यत्वेन शशांक एष वदनी भूतो न  
 वेदी वर इन्द्र लाचन तां गतं न क  
 नके रय्यगयष्टिः कृता॥ किंत्वे के  
 कविभिः प्रतारित मनस्तत्वं विजा  
 नन्नापि त्वं मांसा स्थि मयं वपु र्मु  
 ग दशा मन्दो जनः सेवते ॥७९॥

<p>نه چشمش بهجوز ریس گفتگو زاد          به فانی جسم در معنی شنفستند          به تمریف زنان مشغول شد ۵</p>	<p>نه رو چون به نه چشمش هم جو فلزاد          شریفان شاعران تشبیه شنفستند          به عقل دانش و گم کردگان راه</p>
---	---

लीला वतीनां सहजा विलासास्  
 त एव मूढस्य हृदि स्फुरति ॥ रागो  
 नलिन्यादि निसर्ग सिद्धिस् स्तत्र  
 भ्रमस्येव मुदा षडङ्घ्रिः ॥८०॥

<p>بجوش آورد دل نادان طنار</p>	<p>صفت ذاتی زن آنست عشوه ناز</p>
--------------------------------	----------------------------------

اگر بوسه گشند در یک نفس پس | چنان نام زمان و تپا نه بد کس

ताव देवा मृतमयी याव ह्योचन गो  
चरा ॥ चक्षुः यथा द्रुप गता विषा द  
प्यतिरिच्यते ॥ ७४ ॥

به پیش چشم چون آسمیات است | بدوری سم قاتل جان خراش است

ना मृतं न विषं किंचि देकां सुखानि  
तस्वनीम् ॥ सैवा मृतलता रक्ता वि  
रक्ता विष यस्वरी ॥ ७५ ॥

نه آب حیات است دینے سم قاتل | بهر وسه دهر دواز راست باطل  
به الفت و دهر جان به آب حیات | به نفرت سم بهر جان خراشی

आवर्तः संशयानाम विनय भवनं प  
त्तन साहसा नाम् दोषाणा सन्निधा  
नं कपट शतमयं क्षेत्र मप्रसयाना  
म् ॥ स्वर्ग ह्यस्य विघ्नो नरक पुर  
सुरवं सर्वमाया करण्डम् स्त्रीयन्त्रं  
केन सृष्टं विषम मृतमयं प्राणिनां  
मोहयाशः ॥ ७६ ॥



چو گویم من با و بهتر که بهتر شد وین دنیا

نشا دیگر جهان با چنین دنیا و هم خنیا

अथ कामिनीगर्हणप्रशंसा  
कान्तिसुत्पल लोचनति विपुलश्रो  
णी भरेत्सुत्सकः पीनो तुंगपया धरति  
सुसुखाम्भोजेति सुभुरिति ॥ दृष्ट्वा मा  
घति मोदतेऽति रमते प्रस्तौति जानन्  
पि प्रत्यक्षा शक्तिपुत्तिकां स्त्रियमहा  
मोहस्यदुश्रोषितम् ॥ ७२ ॥

نهید دل اندر و چون وصل مرغوب  
گند تحسین حسن بادل و جان  
خوشا بار یک پهن و در میان صبر  
خوشا غلغله از رو اندر و سمان زده  
تعجب سما کجا دل بر سگمارد

اگر عاشق به بیند نقش محبوب  
به چو شد غلط ساز و بادل و جان  
توئی مهر و توئی نیلوفر و چشم  
و دستانت سرخاب اندر یا کوه  
به بیند خوش بود و تمریف سازد

स्मृता भवति तापाय दृष्ट्वा चोन्माद  
वर्द्धिनी ॥ स्मृता भवान मोहाय सा  
नाम दयिता कथम् ॥ ७३ ॥  
इतियोवन प्रशंसा समाप्ता

ز دیدن شوق و شهوت می در آید

شنیدن سوز و دل می فزاید

रागस्यागारमेकं नरकशतमहादुःख  
संप्राप्तिहेतुर माहस्योत्पातिर्वाजजल  
धरपटलज्ञानताराधिपस्य ॥ कन्द  
पस्यैकमित्रप्रकृतिविविधस्पृष्टो  
षप्रबन्धम् लोकेस्मिन्नघनयानि  
जकुलदहनयौवनेदन्यदस्ति ॥ ७० ॥

شود روشن نفس از عالم الغیب  
جوانی هست خانه دوز خان را  
بسته نور را بر سیاه هست این  
نخوتش نسلان بدی میگردان  
بگویم راست است این فرق بر مو

جوانی هست یک کنجینه عیب  
جوانی هست خانه خواهرشان را  
و بد تکلیف تمام هر صفت این  
وزیر شهوت و شاه تکلیف  
بدی باد در جوانی میدهد رو

भृंगारदुम नीरदे प्रचुरतः कीडारस-  
स्रोतांसि प्रफल्नप्रियबोधवे चतुरता  
मुल्काफलोदन्वति ॥ तन्वीनेत्रचको  
रपारणविधौसौभाग्यलक्ष्मोनिधो-  
धन्यः कोऽपि न विक्रियाकलयति प्रा  
प्तेनवे यौवने ॥ ७१ ॥

بسته کردن بدن شد بر دل توده  
تند و چشم مجربان نماید برسان جوهر  
بگویم زن از و گزیند با شکری نماید فرد

پنهان و بر حسن آب منیع سا بوده  
بر لوت شهوت و هم بر شیار کی بر از گوهر  
شده او گیسو را از گشتی سو یا گیزد طاهر کرد

کر می شود و ما دم آب از گنگ  
نمایان مثل نندگی گاو دبی شان  
نه سر سودی بگوشه عابد از زهر  
ز زن ترسار و در سجده ز ذکر

بکوبستان شفاف شده سنگ  
بجوشم شاخ بر در کوه گنجبان  
بکوبستان نه بودی بسکن زهر  
نبودی زن نه کردی سجده از فکر

संसार तव निस्तार पदवी न दवी  
यसी ॥ अन्तरादुस्तरानस्यु र्यदि  
रे मदिरे क्षणाः ॥ ६७ ॥

بدری اسان سباره جاودانی

نه بودی زن اگر در دیر فانی

अथ यौवन प्रशंसा

राजन् त्वहमांषु राशेर्नाहि जगत् गतः  
काश्चिदेवावसानं कोवाथैर्यैः प्रभू  
तैः स्ववपुषि गलिते यौवने सानुरागे  
गच्छामः सद्यतावाहिकसितनयने  
दीवरा लोकनानाम् यावच्चाक्रम्य-  
रूपं भटिति न जरया लुप्यते प्रेयसी  
नाम ॥ ६८ ॥

جوانی رفت پیری شد هوس زنا  
رود از شوق در ره سیم جمان  
به پیری کس نمی پرسد بے طعن

نمیدیم ترک گو کرده هوس را  
شده عادی به نظاره چشمان  
و بے تاملی که ماند نور در حسن

اگر شہوت بان کس نے کند مس | رود کوہ گران بر آب چون خس

ससारः स्मिन्नसारे कुन्तयति भुवन  
द्वारसेवा चलम्ब व्यासं गव्यस्तधैर्य  
कथममलधियोमानसं संविदध्युः  
यधेताः प्रोद्यद्दिदुधतिनिचयभूतो  
नस्युरम्भाजनत्राः मेखत्काचीक  
लायाः स्तनभरविनमन्मध्यभागास्त  
सायः ॥६६॥

خوشا رو خوش گلو در دیر کیتا  
حوکل نیلوفر ی از خمر چشمش  
نه کردی کس عیالے حکمرانی  
نه بودی پیش شاهان عجز و پائال

ز بس تا بان چون صد بر یکجا  
خمیده شد ز بار سینه چشمش  
نه بودی زن اگر در دیر فانی  
جوانان عقلمندان صاحب حال

सिद्धाध्यासितकन्दरेहरवृषस्कंधा  
वगाददुमे गंगाधौतशिलातले हिम  
वतः स्थाने स्थिते श्रेयसि ॥ कः कु  
र्वीत शिरः प्रणाममालिनमानं मन  
स्योजनो यद्यत्रस्तकुरगशावनयना  
नस्युः स्मरास्त्रं स्त्रियः ॥६७॥

زمان چشم نیلوفر و جیهان

صلح نفس آماره بگیهان

स्त्रीमुद्रां भूषकेतनस्य जननीं सर्वा  
र्थसम्पत्तिकरीम् येमूढाप्रविह्वययां  
तिकुधियो मिथ्या फलान्वेषिणः ॥  
नेते नैव निहत्य निर्दयतरं न गीकृता  
मुगिडताः कोचित्पंचशिखीकृताश्च  
जटिलाः कापालिकाश्चापरे ॥ ६४ ॥

شود بے عقل کم فہم و قسم خو  
کند ترک زنان بے بہت خوشی  
ہی رہی کند عریان ز شہوت  
کسی ہنخ جود در سر میکانند  
کسی پالناک کس از شوق برده

تغاب خورده پس ہر کس دہدرو  
نہ کشتہ نفس امارہ از ان پیش  
بہ آخر میشود کشتہ ز شہوت  
کسی اصلاً ح سر خود میکانند  
جفا در سر کسی پا دست کردہ

विश्वामित्र पराशर प्रभृतयो वाता  
म्बुपणाशना स्निःपिस्त्री मुखपंकज  
सुललिते हृदये मोहगताः ॥ शाल्य  
नं सघृतं पयोदधि घृतं भुजान्तिये  
मानवा स्तषामिदं नियहो यदि भ  
वेद्दिध्यस्तरेत्सागरम् ॥ ६५ ॥

غذا کردہ ز شہوات مترا بان  
بدین غرق شد دریا چو شتی  
ز جفرا ت و برنج و طعام شد بیر

ز برگ و آب باد و دریا بان  
و بے خوش روزن جور بہشتی  
کند ہر کس غذا از روغن و شیر

शास्त्रज्ञोऽपि प्रथित विनयोऽप्यात्म  
वीधोऽपि वादम् संसारोऽस्मिन् भव  
ति विरलो भाजनसद्गतीनाम् ॥ येन  
तस्मिन् निरयनगरद्वारमुद्घाटयन्ती  
वामाक्षीणां भवति कुटिलभूलताकुं  
चिकेव ॥ ६२ ॥

و یا زاهد که دارد صد در علم  
نه سازد خویشتن را از بهار شیش  
اگر حله بزین باشد بعد قهر  
بیکدم میگذارد برق چون سیع

به صرف و سخن شافل واقف علم  
به مشکل میرسد کس عاقبت خویش  
بر این جسم انسان هست یک شهر  
سنان تیر و کمان و خنجر و تیغ

हृशः काणः खजः श्रवण रहितः  
पुच्छ विकल व्रणी घृय क्लिन्नः  
कामिकुलशतरा घनतनुः ॥ क्षुधा  
क्षामोजीर्णो मृन्मय कपालार्पित  
गलः शक्नीमन्वेतिश्चा हतिमपिनि  
हन्त्येवमदनः ॥ ६३ ॥

به یک چشم و بزخم ریج بے تنگ  
رسیده عمر طوق از گلو خشم  
رود و نیال سنگ ماده ز شهوت  
که گردانم از نیک کردار

بیا لاغر و صم و بکم پا تنگ  
کرم افتاد از حد گرسنه هم  
پانیجالت رسیده سنگ ز شهوت  
کنند این نفس را از پنجهان خوار



देवेन्द्रियाणां लज्जातावद्विधने विनय  
मापि समालम्ब्यते तावदेव ॥ भूचाया  
कृष्णमुक्ताः श्रवणपथि गतानि लपस्या  
लः पाणते यावत्स्त्रीवतीनां न हृदि धतिमुषो  
दृष्टिवाणाः पतन्ति ॥ ५६ ॥

حیات و شرم مانند تابان  
و دیگر شیر ترکان صید جان را  
که دانه خوشتن را در خدائی

مانند راستی و در راست با ندان  
و اگر چه روکش در ابرو و سحران را  
نباشد کس کز رویا بدر بائی

उन्मत्तप्रेमसंरम्भा दारभन्ते यदंगनाः  
तत्र प्रत्यहमाधातुं ब्रह्मा पिरवलुका  
तरः ॥ ५७ ॥

کنند از غمزه ادا در شباب  
چه طاقت که بر چه باشد باز پس

کنند وصل گردد بهر سبب مجاب  
که دل که دل بر بند از رخس

तावन्महत्वं पारिडित्यं कुलीनत्वं वि  
वेकिता ॥ यावज्ज्वलति नागेषु हतः  
पंचेषु पावकः ॥ ५८ ॥

تحمّل عور و مهت جاودانی  
که مار پنج سر آرد بر و طیش

بیاقت علمیت خوش خانم زانی  
مانند تا نگر و دش نعل عیش



ण्डितानां ॥ जघन मरुण रत्न ग्रंथिको  
ची कलापम् कुचलय नयनानां कोवि  
हातुं समर्थः ॥ ५६ ॥

ناید ترک گیر از بر چو کامل  
کند گیر در گوشت نشینان

از حافظ صاحب تقریر حاصل  
و سے مشکوٰۃ ترک نہ چینان

स्वपर प्रतारकोऽसौ निन्दति यो लोके  
पांडितो युवतीः यस्मात्तपसोऽपि फलं  
स्वर्गस्तस्यापि फलं तथा सरसः ॥ ५७ ॥

چه حاصل گفتن بد ما هر ویان  
بهشت هست و آنجا محل حور

کند هر کس بدست ما هر ویان  
چرا از فقر و زبرد است محل نور

मत्तेभकुम्भदलनेभुविसन्ति शूराः  
केचित्प्रचण्डभृगराजवधेऽपि दक्षाः  
किंतु ब्रवीमि वालिनां पुरतः प्रसह्यः  
कन्दर्पदपदलने विरला मनुष्याः ५८

توان کشتن شیر در یک زمان  
که نام آورد در جهان مرد را

توان فیل را کرد قاپو جوان  
و سے بکے شکل کشد نفس را

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति स नरस्ताप

<p>که ماند اندرین دنیا و پادشاه شود از محبت خود همچو پادشاه به پند از چه ناهینی و پند</p>	<p>بگویم بشنوا ای جان من این یکی باید زن خوش روجوان و یا باید کند گوشت نشینی</p>
---	--

सत्यं जनाद्यधिपक्षपातात् लोके  
षु सर्वेषु च तथ्यमेतत् ॥ नान्यन्मना  
हारि नितम्विनीभ्यो दुःखैक हेतुर्न  
च कश्चिदन्यः ॥ ५४ ॥

<p>نه جانب داری و نی از فریبم بغارت می برد از ذکر کردن نه بیند زن که در زن حیلندارست</p>	<p>بگویم راست بشنوا می عزیزم درین دنیا بجز زن نیست زین زن کسی که طالب حق راست بازست</p>
--	---

अथ दुर्विक्तप्रशंसा  
तावदेव कृतिनामपि स्फुरत्येष नि  
र्मलविवेकदीपकः ॥ यावदेव नकु  
रंगचक्षुषां ताडयते चपललोचना  
चलैः ॥ ५५ ॥

<p>نرا از تیغ آهوی چشم از کرد</p>	<p>شود روشن چراغ زاهدان حد</p>
-----------------------------------	--------------------------------

वचसि भवति सांगत्या मुद्दिश्य वा  
ता श्रुति सुखर सुखाना केवलं प

नारख्येयः स्फुरति हृदये कोऽपि महिमा

॥५१॥

بداندر فانی و بهر جا کند سیر  
و مگر مند و دل از حق در به بند  
نه طاقت گفتن حالت زنجان را

بطلب یکدیگر بطلب درین دیر  
بداندر لغو دل و درویشی نه مند  
نشود حال کند تسخیر دل را

भवन्तो वेदांतप्रणिहितधियामास  
गुरवो विदग्धालापानां वयमपि क  
वीनामनुचराः ॥ तथाप्येतद्भूमौ न  
हि परहितात्पुण्यमाधिकं नचास्मि  
च संसारे कुवलयदृशोरम्यमपरम्

॥५२॥

و ایمان پر شمع را علم ازوید  
آزان بتبرک سعد بنده می گذاری  
که و صابش نیاید لطف دیگر

شکایان واقفان علم جاوید  
همه آرزو کار از امید داری  
نباشد به زرن آرام دیگر

किमिह बहुभिरुक्तेर्युक्तिशून्यैः प्रला  
पैर ह्यमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनी  
यम् ॥ अभि नव मदलीलालालसं सु  
न्दरीणाम् स्तनभरपरिविन्नं यौवनं  
वाचनवा ॥५३॥

کند حرکات مشهورت خود با زن  
ز تیزی خویش عذاب اندر چه نقشش  
بوقت شوق سسکاریه بگیرد  
چو تشویره به پستانش نمودار  
خوشا زانکش بر دل زان ز مردی  
ز ناز امید بکسل از لب خویش

همان حرکات از باد است با زن  
بگیرد بوسه از رخ آن ز نقشش  
همان از کثرت سردی بگیرد  
از بین مالش به پستانش بدسکاری  
و بد مالش به نقشش پامی مشکلی  
پشمش است این به انقال لرزش

केशाना कलयन्द् शोभकलयन्वासो  
वलादाक्षिपन् आतन्वसुलकोज्जमं  
प्रकटयन्नालिंग्यकम्पञ्छने चार  
वार सुदारसीत्कृतकृतो दन्तच्छदान्  
पीडयन्प्रायः शोशिरणसं प्रतिमरु  
त्कांतासुकांतायते ॥५॥

چو مالک خانه با زن جفت باشد  
بگیرد پارچه از جبر بلبه تنگ  
و بد لرزانی و سسکاری بر بر  
نماید حرکتی بلبه خوف بلبه دب

بهواش شری ز لب بلبه باک باشد  
کشمه گیسو کند چنانش را تنگ  
و بد تشویره بگیرد و در برابر  
و بد دندان بدندان بر لبان لب

आसाराः सन्त्वेते विरति विरसायास  
विषया जुगुप्सन्तां यद्वा ननु सकल-  
दोषा स्पदमिति ॥ तथाप्यनस्तत्वे-  
प्राणिहितधियामप्यतिबलस्तदीयो

چوبرب لب آب تشنه میگردد / نه نوشد گر چه بر قسمت شمارند

हेमन्तदधिदुग्धसर्पिरशनामांजिष्ठ  
वासोभृतःकाश्मीरद्रवसान्द्रदिग्ध  
वपुषःखिन्नाधिचित्रै रतैः॥पीनो  
रस्थल कामिनीजनकताश्लेषागृहा  
भ्यन्तरम् तावृत्तीदलपूगप्ररितसु  
खाधन्याःसुरयशोरते॥४८॥

زرنگ قزمری پوشاک آراست  
ز انواع جام شد کسل در بر  
به قسمت در شود این جمله خوب  
نه خوف راقب و نی از یگان

خدا از روغن و از شیر جنات  
ز تشنه زعفرانی زیب بر سر  
و هن پر از تینول و لب مرغوب  
کند عیش طرب و ایم بخانه

अथशिशिरः

चुम्बन्तीगण्डभिन्नीरलकवतिसुरवे  
सीत्कृतान्पादधाना वक्षःसूक्तचुके  
षु स्तनभरपुलकोद्देदमायादयन्तः॥  
उरुनाकपयतःप्रयुजघनतदात्संस  
यन्तीसुकानि व्यक्तकांताजनानांवि  
टचरितकृतःशैशिरावांतिवाताः  
॥४९॥

दृशा गार्द समाहिं गते जाताः शीतल  
 श्रीकराश्च मरुतावान्यन्त खेदच्छि  
 दो धन्यानां वत दुर्दिनं सुदिनतां या  
 ति प्रिया संगमे ॥ ४६ ॥

نحو اب شوق با شود در کنارش  
 ز باد سرد چون با بد رهایی  
 رفع سردی شود هم لطف هم ذوق  
 که با بد لطف از دنیا و هم دین

به بالا خانه باد افشار بارش  
 نه طاقت خیزنه تاب جدائی  
 شود و پان زن خوش رو و شوق  
 به طالع و زیسر میشود این

### अथशरत्

अर्द्धनीत्वा निशायाः सरभससुरता  
 यासुरिवन्नश्लथांगः प्रोद्धतासद्य-  
 तृष्णामधुसुदनिरतो हर्म्यघृष्टे वि  
 विके ॥ संभोगकान्तकांता शिथिल  
 भुजलतातर्जितंकर्करीतो ज्योत्स्ना  
 भिन्नाच्छधारपिवतिनसलिलं शा  
 रदं मन्दभाषः ॥ ४७ ॥

به تنهایی به مهر و اهل خانه  
 ز حد کسل شد در جسم پیر مرد  
 که شد از شهوت و مستی چو زنجیر  
 تا میر بار داریه او به آخر

گذشته نصف شب بر بالا خانه  
 به شوق و صلح صل از شوق دل برد  
 ز بس از تشنگی با مرد محمود  
 زن استن چو شد زنجور آخر



इतो विध्वह्वी विलसितमितः केत  
 कितरोः स्फुरन्नन्धः प्रोद्यज्जलदनिन  
 दस्फूर्जितमितः ॥ इतः के कि कीडा  
 कलकलरवः पक्ष्मलदृशाम् कथं  
 यास्यन्त्येते विरह दिवसाः संभूतर  
 साः ॥४४॥

به کیسو بودر گل رعدو خوار  
 نه از طاووس حسن قاصان پرواز  
 نه از آمد چه از گرمی و سردی

به کیسو ابر برق انگن نمودار  
 نه ز پور خوش بواو نی ز آواز  
 زن کش شو بود در ره نوروی

असूची संसारे तमसि नभसि प्रौढ  
 जलद ध्वनि प्राप्ते तस्मिन् पतितह  
 षदो नार निचये ॥ इदं सौदामिन्याः  
 कनक कमनीयं विलसितं सुदच  
 म्ला निच प्रथयति पथि ध्वेव सुह  
 रा ॥४५॥

فغان رعد و برق بارش تهر  
 برو قیمت و دور افتاده دلریش

بماه تبر ابر تبر در دیر  
 خوشا خبر که در بر عاشق خویش

आसारेण न हर्म्यतः प्रियतमैर्यातुं  
 बहिः शक्यते शीतोत्कम्पनिमिलभापत



# हर्षम् ॥ ४१ ॥

<p>دوستان گزاشن تمتمه دیش نه چنیدن گل زمار بی مثالی</p>	<p>ز خواہش طبع شهوت زین مجش نہ باشد کس بہر ستم برنگالی</p>
---	--

वियदुपचितमेघभूमयःकन्दालिन्यो  
नवकुटजकंदवासोदिनो गन्धवाहाः  
शिखिकुलकलकेकारावरम्यः वना  
न्ताः सुखिनमसुखिनंवासर्वमुत्कंठ  
यन्ति ॥ ४२ ॥

<p>کوچ باد قدم خوشبوئی مندول کند اندوه از فرحت مبدل بر د آخر غریبان را به نخاس</p>	<p>ابر بر آسمان و در زمین غل دین خوبی و هم تازه کند دل بسا خوش است طاوسان را به</p>
--	---

उपरिधनं घनपटलं तिर्यगिरयोपि  
नर्तितमयूराः ॥ वसुधा कंदल धवला  
तुष्टिं पाथिकः कयातु संवत्तः ॥ ४३ ॥

<p>به جعد کوه طاوسان نمودار مسافر را خلد چون پای و در گل بدور افتادگان خالد بدل نیز</p>	<p>ز تار ابر شد بر آسمان تار ز زمین شد با غلابه یک در دل خوشا هر چیز لیکن شهوت انگیز</p>
---	--

किरणाः परागः कासारो मलयजरजः  
सीधुविशदम् भुविःसौधोत्संगः प्र  
तनुवसनपंकजदृशो निदाधेतृणं  
तत्सुरय सुख लभन्ते सुकृतिनः ३६॥

زنیلو فسر و خشک در راه  
خوشا هم مه جبین آراسته صاف  
چه دانه مفلس از گردن عیش

ز گل مالا و باد خوش شب ماه  
بهره صندل و بهتر مسکن صاف  
به تابستان ز قسمت میرسد عیش

सुधाभुम्भं धाम स्फुरद्मल्लराशिः श  
शधरः प्रियावक्राभोजं मलयजरज  
श्रुति सुरभि ॥ रजो हृद्यामोदास्त  
दिद मारयत्त रागिणि जने करोत्यन्तः  
स्वोभनतु विषयसं सर्गविमुखे ॥४०॥

بخوشبودار مالا مه رو هم راه  
به سوز اندر ناگهان اجسام  
که می بیند ز حق دنیا و هم دین

مسکن شفاف روشن در شب ماه  
بهره صندل و خوشبودار تمام  
کند کو ترک او را چون غلدا این

अथ वर्षा समयः

तरुणी चैषा दीपित कामा विकसि  
त जाती पुण्य सुगन्धिः उन्नत पीन  
पयोधरभारा प्रावृद्धकुरुते कस्य न

نمایان در جهان باد بهباری  
برو صرصر چه کنه بر شجر را

رفع سردی شد و آمد بهباری  
خزان را ببرد چون دزدان ز راه را

महकार कुसुम केसर निकर भरा मो  
द मूर्च्छित दिगन्ते ॥ मधुर मधु विधुर  
मधुये मधौ भवेत्कस्य नोत्कण्ठा ॥ ३७

خشب شیرین گل زو شد نهانی  
نمایان داغ از چشم کمانی  
که نماید شهوتش از گردن سیر

ز گل مولا معطر یک جهانی  
بشش پاپشت از زردی نشانی  
به این موهبم نباشد کس درین دیر

अथ ग्रीष्म वर्णान्

अच्छाच्छ चन्दन रसाद्र क रासुगा  
क्ष्यो धारा ग्रहाणि कुसुमानि च को  
सुदी च ॥ मन्दो मरुत्सु मनसः भु  
चि हर्म्यं घृष्टं ग्रीष्मे मदं च मदं  
च विवर्हयानि ॥ ३८ ॥

فواره در مکان آراسته او  
لنا و ماه شب هم باد موزو  
نه تا بد بهر شهوت کیست در دیر

ز مندل صاف سوده دست تراو  
بباغ و شبوز عطر و گل به سوز  
نشود بر قف بیند این چنین سیر

स्वजो हृद्यामोदा व्यजन पवनश्चन्द्र

आवासः किल किंच देव दयिता पा  
 र्थविलासालसः कर्णकोकिलका  
 कलीकलरवः स्मेरोलतामराद्वयः  
 गोष्ठी सत्काविभिः समं कतिपर्यैः  
 सेव्याः सितांशोः कराः केषाचित्सु  
 खयन्ति नेत्र हृदये चैत्रे विचित्राः  
 क्षयाः ॥३५॥

که داند ناز و عشوه مهیه چینی  
 و یا صحبت به ذی علماں بود خوب  
 بامه چیت از جنت برود بهیست  
 و یکه تکلیف دور افتادگان را

دیر آرام در بر تاز نیست  
 ز کویل خوش بود آواز مرغوب  
 خوش موسم بهار و ماه شب چیت  
 نماید خوش به جسم و دل و جان را

पान्थस्त्रीविरहानलाहुतिकलामा  
 नन्वतीमंजरी माकन्देषुपिकांगना  
 भिरधुनासोत्कठमालोक्यते ॥ प्रप्ये  
 तेनवपाटलापरिमलाः प्राग्भारपाट  
 चरा वातिल्लाति वितानतानवह  
 तः श्रीखड्डशैलानिलाः ॥३६॥

شود درنج و تعب بهم گریه زاری  
 سزد کویل برد چون لاله گل  
 بسنت آمد هوا شد خوشتر

زن ریز و راز در موسم بهاری  
 درختان راز نو برگ زرین گل  
 ز باد پا تل و خوشبو معطر

شیم مندل اور اتاد بہار	رن لورا بان حد می سز و ناز
------------------------	----------------------------

प्रथमस्तु वपानम्

तत्रादौ वसंतस्य

परिमल भूतो वाताः शारवानवां कुर  
कोटयो मधुर विरतात्कराठावाचः  
प्रियाः पिक पक्षिणाम् ॥ विरल सु  
रत स्वेदोद्गारावधू वदनेन्दयः प्रस  
रति मधोरात्र्यां जातौ न कस्य गुणोद  
यः ॥ ३३ ॥

به سناخ تو گل و برگ شجر بود  
غرق به ترنج ز گد می حسن افزون  
نباشد کس که دل از وی گمارد

به خوشبو معتدل باو سحر بود  
خوشا گویند خوشار و بهر چین بود  
به بار آمد بشهوت شهوت آرد

मधुरयं मधुरै रपि कोकिला कल  
कलै मलयस्य च वा युभिः ॥ विर  
हिणः प्रणिहान्ति शरीरिणो विष  
दि हन सुधापि विषायते ॥ ३४ ॥

پلاکت مید پرداز ترک و تازی  
نمیرد لیکه ماند پای و در گل  
حیات آب گرد و آب ماری

به صاحب شهوتان بهر موسم بهاری  
نماید مندل و آواز کو گل  
چه با کنگرس این که در موسم بهاری



دو کیدل را عجب لطف سال است | بیا لکس این بیره اتصال است

प्रणय मधुरः प्रेमोद्गाता रसादलसा  
स्तथा भणिति मधुरा मुग्ध प्रायाः प्र  
काशित समदाः ॥ प्रकृति सुभगा वि  
श्रम्भार्हाः स्मरोदयदायिना रहसिकि  
मपि स्थैरालापा हरन्ति मृगी दृशाम् ३०

پیشین لبهر و ناز و ادا  
بپیران هم دهر شهوت ز فریب  
به تا کمان رسد از شهوتش بار  
کرامت که آرد بر لب از آن

بآهوشم معشوق به تنه  
صفاتش را چه گویم خزان خوب  
پیشین گفتگو واقف از سرار  
تکلف بر طرف از راز نهان

आवासः क्रियतां गाङ्गे पापवारिणि  
वारिणी ॥ स्ननमध्ये तरुण्या या म  
नो हारिणि हारिणि ॥ ३१ ॥

بیرد از گنجه کهر و همت  
درون در میا سینه او نهانی

به آب گنگ بدون بکه پتیر  
و یا بادر بایست نوجوانی

प्रिय पुरतो युवती नो नावत्पद मात  
नोतु हृदि मानः ॥ भवति नयावच्चन्दन  
तरु सुरभिर्मधुसुनिर्मलः पवनः ॥ ३२ ॥

به قسمت و رسید لب از لبانش	نمایان عرق رخ شاید تکانش
<p>आमीलितनयनानांयः सुरतरसोऽनु  साविदंकुरुते मियुनैमिथोवधारि  तमवितथामिदमेवकामनिवर्हणम् २०</p>	
وصالش سید به سید گونه صد ذوق کند سیری به اشتق خوب مرغوب حیات از این به تن آب حیات است	خمار آلوده و شش چشمانش در شوق وصال او ندراق او به استغوب ندراق او و دو سو آب حیات است
<p>इदमनुचितमक्रमश्च पुंसां यदि  हजरास्वपिमान्मथा विकाराः ॥ तद  पिचनकृतं नितम्बिनीनाम् स्तनपत  नावधिजीवितं रतवा ॥ २१ ॥</p>	
و گز سید زن از وی که فریب فرود آید پستانش خزان بیان بفرد فیهان از راز این بس	به پیری پیرا شهوت نه زیب به شهوت مرد باید قادر انسان چو مرد و قبل از لطف وصالش
<p>एतत्काम फलं लोके यद्वयो चित्त  रेकता ॥ अन्य चित्त कृते कामे शव  यो रिव संगमः ॥ २२ ॥</p>	



प्राडभामेलिमनागमानितपुणजाताभि  
 लाषततः सन्नीडेतदनुश्चथोद्यतमनु  
 प्रत्यस्तथैर्यपुनः ॥ प्रेमाद्रस्मृहणीयनि  
 भर्हरहः क्रीडाप्रगल्भाततो निःशंकां  
 गविकर्षणादिकसुखंरम्यंकुलस्त्री-  
 रतम् ॥ २५ ॥

که در بر با بیاید خوب محبوب  
 و هم در حبش بود سیمین مقفل  
 دل بیزار بالا خسر بر دکار  
 بداند هر که داند خواہش دل  
 که ساقش ز دستش دست بسته  
 گره بسته کشاید هم به آخر  
 به حسن نیکوگر مشغول پرداخت

بخش نسلان زنان وصلت بسبب  
 چو آید پیش خوف از وصل اول  
 بشوق عشق او صبر ست و رکار  
 ترس شدم داد او خواہش دل  
 بسینه سینه از لب لب بسته  
 چو شد مشغول در وصالش به آخر  
 حجاب نو عروسی چون به برخواست

उरसिनिपतितानांस्त्रस्तधम्मिह्नुका  
 नां मुकलितनयनानां किचिदुन्मील  
 तानाम् ॥ सुरतजनितरेवदस्याईगाड  
 स्थलीना मधरमधुवधूनां भाग्यवतः  
 पिवाति ॥ २६ ॥

خوشامه و که گیسویش کشاده  
 تکان از خواہش وصالش فزوده

بسینه عاشق خود او فتاده  
 به چشم مست دل عاشق ربوده

रयन्तीशशिनोमयूरवान् ॥२२॥

بزرگ شجر نو بسته دل خویش  
ز چادر سینه ز دست و از آه  
دلش بے تاب چون آتش در

کسی نو عمر طالب عاشق خویش  
نشیند ایستد بیند رخ ماه  
شعاع ماه را را ندر زپ در

अदर्शने दर्शन मान कामा दृष्ट्यापि  
व्यंगरसे कलौभा ॥ आलिं गितायां पु  
नरायताक्ष्मा माशास्महे विग्रह योर  
भेदम् ॥२३॥

چو دیدش روز وصل را شمارد  
صدا مکناد یا رب ما را زمین تن

نزدیده خواہش دیدار دارد  
چو وصلش شد بیاید در دل این

मालतीशिरसिज्जम्भणोत्सुखी ॥ चन्द  
नंवप्राधिकुंकुमान्वितम् ॥ वक्षसि-  
प्रियतमामना हरास्वर्गाय परिशिष्ट  
आगतः ॥२४॥

بزلطف عنبرین مار و دوسر بود  
ز پستانش معطر خا رود در دل  
نشان آرام جنبست در جهان اند

سبز از مالتی گلها سبک بود  
به سوده ز عنبران و عطر و سندل  
سزد گویم که حوران بهشت اند

کلیدش لال طراز کان بسین  
که تا مهر و پرو آید ز دل یاتر  
که لطف اندرو نی بر ندارد

چون نقش پای آید در سج سین  
و سیه باید که لال تر گران بار  
ز دست خویش بر در جش بدار

मुखेन चंद्रकानेन महा नीले शि  
रो रुहे ॥ पाणिभ्यां पद्मरागाभ्यां रे  
जेरत्नमयीवसा ॥ ३० ॥

کف پایش چو گل نیلو فری بود  
بگویم کمان جواهر تا چه منت

زخس چون ماه جیدش عنبری بود  
نمایان بود چون حوران چنبت

समो हयन्ति मदयन्ति विडम्बयन्ति  
निर्मत्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति ।  
एता प्रविश्य सदय हृदय नराणाम्  
किं नाम वाम नयनान समा चरन्ति ३१

کندهوش بید تفریش نباید  
کمان چشمش به خال در دل تنگ  
زنان کردار سازد گردنیها

کندهاقل و هم بدست سازد  
به شادی شاد و در سختی برزنگ  
رود در دل کند ناگردنیها

विष्मय विष्मय वन दुमाणाम् ॥  
छाया सुतन्वी विच चारकाचित् ॥  
स्तनो नरीयेण करो हृत्तेन निवा

دلاگر خواہش پستان سیمین تو داری خواہش زنج حوروش را تو بیانی از ریاضت خواہش دل	دورانش کیلہ سان باخام سیمین ریاضت کن کن کہ بیانی حاصلش را ز نیکی میرسد برخواہش دل
---	---

मात्सर्यमुत्सार्यविचार्यकार्यमार्थः  
समर्यादमिदंवदन्तु ॥ सेव्या नित  
म्वाः किल भूधराणां मुतस्मरस्मेर  
विलासिनीनाम् ॥ १९ ॥

بلا ریب وریا از کا ملان ہند مشوم عارف گنم گوشہ نشینی	ہی پرسم ز انصاف پے بند ویا با ماہر و پوسہ گزینی
---	--

संसारेऽस्मिन् सारे परिणतितरले  
द्वेगती परिडनानाम् तत्त्वज्ञानाम्  
ताम्भः स्तुतललितधिया यातु कालः  
कदाचित् ॥ नोचे न्मुग्धाङ्गनानां  
स्तनजघनभराभोगसंभोगीनाम्  
स्थूलोयस्थस्थलीषुस्थगितकर  
तत्तस्य शीलोलोद्यतानाम् ॥ १९ ॥

درین تاپا پیدار ویر ویرین شنا شد حق و یا بد حاصل او مگر حاصل نہ باشد این ز تقدیر	بیاب از قحطان و ویا و گار این ز صحبت نیک باشد غا سل او شود وایل بہ پستان زان و تدبیر
--	--

पमधिकं रोमावलीकेनसा ॥१५॥

<p>روان چشمانش بروشلی خنجر          کند شرمندگیسولیل تاریک          چه باشد باک ماهم جان نثارند          نوشته بر جبینت عصمتی بر          که بر برگ سمن چون عنبرین است          نمیدانم چه در انجیدی از من</p>	<p>ز پستان مدور بار در بر          لبان چون غنچه گل سرخ است و بار یک          رشوق عشق تو مارا چو مارا اند          وسیله بر تو کماندار شکل تر          نمایان نقش پا ز آهوی می چین است          ازین رویح نماید کار از من</p>
--	--

गुरुणा स्तन भारेण मुख चंद्रेण भा  
 स्वता ॥ शनैश्चराभ्या पादाभ्यां रेजेग्रहमयी  
 वसा ॥१६॥

<p>نمایان بدر رخ بهتر ز بس          و در رونق به این هر سه ز گفتار</p>	<p>ز بار سینه مرشد مشتری شد          چو فیصل مست یا چون زحل ز گفتار</p>
--	---

तस्याः स्तनौ यदि घनौ जघनं वि  
 हारि वक्रं च चारु तव चित्त कि  
 मा कुलत्वम् ॥ पुराणं कुरुष्व य  
 दि तेषु तवा स्ति वाञ्छा पुष्ये र्विना  
 नाहि भवान्ति समी हितार्थाः ॥ १७ ॥

कुम्भ द्वय मित्यु तन्निवपुः प्रशांत मपि  
नैस्सोभं करोत्येव नः ॥१२॥

زردندان سلک شرمندہ بہ نژاد  
ہمگیر دول انسان نادان

پیش بندگی کیسویں چشم غلزار  
چشم سبیح است از کوزہ بہستان

मुग्धे धानुष्कता केयमपूर्वात्वयि  
दृश्यते ॥ यथा हरसि चेतोसि गुणै  
रेव न सायकैः ॥१३॥

کہ می گیری دل انسان چہ بی سوزہ

کمان ابرو را گفتمہ کای دل افروز

सति प्रदीपे सत्यग्नौ सत्सु तारा रवीं  
दृषु ॥ विना मे मृग शाबा द्या तसो  
भूतमिदं जगत् ॥१४॥

سہ تار کی مشوق رخ ماہ

بماند شمع یا آتش و یا ماہ

यद्वत्तः स्तनभार एष तरले नेत्रे चले  
भ्रूलते रागान्धेषु तदोष्ट पल्लव मि  
दं कुर्वन्ति ना मव्ययो ॥ सौभाग्या  
क्षर पंक्ति रेव लिखिता पुण्या यु  
धेन स्वयम् मध्यस्यापि करोति ता



<p>زسوده زعفران بالیده تن او دوستانش چو سیتی خام زیبا فغان خنجال ول عاشق ربوده</p>	<p>فقاوه بر دلف تیر نظیر او به لرزان بار زیر هر کس دیبا نه بوده هر کرا بوده ر بوده</p>
--	--

चून हिते कवि वरा विपरीत बोधा ये  
नित्य माहुर चला इति कामिनी नाम्  
॥ याभि विलोल तर तारक दृष्टि पातेः  
शक्ता दयोपि विजिता स्व चलाः क  
थंताः ॥१०॥

<p>سزدگویم اگر بر شاعران هند چه نسبت پہلوان ز عارف انسان</p>	<p>که گوید زن را ابله چون خردمند کند تسخیر در یکدم ز دیوان</p>
--	--

चून माज्ञा करस्तस्याः सुभुवोमक  
र ध्वजः ॥ यत स्त नेत्र संचार सूचि  
तेषु प्रवर्तते ॥११॥

<p>خدیگ نازکش را تیز باشد</p>	<p>غلام او به دل گل نیز باشد</p>
-------------------------------	----------------------------------

केशाः संयमिनः श्रुते रपि परं पारं  
गते लोचने अन्तर्वक्त्र मपि स्वभाव  
शुचिभिः कीर्णं द्विजानां गणैः सुक्ता  
ना सतता धि वास रुचिरं वक्षोज-



स्वाधेषु तदोष पश्यव रसः स्मृयेषु  
 किं तत्तनुः ध्येयं किं नवयोवनसुहृ  
 दयेः सर्वत्र ताहि भमः ॥७॥

بخ مشوق خوش هم چشم مرغوب  
 به بشنیدن بود خوش بولب و  
 تصور از جوانی مهر لبش

انگاہ به عاشقان را چیت مرغوب  
 به بو شنیدن بود خوش بولب و  
 مذاق و لمس از بوسه نساش

एताः स्वलद्वलयसंहतिमेखलो  
 त्यभंकार नूपुरवाहत राजहंस्यः  
 कुर्वन्ति कस्यन मनो विवशं तरु  
 एयो विचस्स मुग्ध हरिणी सहशैः  
 कटाक्षैः ॥८॥

بخش آوازی خلخال نازد  
 چشم ناز آورده نستان  
 زده تا مهر گیرد کندش

ز به راهم میان زیور و بازو  
 کند شرمنداده راجه نستان  
 نباشد کس که ناید در کندش

कुंकुम पंक कलंकित देहा गौर  
 पयो धर कम्पित हारा ॥ नूपुर  
 हंस रणत्पद पसा कंनवशीकु  
 रुते भुविरामा ॥९॥

यः ॥ वक्षो जा विभ कुंभ सभ्रमहरो  
गुर्वी नितव स्थली वाचा हारिच मा  
द्वेय युवति पुस्वामा विकं मेडन ॥५॥

لاش همچو زر بل بهتر و زار  
شده شمر شده در بانگات سنبل  
نخواه گر ز سینه خویش تشیل  
مثالش نیست مثلی از که گویم  
شکر خارا بجا گرد و دل ریش

مهر و جسم نازک چشم غلزار  
چه نسبت مار و شمش پारा ز کاسل  
چه نسبت ناز و از سر فیل  
سرخش را به ترمی از که گویم  
نماید در جوانی و زتن خویش

स्मित किञ्चिद्वक्त्रे सरल तरलो दृष्टि  
विभवः परित्यन्दो वाचा मभिनव  
विलासोक्ति सरसः ॥ गतीना मारम्भः  
किस लयित लीला परिकरः स्पृशत्या  
स्मारण्यं किमिह न हिरण्यं मगह  
शः ॥६॥

ادا و ناز و هم نطفه نهانی  
نماید خویشتن را در جهان فرد

جوانی خورده را شیرین بایانی  
بود مشتاق بر گیر و دل مسرد

द्रष्टव्येषु किमुत्तमं मृगादृशां प्रेम प्र  
सन्नं मुरवं घ्रातव्ये व्यपि किं तदास्य  
पवनः श्राव्येषु किं तद्वचः ॥ किं-

भूचातुर्याकचिताक्षाः कटाक्षाः स्नि  
ग्धावा चालजिताश्चवहासाः ॥ ली  
लामन्दप्रस्थितंचस्थितंचस्त्रीणा  
मेतद्भूषणंचायुधंच ॥ ३॥

زیر آزل گشت مشتاق بیز  
برفتار شد عاشق آزل قدا  
زنان را سلا ح انداز ناز و فن

ز ابرو کمان چون نگه کرد غیر  
همیشه شکر لب ز شرم و ادا  
نشستن و رفتار چون شیر زن

क्वचित्सुभ्रभंगैः क्वचिदपिचलज्जा  
परिणतैः क्वचिद्वीतित्रसैः क्वचिद  
पिचलीलाविलसितैः ॥ नवौदाना  
मेभिर्वदन कमलैर्नेत्रचलितैः स्फु  
रन्नीलाञ्जानांप्रकरपरिपूर्णा इव  
दृशः ॥ ४॥

ناید خوشیتن را افسون انداز  
ز چشمانش به معنوه یا فتر قدر  
خوشا باشد عروس خوشبایش

عروس نوز جسم شرم انداز  
چنین مهربان رخشان چون بدر  
خوشا رومی و خوشا ناز و ادایش

वक्त्रं चन्द्रविकासि पङ्कज परीहा  
सक्षमे लोचने वर्णः स्वर्णमया क  
रिष्णु रत्निनीजिष्णुः कचाना च

श्रीगणेशायनमः॥

अथ शृंगार शतकं प्रारभ्यते

शोभुस्वयंभुहरयोहरिणोक्षणा नाम् ॥

येनाक्रियन्तसततं गृहकर्मदासाः ॥

वाचामगोचरचरित्रविचित्रताय ॥

तस्मै नमो भगवते कसुमायुधाय ॥१॥

چه ذکر از گفتن انسان تا کام  
که دارد بشنویر بهما هم پورای  
پذیرفتن بود فرمان او بیش  
رباید دل ز دوست پارسا با  
ز گل دارد سحران سخن دل با

چو بر بهایشن شب شد تاب کام  
به غیر از زن نه رسید خانه داری  
به زن گویند صاحب خانه خویش  
به شیرین گفتگو تا زود ادا  
کنم سجده بان دادار دل با

स्मितेनभावेनचलज्जयाभिया पराङ्

मुखैरर्द्धकटाक्षवीक्षणैः ॥ वचोभिरी

ष्याकलहेनलीलया समस्त भावैः ख

लुब्धनस्त्रियः ॥२॥

چو ترسان غزاله نظر بندگی  
نخسیده نظر ترش رود لرز  
رباید دل تا بدان راز حبیب

زن از واد او شکر خندگی  
ز گوهر فشانی و شرم و حیا  
به لب و غضب دل را باو فریب

A decorative rectangular border with ornate floral and scrollwork designs at the corners and midpoints.

अथशृंगारशतक

प्रारम्भः

त्यायते तत्क्षणात् मेरुः स्वल्पशि  
 लायते मृगापतिः सद्यः कुरंगायते  
 ॥ व्यालो मात्यगुणायते विषरसः  
 पीयूषवर्षायते यस्यांगेऽखिललो  
 कवत्त्रभतमं शलिसमुन्मीलति ११०॥

بہ گرد و پیش و آتش جو گل نیک  
 شود کوہے گران چون ریزہ کوہے  
 شود مار جو گل تبیح صحر  
 شود انہیا ہمہ در پیش اصحاب

خوشا جسمی کہ پراز خصلت نیک  
 شود دریا چو آب خوردہ جوئی  
 شود شیر دمان آہوے صحر  
 شود زیر لایل چون حیات آب

लज्जागुणौ घजननीं जननीमिव  
 स्वा मन्त्यन्त भुद्धहृदयामनुवर्त  
 मानाम् ॥ नृजस्विनः सुखमसूनु  
 पिसंत्यजन्ति सत्यवृत्तव्यसनिनी  
 नपुनः प्रतिज्ञाम् ॥ १११॥

چو مادر مہربان کوئے نر اید  
 زید پاکے بہیر و جان بہ یکدم  
 رساند و عدہ را از مہر و از قہر

صفات شرم را کوئے فر اید  
 کند وعد و فاساد و ہمان دم  
 باین اوصاف کم باشند درین دیر

इति नीतशतकम्



स्वायातिकदाचिदेव ॥ १०७ ॥

نه گز دوز نيك كشتن شناس  
و نه شعله سرب پر دهن بر نه

چو افتد برنج و الم حق شناس  
چو آتش كد اورا بنزين نهند

कान्ताकटाक्षविशिखानदहन्ति  
यस्य चित्तेनानिर्दहति कोपकशा  
चुतापः ॥ कर्षतिभूरिविषयाश्च न  
लोभयाशौ लोकित्रयंजयति क्लृप्त  
मिदं सधीरः ॥ १०८ ॥

چو بس نه افتد بر و نه زين  
نه گير دهب و نه خوش شمشير  
بگيرد گيهان ز بهت رسا

و نه كوز تير نگيرد نازين  
نه سوزد باو آتش شمشير  
شود عابد و زاهد و پارسا

एकेनापि हि शूरेण पादाकान्तं स  
होतुलसु ॥ क्रियते भास्करेणैव परि  
स्फुरित तेजसा ॥ १०९ ॥

به فرمان از ماه و ماهی بود  
ز اقبال گردد به شاهی نشان

چو اقبال پا و ربه شاهی بود  
چو خور گو به گيرد به بيند جهان

वह्निस्तस्य जलायते जलानिधिः कु



زن کو جان نثار داز پسے شو  
چه آرام ست ترک از سینه بهتر  
که سازد هر کس و ناکس به تعبیل

عزیز از جان چه باشد اندین جو  
چه دولت در جهان از علم بهتر  
به شاهی چیت نورا حکم تمیل

मालतीकुसुमस्येवद्देगतीहमनस्वि  
नः॥मूर्ध्निवासर्वलोकस्यशीर्यते  
चनराधवा॥१९५॥

به یقند در بیایان یا بر دیر  
به فرق مردمان یا پاسه در گمل

به گرد بدرد و خود سر درین دیر  
به اراد خاصیت چون مالتی گمل

अप्रियवचनदरिद्रेः प्रियवचना  
त्यैः स्वदारपरतुष्टैः॥ परपरिवाद  
निवृत्तैः क्वचित्क्वचिन्मंडितावसुधाः  
॥१९६॥

و دارد به شکر فانی و فور  
به صحبت زن خوش و هم گفته سنج  
به شکل بیانی با این خوشه

شود هر که از تلخ گوسه نفور  
از گفتار شیرین دل خلق سنج  
به شنو و زکس گفتن برک

कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्ते न शि  
क्यते धैर्यगुणः प्रमाद्युम् ॥ अधो  
सुरवस्यापि कृतस्य वन्दे न धः शि

<p>کشد غواصی یا بر کوه پرو تجارت هر قسم با علم یا فن شود ممکن و نه از کمال تقدیر</p>	<p>پس فتح عدو در جنگ پرو پیریدن بر ملک از باد بین نه گردد و پیش و کم از کمال تقدیر</p>
--	--

भीमं वनं भवति तस्य पुरं प्रधानं सर्वो  
जनः सुजनतामुपयाति तस्य कृत्स्ना  
च भू भवति सन्निधि रत्न पूर्णा यस्या  
स्ति पूर्व सुकृतं विपुलं नरस्य ॥ १०३ ॥

<p>به چشم اول او شد نزدیک کردار از بین شکر با و گذر رگزد به چشم عالمان ممتاز نگردد</p>	<p>شود جنگل با و شهر گه بار به بیند هر گه ارجان باز گردد نشیند هر گه در بار گردد</p>
--	--

कीलाभोगुणसंगमः किमु सुखं प्राप्नोत  
रैः संगतिः काहानिः समयच्युतिनि  
पुणताकाधर्मतत्त्वरतिः ॥ कः भूगो  
विजितेन्द्रियः प्रियतमाकानुव्रता किं  
धनं विद्या किं सुखमप्रवासगमनं  
राज्यं किमाज्ञाफलम् ॥ १०४ ॥

<p>صحبت علماست دولت در جهان چه نقصان است وقت رایگان قرب دلاور گیت کو دارد به خود ضبط</p>	<p>صحبت جهلاست رنج در جهان عقل مند نیست دیدن حق حق حرف از نفس بگندد ریاء حق ربط</p>
--	---

کہ از نیک و بد فہد انجام کار  
خلد غار نامرگ در زیستن

بد انا سر وقت افتاح کار  
کند گزرا تا ہمے خوشتن

स्थाल्यां विदूर्यमप्यापचतिचलश  
नंचंदनैरिधनोधैः सौवर्णलंगला  
श्रैर्विलखतिवसुधामर्कमूलस्यहे  
ताः ॥ छित्वा कपूरखडान्घातिमिह  
कुरुतेकोद्रवाणांसमंतात् प्राप्ये  
मां कर्मभूमिनचरतिमनुजायस्यो  
मन्दभायः ॥ १०१ ॥

ز صندل کند بیمه با سوخت نیز  
کند شجر کافور را از زمین  
نه دانزد احوال اصلی به او  
چه از جسم انسان ناز و نیاز

نه قاب مرصع و هر طبع سیر  
ز قلبه طلائی نشان بر زمین  
حفاظت کند کدورم را از و  
نه در یاد حق و نه محنت ریاض

मज्जत्वं भसियातु मेरुशिखरं शत्रू  
नृजयत्वा हवे वाणिज्यं कृषिसेव  
नादिसकला विद्याः कलाः शिष्यतु  
आकाशं विपुलं प्रयातु खगवत्क्वा  
त्वा प्रयत्नं परं नाभाव्य भवतीह क  
र्मवशतो भाव्यस्य नाशः कुतः ॥

॥ १०२ ॥

بہ جنگ و بہ صمد اور آب نیز  
جسندہ جمد کوہ گران  
حافظ شود نیک کردار او

بہ دشمن بہ انگریہ دریا سے نیز  
بے حفظ از دار بازان جهان  
کہ کردست در اولین بار او

यासाधूंश्चखलान्करोतिविदुषोसू  
खान्हितान्द्वेषिणःप्रत्यक्षंकुरुते  
परोक्षममृतंहालाहलंनत्क्षणा  
त् ॥ नामाराधयसक्तियांभगव  
तौभोक्तुंफलंवाञ्छितंहेसाधोव्य  
सनैर्गुणेषुविपुलेष्वस्थां वृथा मा  
कथाः॥८६॥

گرفتن رہے نیک دارد اثر  
بہ جہل و بہ صحبت عالمان  
اگر نہ پراشتند آب حیات  
از اسرار مخفی کنند آشکار  
اگر طلبہ راستی صادق

بدان را رساند ز نیکی شمر  
کہ دشمن شود دوست در جهان  
شود در می بہجو آب حیات  
کند خواہش نیک انجام کار  
ز صحبت رسد راستی صادق

गुणवद्गुणवद्वाकुर्वताकार्यमा  
दौ परिणतिरवधार्यायत्नतःपंडि  
तेन ॥ अतिरभसक्तानांकर्मणामा  
विपत्तेर्भवतिहृदयदाहीशल्यतुल्यो  
विपाकः॥१००॥

सूर्योभाष्यतिनित्यमेवगगनेतस्मै  
मः कर्मणे ॥८६॥

به داد او به بشنوب صاحب حال  
ترجم کند بر دل خلق ریش  
گدائی به بشیو کرد او پیش را  
زما سجده کردار را سال و ماه

از کردار بر ما به بشد چون کلال  
که طلبه بگیرد نده شکل خویش  
چهار او به کلیم او بشن را  
تین بپوشش مهر و ماه

नैवाकृतिः फलतिनैवकुलंनशीलं  
विद्यापिनैवनचयत्नकृताचसेवा॥  
भाग्यानिपूर्वतपसाखलुसंचितानि  
कालेफलतिपुरुषस्ययथैववृक्षाः  
॥८७॥

نه علم و نه خوشش خود وصف عجیب  
وید بر که در سالقین و شست چشم  
ز قسمت رسد مرد را بهم بچار

نه صورت وید بر نه ذات بخیب  
نه خدمت زمر شد ریاضت نه هم  
و نه خنیکه بر میدد در بهار

वनेरणो शत्रुजलाग्निमध्येमहार्ण  
वेपर्वतमस्तकेवा ॥ सुप्तं प्रमुचं वि  
षमस्थितवारक्षन्निपुणयानिपुण  
कृतानि ॥८८॥

<p>که به برگ شد اصلیت او بیل گناهی چه از خور چه از نور چشم نه آید بسوی قسره زلال که با شش بهفتا نذر او بیدریغ نگردد کم و بیش از نکته حرف</p>	<p>بهار از نیار و بهر گ کری نه بیند اگر بوم در روز چشم چو سیر آب شد در جهان برشمال گناهی چه باشد از نیها به یمن چو کلب قضا کرد و تر قیم حرف</p>
--	---

**अथ कर्म प्रशंसा ॥**  
**नमस्यामो देवाननुहतविधेस्तेष्विव**  
**श गाः विधिवैद्यः सोऽपि प्रतिनियतक**  
**र्मैकफलदः ॥ फलं कस्मायनं किम्**  
**मरगणैः किंचि विधिना नमस्तत्कर्म**  
**भ्यो विधिरपि नयेभ्यः प्रभवति ॥ ८३ ॥**

<p>چو اینها شوند تابع رهنما عبث سجده مایا دشان نیست و نه او نه خود رهنما ماستود تلافی شود حسب کردار ما بکبردار سودیم سر بر زمین</p>	<p>به پیغمبران سجده باشد زما بخود طاقت بخشش و حکم نیست اگر سجده واجب به برهما شود و بدار او خبر حسب کردار ما از ان رو بجا واجب آمدن</p>
---	---

**ब्रह्मायेन कुलालवन्नियमितो ब्रह्मां**  
**डभाडोदरं विष्णुर्येन दशावतारग**  
**हने क्षिप्तो महासंकटे ॥ रुद्रायेन क**  
**पालपाणिपुटके भिक्षादनं कारितः**



शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं गजभु  
जंगमयोरपि वधनम् ॥ सति सताच  
विलोक्य दारिद्र्यतां विधिरहो बल  
वानिति मेमतिः ॥ ८२ ॥

کسوف و خسوف هر دو به راجع تریانی  
همی خواهد کند هر پنجشنبه را بکار داریانی

همی بینیم بار و قبل را و قید انسانی  
به دانا عالم و فاضل زگر سنگی پریشانی

सजतितावदशेषगुणाकरं पुरुष  
रत्नमूलं करणं भुवः ॥ तदपि तत्स  
णभागी करोति च दहह कष्टमपदि  
न ता विधेः ॥ ८३ ॥

به انسان هنر عقل پیدا کند  
و له میرسد از قضا بزرین  
که در دم بهاد و فساد رو بداد

چو جان آفرین جان پیدا کند  
فشو در نقش در بساط زمین  
تعجب چرا این فضیلت بداد

यन्नैव यदा करीर विटपे दोषो व  
संतस्य किं नो लूकोऽप्यवलोकते  
यादि दिवा सूर्यस्य किं दूषणं धारा  
नैव पतंति चातकसुरवे मेघस्य किं दूष  
णं यत्पूर्वो विधिना ललाटलिखितं तन्मा  
जितुं कः क्षमः ॥ ८४ ॥



<p>سپاہ و فوج ادازدیو خاصان          بهشتی مسکن او فیصل پراق          جو راجہ بل علاوت ساخت بااد          بہ این مضبوطی و سامان لغت          ازین رو قدرت حق شد نمودار          بخدمت رب باید شد ادبولن</p>	<p>نہ گزرد در حصار او کس آسان          بدولت طاقت یکتای او راق          بہ بین در لمحہ قابو ساخت بااد          بہ این خود بینی و اسباب لغت          کہ سازد انجمن پیخواہد بہ یکبارہ          کز و ہر وقت ممکن شد ادبولن</p>
---	---

कर्मयत्ने फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी ॥ तथापि सुधिया भाव्यं सुविचार्यैव कर्तव्यं ॥ ८७ ॥

<p>اگر چہ اسد حسب اعمال اجر          دے دل پئے نیک اعمال بہ</p>	<p>و ہم عقل باید از و نیک نجر          کہ از کار نیکست اعمال بہ</p>
---	---

स्वत्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणैः  
 संतापितो मस्तके ॥ वाक्छन्दः शमना  
 तपा विधिवसात्तालस्य मूलगतः  
 तत्राप्यस्य महाफले न पतताम  
 न सशब्दा शिरः ॥ प्रायोगच्छति यव  
 भाग्यराहितस्तत्रैव यांत्यां पदः ॥ ८८ ॥

<p>جو کل از تاب قمری بیرو و سایہ شجری          بہ بین کل از پئے تسکین دل فتنہ زیراؤ</p>	<p>ز بہ قیمت کلمہ کل فتنہ شری کلان شجری          دے بہ قیمت کل را سبر کل میدہا جری</p>
---	--

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो मृ  
हान् रिपुः ॥ नास्त्युद्यमसमो बंधुर्य  
कृत्वा नावसीदति ॥ ८७ ॥

میان بستن ہے از قوت برادر به نهان تو

جهن کابل وجود می دشمنیت درین نهان تو

छिन्नोपि रोहति तरुः क्षीणोऽप्यु  
पचीयते चन्द्रः ॥ इति विमृशंतः स  
तः संतप्यते न विद्वता लोके ॥ ८८ ॥

پنفلش شبیه رسد کیس زرد  
ازین نقل گیرند می احترام  
نرا نذر تکلیف راحت بهمان

درو شد شجر باز آرد شتر  
و ما به کم و بیش گرد و دمام  
و نه رحمتی حق شناس جهان

अथ दैवप्रशंसा ॥  
नेतायस्य बृहस्पतिः प्रहरणं च ज  
सुराः सैनिकाः स्वर्गादुर्गमनिग्रहः कि  
ल हरे रैरावतो वारणाः इत्यैश्वर्यव  
लान्वितोऽपि बलिभिर्भग्नः परैः संगरे  
तद्वक्तव्यमेव दैवशरणं धिग्धिगु  
था पौरुषम् ॥ ८९ ॥

بریت هر شد و گزیر گرانے

به اندر آنکه باشد رازدانی

کے کو صاحب انصاف باشد وہ اور اگر گرفتاروں خزینه تفسیر برسد یا زندہ ماند	ہر کس یک یا ہشتام باشد وہ محتاج از نان شبینہ وہ پا از عد انصافے نرا نر
---	--

भगनाशस्य करंडपीडिततनो र्मर्ता  
नैद्रियस्य कृधा कृत्वा खुर्विवर  
स्वयनिपतिलोनक्तं मुखे भोगिनिः  
वृषस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेन  
वयातः यथा लोकाः पश्यत देव  
मेवाहि नृणां वृद्धी क्षये कारणम् ॥  
॥ ८५ ॥

چو مار گرسنه در قید باشد بگره دوتا توان گزور از حد ترا شد موش بند او که نادان بجان ره باشدش آزاد بودن	و بند او بجانہ بید باشد وہ رازق وید روزی باشد وید ہمون زرقیت ہر گرسنہ آن بدست کبریا کہ زیادہ بدن
--	---

पाति तोपिकरा घातैरुत्प त त्येव  
कंदुकः ॥ प्रायेण साधु चत्तानां म  
स्थायिन्यो विपत्तयः ॥ ८६ ॥

نہ دھتیکہ انگند گو بر زمین کسا نیکہ نیک اندیشی شمار	بہ چند سئے رفتن برترین نہ رنجند از آفت روزگار
--	--

گه برگ شبر گاه به برنج و طعمها خوشتر  
گه پوشم ز جبهه یا لیا سس ز رو شایان  
گذارم برنج در احست را بدل یکسان بجا بهتر

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौ-  
र्यस्य वाक्सं यमो ज्ञानस्योपशमः  
श्रुतस्य विनयो विनस्य पात्रे व्ययः  
शुक्रो धस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्ध-  
र्मस्य निर्व्याजता सर्वेषामपि सर्व-  
कारणमिदं शीलं परं भूषणम्  
॥ ८३ ॥

مردان که گفتن ز خود در کلام  
به نیکان جو مهر به طبع حلیم  
فقیران را غصه بیا بد گذار  
به پاکان سز و صفایت برآ  
اگر عاقلی آنکس آری بدار

تو اضع به شایان نرسید بدام  
به علما هست جو مهر ز طبع سلیم  
به خیرات از مرد با پیش ناخت  
بحاکم سز و خمی اقصاف رست  
به پابند به نرسید استوار

निदं तु नीतिनिपुणाय दिवास्तु वं तु  
लक्ष्मीसमाविशतु गच्छतु वा यथ-  
ष्टम् ॥ अथैव वामरणमस्तु युगांत-  
रे वा न्याय्यात्यथः प्राविचलंति प-  
दं नधीराः ॥ ८४ ॥

کراہو برسد عندل دین شد ہمد  
کہ سازد چو خود در دستہ لاکلام

ترنوب و کیول و منیل و ہم  
بہ خالصان حق خلود این مرام

### अथ धैर्यप्रशंसा

स्त्वैर्महाहैस्तुतुषुर्नदेवानभेजिरेभी  
माविषेणभीति ॥ सुधांविनानप्रययु  
विरामंननिश्चितायाहिरमंतिधीराः  
॥ ८१ ॥

نہ کردہ ترک سودن بہر بر حاصل جاہر و زر  
نہ کردہ ترک از بہیت ہلاہل بود کو جان بہر  
میان بستہ جو بہر یافتن آب حیات از وسے  
گرفت آب حیاتے را میان بستہ فزون بتر

क्वचिद्भूमौशय्याक्वचिदपिचय  
य्यंकशयनंक्वचिच्छाकाहारः  
क्वचिदपिचशाल्यादनरुचिः ॥  
क्वचित्कंयाधारीक्वचिदपिचदि  
व्यांवरधरोमनस्वीकार्यार्थीन  
गणयतिदुःखंतचसुखम् ॥ ८२ ॥

گنجے عریان خیم بر زمین یا بر پلنگ بہتر

سجده برت بزرگمان دل خدا کن  
نما خویشتن را اطاعت به خو  
بابین خود بود نام از تو بقا

نگو راست خدمت به خدا کن  
سجده برت به علمان مدارا عدو  
ترجم به غر با به جود و سخا

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपू  
र्णास्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्री  
णयंतः परगुणपरमाणुपर्वतीक  
ृत्यानित्यं निजहृदिविकसेतः सतिसं  
तः कियंतः ॥ ७४ ॥

کند خوی خود را اسلایه عجز  
بوصف کسان باش آزاد دل  
چو هستند بسیار کم از کم اند

زبان و دل و جسم ن بزر عجز  
به بهیو دے خلق کن نشا دول  
به سیرت همین حق شناسان کم اند

किंतेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा  
यवाश्रिताश्च तस्त्वस्तरवश्चाव ॥  
मन्यामहमलयमवयदाश्रयेण ॥  
ककालनिवकुटजाप्रपिचदना  
स्युः ॥ ८१ ॥

و کیلاش از نقره شد بر زمین  
نروید شخ سیم از دانه شر  
که از بوی او زار صندل شود

سمیرست یک کوه زر بر زمین  
نباشد نیروش شجر هم زر  
به ملیا گرامین خوی ذائقه بود



برون آرد سرخو دراز بے تاب  
نشیند منشین بیند چو با هم

چو داند شیر شد ضیاع از آفتاب  
بپاشد بر سر شیر آب آندم

इतः स्वपितिकेशवः कुलमितस्तदी  
याद्विषामितश्च शरणार्थिनः शिरवार  
णांगणाः शरते ॥ इतोपि चट्टवान  
लः सहसमस्तसम्बर्तकौ रहोवित  
तमूर्जितेभरसहचसिधोर्वपुः ७॥

شیاطین سیوسه دیگر جنین پرکیش  
قیامت آتش کیسویه دارد  
دله در دل نیارد رنج یکدم  
نهر کجدر نه رمد از مهر یا قهر

هستی خمد به کیوسه شین پریش  
بکیسوا از گرو دے کوه دارد  
بجو شانند آب بحر یکدم  
بشرفا دل نشود چون بحر در دیر

नृष्णां किं धिभजक्षमां जहिमदं पा  
पैरतिमा कृथाः सत्यं ब्रह्मनुयाहि  
साधुपदवीं सेवस्व विद्वज्जनम् ॥  
मान्यान्मानयविद्विषोऽप्यनुनय  
प्रख्यापयस्वानुगुणान् कीर्तिपा  
लयदुःखिते कुरु दयामेतत्सताल  
क्षणम् ॥ ७८ ॥

بکن ترک از نفس بکار نینز

بکن ترک از حرص و نیکی بگیر



کہ خواہند بہیودستے بر زمین

خا حاصل حق خود و این چنین

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थप  
रित्यज्यये सामान्यास्तुपार्थमुद्यम  
भूतः स्वार्थाविरोधेनये ॥ तेऽसीमानु  
षराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नंति  
ये ये निघ्नंति निरर्थकं परहितं ते केन  
जानीमहे ॥ ७५ ॥

خدا دوست با شد صاحب  
شود دور میاں سے ورا یام خلق  
باو شمر گویند محتاج درش  
نرا نم چہ گویم باو در جہان

کند سرج خود در فلاں و گھر  
کند کار خود ہم سر انجام خلق  
کند سرج دیگر پے کار خویش  
رساند ضرر بے سبب بر کسان

क्षीरेणात्मगतो दकायाद्दिगुणा दत्ताः  
पुरातेखिला क्षीरेतामवेक्ष्यतेनप  
यसास्यात्मा कशानौहुनः ॥ गंतुं पावक  
मुत्सन्नसदभवदृष्टातुमित्रापद युक्त  
तेन जलेन शाम्यातिसतां मैत्री पुनस्त्री  
दृशी ॥ ७६ ॥

حدا ئی او باو کے تاب گردد  
پسوز و آب حافظ از پے شیر

چو اینرش بشیر و آب گردد  
پے گرمی چو بر آتش نہد شیر

که زبید چو علم ز حق گوشش کرد که زبید ز جود و سخا مرد را که زبید ز باطن حقیقی بهر	که حلقه نرید بنا گوشش مرد که زبید نه زبید بر سر د را که زبید نرید فدا دے بهر
--	--

पापानि वारयति योजयते हिताय  
गुप्तं च गूहति गुणान् प्रकटी करोति  
प्रापुङ्गतं च न जहाति ददाति का  
ले सन्नि च लक्षणमिदं प्रवदति सं  
तः ॥ १३३ ॥

نما بدوستی را بدوست با خفا کوشش کند پیشتر کنند مرن ز زتاب کمال مردگار باشد بهان و زوال	که کار به بدی منع سازد بدوست کنا بان به پوشش نماید هنر مردگار در وقت بد و زوال نشان نیست از دوست صاحب کمال
---	---

पश्चात् करं दिन करो विकची करोति  
चन्द्रो विकाशयति कैरव चक्रवा  
लं ॥ नाभ्यर्थितो जलधरो पि जलं  
ददाति संतः स्वयं परहिते सुकृता  
भियोगाः ॥ १३४ ॥

همین طور نیلوفر از ماهتاب که بار دهر جاغوشا بیدر تیغ	به شکاف و خلل از آفتاب به نیر دگان ما رساند تیغ
---	--

स्वस्वमुखान्दुर्जनान्दूषयन्तः सन्तः  
साश्चर्यवर्षाजगति बहुमताः क  
स्यनाभ्यर्चनीयाः ॥ ७० ॥

<p>بہ تشریف نیکان خود بخود بگیری وے تھویشن رافراش سکن بدان راندراکن ازاء باشش ہے سجدہ رسد مروزن ای عزیز</p>	<p>بلندی را از انگساری گیری یہ ہیودے دیگران خوش کن تر نر می و گرمی جہان شاد باش ہے گویند خلقت ترا بامتیں</p>
---	--

भवन्ति नम्रा स्तरवः फलोद्गमैः ॥ न  
वां वुभिर्भूरि विलं विनो घनाः अनु  
हृताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभावा  
वैष परोपकारिणाम् ॥ ७१ ॥

<p>چو پیر آب ابرے کہ پوسد زمین بکار و گر خود بسوید جبین کن صرف جان را ز جد کمال کہ ذاتی بشو این صفائی باو</p>	<p>شیر با شمر سعد بزمین بنجامان حق خود بود این چنین نجان و زرد ز یورو ملک و مال نہ این شد ز تعلیم حاصل باو</p>
---	--

श्रीचं श्रुतेनैव न कुंडलेन दानेन पा  
णिर्न तु कंकणेन ॥ विभाति कायः  
करुणापराणां परोपकारैर्न तु चंद  
नेन ॥ ७२ ॥

بہ بین آب را بر سر حالت سید | نہ فہم گرا دوست باید کشید

यः प्रीणयेत्सुचारितैः पितरं स पुत्रो यद्  
तुरेव हितमिच्छति तत्कलत्रम् ॥ तन्मि  
त्रमापदि सुखे च समक्रिययद्दत्तत्रयं  
जगति पुण्यकृतौ लभते ॥  
॥ ६८ ॥

زن نیک فرزندان طاعت پذیر | شود دوست در وقت بدو شکی  
چنین سزاقست بیشتر شود | اگر اطاع در دیر برتر شود

एको देवः केशवो वा शिवो वा एकं  
मित्रं भूपतिर्वायति वा ॥ एको वासः  
पत्नने वा वने वा एकानारी सुन्दरी  
वा दरी वा ॥ ६९ ॥

ز شیو کشویکے را سجدہ کن تو | گدایا شاہ یک را دوست کن تو  
بہ خانہ یا بہ جنگل حاسے کن تو | زن یا غار کو ہے زوجہ کن تو

नम्रत्वेनोन्नमंतः परगुणकथनैः  
स्वानुगुणानुख्यापयंतः स्वाथानि  
संपादयंतो वित्तप्रियतराभयत्नाः  
पराथक्षास्यैवाक्षपरुक्षाक्षरमु-

तामंडनमिदम् ॥ ६५ ॥

از سرور سجده خاصان قابل وصف  
بازو روز زربد قتیابی  
نیز گوش از علم راز حق شنودن  
که زربد خوش در حق شناسان

خوشاوستی مخیرت بل وصف  
و همان زربد گفتن راست باری  
سزودن را با استقبال بودن  
تربید از روز زربد به خاصان

संपत्सुमहतांचितंभवत्युत्पलकोम  
लम् ॥ प्रापत्सुचमहाशैलशिलासं  
घातकर्कशम् ॥ ६६ ॥

بوقت زبونی بکوه کلاح

با نرم طبیعت بوقت فلاح

संतप्तायसिसंस्थितस्यपयसोनामा  
पिनजायते मुक्ताकारतयातदेवन  
लिनीपत्रास्थितंराजते ॥ स्वास्यांसा-  
गरशुक्तिमध्यपतितंतन्मौक्तिकंजाय  
तेप्रायेणाधममध्यमातमगुणाःसंसर्गतोदे

نماند ازو قطره هم در نظر  
ناید چو لؤلؤ صانع گری  
شود بجهال لؤلؤ شاهر

باهن گرم آب پاشند اگر  
همان قطره ببرگ نیلوفر  
همان در صدف گر بگیرد قرار



चभिरुचिर्यसनं श्रुतौ प्रकृति सिद्ध  
मिदं हि महात्मनाम् ॥६३॥

نه خود بینی خویش وقت کال  
به نیکان محبت نه به جنگ  
نه در رنج و راحت صفاتی بود

به قایم مزاجی بوقت زوال  
شکر لب بجفل مهر به جنگ  
چنین نه به نیکان ذوالی بود

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते सभम् वि  
धिः प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं च  
पुपुक्तः अनुत्सेको लक्ष्म्या निरभि  
भवसाराः परकथासता केनो हि ह्यवि  
षममसि धारावत मिदं ॥६४॥

نه گفتن زبانی خود از عجیب  
نه مغرور از خود کند آشکار  
نه چینه نیکان از وید مشر  
به نیکان چنین خوی لبش شکل است

به خیرات مخفی تو اضع غریب  
زبانی و یگیر کند آشکار  
به مجلس نشند گز حیات و گر  
بر گفتن لبش مشیر لبش شکل است

करे म्लाघ्यस्यागः शिरसि गुरुपाद  
प्रणयिता मुखे सत्यावाणी विजयभु  
जयो वीर्यमतुलम् ॥ हृदि स्वस्था-  
वृत्तिः श्रुतमधिगतैकव्रत फ  
लम् ॥ विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमह

मृगमीनसज्जनानां वृण जलसंतोष  
विहितवृत्तीनाम् ॥ लुब्धकधीव  
रपिशुना निष्कारणवैरिणो जग  
ति ॥ ६१ ॥

بگاه و صبر آب اندر جهان رزق ایشان است  
به بطا دو بد و صیاد کو مایع به ایشان است

بآهوز اهد و مایه صفت ذلتی و ایشان است  
و لے بیو جهه و اوان رنج خود الی رزق و اوان

वाञ्छासज्जनसंगमेषरगुणोप्रीतिगु  
रौ नम्रताविधायाम्यसने स्वयोषिति  
रतिलोकापवादाभ्ययम् ॥ भक्तिः श्रु  
तिनिशाक्तिरात्मदमने संसर्गमुक्तिः  
स्वलेख्येतेषु वसन्ति निर्मलगुणा स्ते  
भ्यो नरेभ्यो नमः ॥ ६२ ॥

بدل حنط از دیدن فایقان  
به صحبت زن خود با داب و حلم  
عبادت خدا را بسیار و بکار  
از صحبت بدان دور باید گریز  
کنم سجده اورا ز دل بر شمار

بدل خواہش صحبت لایقان  
ز دل سجدہ مرشد لقرت بعلم  
بتر سبزد گفتن روزگار  
گرفتن نفس را کند خو بدیر  
باین خو شود ہر کہ در روزگار

विपादि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सद  
सिवाय दत्तायुधिविक्रमः यशसि



رسد نزدیک بے ادبی چو ماند دور بے سود  
 بود هر وقت حاضر حکم را فوراً بجا آرد  
 بجا آرد بجا آرد بجا آرد بجا آرد

उम्दासितारिवलरवलस्यविश्वरवल  
 स्यप्राज्ञातविस्तृतनिजाधमकर्मवृ  
 तेः देवादवाप्तविभवस्यगुणाद्विषो  
 स्यनीचस्यगोचरातेः सुखमास्य  
 तेके ॥ ५८ ॥

<p>گرچه باشد صاحب گنج و ذکا          مثل اشتر بے مهار و روزه خا          لیکه دشمن بهت بهر خوش لقا</p>	<p>صحبت دون ست بیشک زنج          نے نماید اصل باے خویش          بیکند خیرات ہم جو و دستخا</p>
--	---

आरंभगुर्वीक्षयिणी क्रमेण लब्धी  
 पुरादृष्टिमतीचपश्चात् ॥ दिनस्य  
 पूर्वाह्णपराह्णमिन्नाद्यायचमैत्रीव  
 लसज्जनानाम् ॥ ६० ॥

<p>چنان به بنیکان به انجام خلق          چو سایه روز آخر سے فزاد          به تقضیع آخر قطع سے شود          فنون از فنون روز افزون بود</p>	<p>دو نان دوستی سازد انجام خلق          چو سایه روز اول کم شود او به          دو نان دوستی اولین میشود          به بنیکان به اول چو گستر بود</p>
--	--

خله خاتم بدل زین هفت تشویش که کامل باو بے انوار گردد برود خشک نیلوفر نماد تو نگر در سر ابرسم کردن مال بدان در صحبت شاهان نشیند	بگو این نمایم از که لقمه تشویش زن خوش روز پیری زار گردد به جن یوسفی این سر نماد بزرگ از مفتیستی شیر احوال ز خون خویش نیکان لقمه چشید
--	--

नकाश्यां चाडिकोपानामात्मीयोना  
मभूभुजाम् ॥ होतारमपि जुक्वा न  
स्मृष्टो दहति पावकः ॥ ५७ ॥

تعب ز شاهان بود انچنان که نه گهر صد سال سجده زدور	نه دارند الفت به کس در جهان چو آتش به گیرد لبسوزد عز و ریا
--	---

मौनात्सुकः प्रवचनप्रदुश्चादुलो  
जल्पकोवा धृष्टः पार्श्ववसतिचत  
दादरतश्चाप्रगल्भस्तस्याभीरुर्य  
दिनसहिते प्रायशो नामजातः  
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनाम  
प्यगम्यः ॥ ५८ ॥

حقه خد شگذاری را به ان ایجان ز حد شکل  
نه ممکن از فقر و نه مرید و از غلام اشکل  
چو خاموشی گرتید بکم گوید هست بیهوده

شکراب را بمیدانند فجار  
به ابل صبر میگوند کم زور  
همه را از بدان رجحیت معایل

به ابل نقشه میگوند مکار  
به صاحب ستم میگوند خوار  
به گویا مریه گویند جابل

स्वोभश्चेदगुणेन किंपि शुनता यद्यस्ति  
किंपातकैः सत्यं चेन्नपसाच किं शुचि  
मनो यद्यस्ति तीर्थेन किं सौजन्यं यदि  
किंगुणैः स्वमाहिमा यद्यस्ति किं मंडनैः  
सहिष्यादि किं जनैरपयशो यद्यस्ति  
किं मृत्युना ॥ ५५ ॥

زنامه گناه به بیشتر نیست  
دل شان طاعت است اندر امیری  
بر رکلان را بر رگی گنج شان است  
جنایت لائق مرد زمان نیست

به طامع حاجت عیب در نیست  
چه حاجت راستان را با فقیری  
به نیکان نیکویی کافی همان است  
به عالم حاجت دیگره کسان نیست

शशी दिवस धूसरो गालित यौव  
ना कामिनी सरो विगत धाजिं मु  
स्व मनक्षरं स्वाकृतेः प्रभुर्द्धन प  
रायणः सतत दुर्गतः सज्जनो नृपां  
गाण गतः खलो मनसि सप्त शल्या  
निमे ॥

॥ ५६ ॥

बंधुजनेष्वसहि स्मृता प्रकृति सिद्ध  
मिदं हि दुरात्मनाम् ॥ ५२ ॥

تظلم بی سبب با دشمنی خودی  
از پیروی دیگران شایق باشد

بدان را هست ایستگرتی خودی  
ز روزه دیگران مزعوب باشد

दर्जनः परिहर्तव्यो विधया भूषि  
तौ पिसन् ॥ मणिनालंकृतः सप्यः  
किमसौ न भयंकरः ॥ ५३ ॥

خطر باشد ز قربس با تو نگردد  
بترسد صحبتش را صاحبان

چو بد با علم شد با صاحب ند  
خیر را ریکه باشد صاحبین

जाड्यं ह्रीमति गायते व्रतरुचौ दंभः  
भुचौ कैतवं भूरे निघृणता मुनौ वि  
मतिता दैन्यप्रिया लापिनि तेजसि  
न्यवलि सत्ता सुखरता वक्तुर्य शक्तिः  
स्थिर तत्कानामगुणो भवेत्सगुणो  
नाथो दुर्जनैर्ना कितः ॥ ५४ ॥

کدام است آن که زیشان خیر نیست  
بر روزه دار از فاسد خیالات  
بصاحب نفس میگویند باطل

بدان را جز بدی کار دیگر نیست  
به صاحب شرم گویند از عبادات  
بهادر شخص را گویند قاتل

त्वमेव चातकाधारोसीति केयोनगो  
चरः ॥ किमभोदधरास्माकं काप  
णीकिः प्रतीक्ष्यते ॥ ५० ॥

چرا در انتظار سی عاجز آن  
که میار دسبب ابر نیسان

تو فی جان بخش موسیچم بر آن  
به عاجز بایدت قطره بردن

रेरे चातकसावधानमनसामिवक्ष  
णं श्रूयता संभोदावहवोवसंति ग  
गने सर्वेपिनेतादृशाः ॥ केचिद्वृष्टि  
भिरार्द्रयंतिवसुधां गर्जति केचि  
द्वृथा यंयं पश्यसितस्य तस्य पुर  
तामाग्रहिदीनवचः ॥ ५१ ॥

نباشد در همه ابر آسمان جوبش  
که پرهم باشد و خالی سجا با  
سبا ابر سے کہ نارد بر زمین آب  
سکے را می برد و خالی زجا باد  
کمن بر نعمه سنجیہا سے خود صبر

کمن موسیچم این پند مرا گوش  
نباشد ابر نیسان در همه جا  
سبا ابر سی کہ بار د بر زمین آب  
سکے بار دیکے خالی گند در عذر  
کمن اظهار عجز خود سبب ابر

अथ दुर्जननिन्दा ॥

प्रकरुणत्वमकारणविग्रहः पर  
धने परयाधितिचस्पृहा ॥ सुजन

گے در زرد گیس به تدبیر زرد	گے صرف با گاهی به تسخیر زرد
----------------------------	-----------------------------

विद्या कीर्तिः पालनं ब्राह्मणानां ॥  
 दानं भोगो मित्रं स रक्षणं च ॥  
 येषां मेतेषां न प्रवृत्ताः ॥  
 कौटिल्येन पार्थिवोपाश्रयेण ४८॥

به شاهان نشستن نه شایر باو بفرمان حاضر مخیر ببال به حفظ بر زمین کند جان صرف	نه دارد ازین ششک در جوی او محافظ بخویشان هم نیک حال به شهوت چنان کنزوی گیر ده حرف
---	---

यद्वाचा निज भाल पट्ट लिखितं स्तो  
 कं सह द्वा धनं तस्या प्रीति मरुस्थ  
 लेपि नितरां मेरो ततो नाधिकम् ॥  
 तद्वा रो भव वित वत्सुक पणां ह्यति  
 दृष्ट्या मा कथाः कूप पश्य पयो नि  
 धावपि घटो रक्ताति तुल्यं जल  
 म् ॥ ४९ ॥

چو خالق به کلام تفنا نقش بهست اگر او به مر ملک پیرا شود پس اسی دل چیرا استقل نیستی زور با سبوح چه که آب آورد	نه کرد دو کم و بیش از هر چه بهست و اگر کوه زرد بر دس نشید ا شود که از هر زرد بیش دون ایستی همون قدر از چاه آب آورد
---	---



स्थावस्तुनिप्रथयतिचसङ्कोचयति  
च॥४५॥

چو مفاس کہ سر پایہ پاید ہے نہ کیسان شود شکل در روزگار	بر اندھمہ خلق راجون فشی کہ دنیا ست فانی و نایا دیدار
--	---

राजन्दुधुक्षसि यदिक्षिति धेनुमेना  
तेनाघवत्समिवलोकममुंपुषाण॥  
तास्मिंश्चसम्यगनिशंपरिपोष्यमाणे  
नानाफलेःफलतिकल्पलतेचभूमिः  
॥४६॥

نصیحت بکن گوش اسی نادر بکن پرورش بر جهان همچو پور	زمین را چو خواہے گرفتن بکار زمین برود بد حسب خواہش فردر
--	--

सत्यानृताचपरुषाप्रियवादिनी  
च हिंसादयातुरपिचार्यपराव  
दान्या ॥ नित्यव्ययाप्रचुरनित्य  
धनागमाच वेश्यागतेचनृपनी  
तिरनेकरूपा ॥४७॥

بہ شایان سزد خاصیت پیچو پور گے لغو گاہے رہہ راستی	گے نرم گاہی شود ترش و شور گے قتل و کجاہی رحم آشتی
--	--

दानंभोगोनाशस्तिस्रोगतयोभवन्ति  
वित्तस्य ॥ योनवद्वानिभुक्तेतस्यतु  
तीयागतिर्भवति ॥४३॥

یکی عشق زغبان دیگر ایشانه  
فتد در عرصه نال بود شان مال

ز زو حالت سه باشد اندرین دار  
نه در عشقی نه در خیرات از مال

मणिः शाणो ह्यदः समरविजयीहे  
निनिहता मदक्षीणो नागः शरदिस  
रितः प्र्यानपुलिनाः ॥ कलाशेष  
श्चन्द्रः सुरतमृदितावालललनाः  
तन्निम्ना शोभते गलितविभवाश्चा  
र्थिपूजनाः ॥४४॥

نه زيبد جو فيله كه آيد بر  
نه زيبد جو ماسه دويم در شمار  
جو كم سن زن كو شويم در دغو  
گدراي نه زيبد بر دارها

جواهر كه سان خورده باشد اگر  
فتحياب جنگه كه افتد لغار  
نه زيبد بر ماسه رود جو  
چوبه ز زلف زيبد نه زودارها

परिक्षीणः कश्चित्स्मृहयतियवानां  
प्रसृतये सपश्चात्सपूर्णकलयति  
धरित्रीं तृणसमास ॥ अतश्चानेका  
न्याद्गुरुलघुतयाथैषधनिना मव

زرد در جهان باشد از دست بقا  
نبرد سحر مجسمه سره اول کار

زرد خوش گلو و زرد خوش لقا  
چوبه زرد شود و شمع در روزگار

यस्यास्ति वित्तसन्तः कुलीनः सप  
ण्डितः सश्रुतवानुगुणान् ॥ स  
ववक्ता सचदर्शनीयः सर्वगुणाः  
काचनमाश्रयन्ति ॥ ४१ ॥

زرد عقل و دانش منبر هم زرد  
که باشد همه فعل در شکل زرد

زرد حسن و صورت بزرگی زرد  
زرد صرف نخوست و گویا زرد

दौर्मेयान् पतिर्विनश्यति यातिः सं  
गात्सुतो लालनात् विप्रोऽनध्यय  
नात्कुलकुतुनयाच्छीलखलोपास  
नात् ॥ ह्रीमद्यादनवृक्षाणादपि कृषिः  
स्नेहः प्रवासाश्रयान्मैत्रीचाप्रणया  
त्समृद्धिरनयात्यागात्प्रमादाद्धनम् ४२

بشاهی فقیر می ز صحبت ببال  
کند قطع نسل چو باشد کذب  
ز صحبت بدان شرم فدا می شود  
ز غیبت مروت مروت ز عار  
ز تارک کتد دولت او خرام

ندیکه که بد عقل سازد زوال  
مروت کند پرور اسب ادب  
به غیر عالم بر مینویسند  
تردد ز غفلت حیا از خمار  
تکبر و به احتیاطی مدام

वयस्तेजसो हेतुः ॥ ३८ ॥

بلا خطره کند جمله به تجلیل  
که حق ذاتی صفت داده به تبار

چو گره شیر باسد لیکه ز فیض  
نباشد عمر و جسم تیزی او

जातिर्यातुरसातलंगुणगणस्तस्या  
प्यधोगच्छतां शीलं शीलतदात्पतु  
त्वमिजनः सन्दधतां वाहिना ॥ शौर्यं  
वैरिणवृजमाशानिपतस्वर्थोऽस्तुनः  
केवलयेनैकेन विना गुणास्तृणालव  
प्रायाः समस्ता इमे ३८

رود علم و هم خسته خوش در زمین  
شهور بشود زیر گِل و رگند  
که بے زرشود تهتین ۱۱ همچو مور

رود ذات در پرده زیر زمین  
ز خویشان آثار بآتش فتن  
و بے زربا بدستم ضرور

तात्तीन्द्रियाणिसुकलानितदेवक  
र्मसावुद्धिरप्रातिहता वचनतद  
व ॥ अर्थोष्मणाविरहितः पुरुषः  
स एव त्वन्यः क्षणेन भवतीति वि  
चित्रमेतत् ॥ ४० ॥

زر عقل و مهت ز زر خو نجیل

زر دست و پا باشد و هم سبیل

دانا باخته به ریشیت خود گذارد  
نذر اندر از او کسی را کسی پیر

زمین را شیش بر سر خویش دارد  
بهر می دهد بجز او نه خستیر

वृषं पक्षच्छेदः समदमयवन्मुक्तकु  
लिशं प्रहारे रुद्रच्छूह हल्ल दहनाज्ञा  
रिगुरुभिः ॥ तुषाराद्भिः सूनोरुहहापि  
तारिक्तेषां विवशो नचासौ संपातः  
पयसिपयसां पत्युरुचितः ॥ ३६ ॥

به اندر از وی این حرکت شاق شد  
همان گزند بر پیر او هم کشید  
که با بجز شیرین بنده خواست او

جو پور حاله به پیر او از شد  
بجز ز چو او پر هم ساله پدید  
خوش بود بر نسدن بال او

यदचेतनोऽपि पादैः स्पृष्टः प्रज्वल  
तिसवितुरिव कांतः ॥ तत्तेजस्वीषु  
रुषः परकृतविकृतिं कथं सहते ॥ ३७ ॥

ز فیض بهر گردد آتش را  
نه بیند ز کس نقصان افعال

همادی قسم باشد شیش را  
همینک صاحب زور عز و اقبال

सिंहः शिशुरपि निपतति ॥  
मदमालिनकपोलमितिषु गजेषु ॥  
प्रकृतिरियं सत्त्ववता नरवल्ल



कुसुमस्तवकस्येवद्देशतीस्तोमन  
स्विनाम् ॥ सृष्टिवासर्वलोकस्यवि  
शीयेतवनेऽथवा ॥३३॥

بود برود و شق مال پاکان نام | چو گل در بیا بان که بر فراق عالم

संत्यन्येपि दृढस्पतिप्रभृतयः संभा  
वितापंचूषाः स्तान्मत्स्येषविशेषवि  
क्रमरुचीराहूनेवरायते द्वावेवग्रस  
ते दिने श्वरनिशा प्राणेश्वरौ भासुरौ  
भातः पर्वणि पश्य दानवपातिः शी  
र्षावशेषी कृतः ॥३४॥

بهجت مشتری دارند بسیار | دله را به نواز دو دشمن کار  
که او سردار از دیوان شهید | باده و مهر جنگ شان شهید  
به جنگ هر کس که ماند نیم جان خاک | سردار وراثت اندین تهم خاک

यहतिभुवनश्रेणींशेषः फणा फ  
णकस्थिता कमदपतिनामध्ये  
पृष्ठसदासविधार्यते ॥ तमपिकुरु  
तेकोडाधीनपयोधिरनादरा दहह  
महतांनिःसीमानश्चरित्रविभृतयः

॥३५॥



तये ॥ सिंहोजंघुकमङ्गु मागतमपि  
 त्यक्त्वानिहन्ति द्विपं सर्वः क्षच्छगता  
 पिवाञ्छतिजनः सत्त्वानु रूपं फलं ३०

همه عمر خود را بسر می برد  
 نه کرد بیه لقمه خوان را  
 در پیل دمان هم در آرد و ار  
 نذرند پاد از عباده بیرون

به بین کلب خشک او ستخوانه خورد  
 و سله شیر بر گزشتن لالان را  
 جو نیجه زنزان شجاعت شمار  
 همین طور نیکان بوقت زیبون

लांगूलचालनमधुश्चरणावपातं  
 भूमौ निपत्य वदनादरदर्शनंच ॥  
 श्वापिण्डदस्य कुरुत गजपुङ्ख व  
 स्तु धीरं विलोकयाति चादुशतेश्च  
 भुक्ते ॥ ३१ ॥

رخ و بطن خود را نمایان کند  
 خوردن ان هم از خوشا قلیل

سنگه عاجزی خویش ظاهر کند  
 و سله پیل خود را نه سازد و لیل

परिधूर्तन संसारे मृतः कोयान्  
 जायते ॥ सजातो येन जातिनयाति  
 वंशः समुन्नातिम् ॥ ३२ ॥

همان ماندگز نسل او شد زیاد

کدامست ان گونه مرد و زاد

प्रियान्याय्यावृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेषु  
सुकरं त्वसंतानाभ्यर्थाः सुहृदापि  
नयाच्यः कृशधनः ॥ विपद्यैः स्थ  
यंपदमनुविधेयंचमहतां सतां केना  
दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् २५

زود و نان نخواهد گرفتن سخته  
بوقت زبونی نگردد و رسال  
که این خوشه خوشه شکر است

کند علم را روزی خود که  
بنویشان مفلس تدارک سوال  
رسیده راستی را نخواهد گذشت

क्षत्क्षामोऽपि जरा कृशोऽपि शिथिल  
प्रायोऽपि कष्टो दशामा पन्नोऽपि विप  
न्नदीधितिरपि प्राणेषु नश्यत्स्वपि  
॥ मत्ते भन्द विभिन्न कम्भकवलया  
सैकवद्वा स्पृहा किं जीर्णं तृणम  
त्तिमानमहतामये सरः केसरी ॥ २६

شود لاغر و جان بلباهم مگر  
که خواهد زبیل و مان لقمه

اسد گرسنه پیر گردد اگر  
زکاه کهن او نه سازد بر

स्वल्पं स्नायुवसावशेषमलिनं नि  
र्माशमप्यास्थिगोः ॥ श्यालब्ध्या  
परितोषमतिनतुतन्नस्य सुधाशां

नयुवतिजन्कथासुकभावःपरेषाम्  
 तृष्णास्रोताविभङ्गो गुरुषु च विन्  
 यः सर्वभूतानुकम्पा सामान्यः सर्व  
 शास्त्रेष्वनुपहृता विधिः श्रेयसामेष  
 पथा ॥ २६ ॥

نماید خدا دوستی را عیان  
 نه دوز و نظر صاحب امتیاز  
 کند بذل زر حسب مقدور ما  
 همه علم دان گفت کار خیم  
 که در کار توره نپا بدخلل

تخلل از بهر بارز و گیران  
 به دیگر زمان نیز از هر من از  
 ز خدمات مرشد شود مهر و باب  
 ترجم مرد جانان با سئ و دیر  
 بدل باش مشغول مسلم عمل

प्रारभ्यते नखलु विघ्नभये न नीचैः  
 प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति म  
 ध्या ॥ विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रति  
 हन्यमानाः प्रारभ्य चान्तरमजनाः  
 न परित्यजन्ति ॥ २७ ॥

نمی بندد میان تار سیت و نه بار  
 گر بزد بیند از کار اگر است  
 و تا بدو از و تار سیت و نه بار  
 که مشکل پیش او آسان تراید

کمینه پست همت از پئے کار  
 شروع سازد جو شخص در میا  
 اگر افضل میان بند و پئے کار  
 بود آسان و پیش کل نباید

<p>ز صحبت نیک باشد عین عقل ز صحبت نیک باشد حاصل کام</p>	<p>ز صحبت نیک باشد عین عقل ز صحبت نیک در دین آرام</p>
---	---

जयंतिते सुकृतिनो रससिद्धाः कवी  
श्वराः ॥ नाल्लियेषायशः कायजरा  
मरणजभयम् ॥ २४ ॥

<p>نه ترسد و اند این راهم چو یک برگ</p>	<p>مقدس جسم کو از پیری و مرگ</p>
---	----------------------------------

सुतः सच्चरितः सती प्रियतमा स्वामी  
प्रसादोन्मुखः स्निग्धमित्रमवञ्चकः  
परिजनोनिः क्लेशलेशमनः ॥ प्राका  
रोरुचिरः स्थिरश्च विभवो विधावदो  
तंसुखंतुष्टे विष्टुपहारिणीष्टदहरो  
संप्राप्यते दाहना ॥ २५ ॥

<p>بسی نیت او را دید و نفس هم آقا رضا سندر و شفقت عزیز نباشد زور و دالم هو لیاک چنین کس ز شاهان بود به نظیر</p>	<p>چو رازق رضا مند گردد ز کس زن نیک و نرسد صا حب تمیز نخویشان خوش بستم عیب پاک ز علم و هنر نور چهره شیر</p>
---	---

प्राणाधातान्निवृत्तिः पूरधनहरणे-  
सयमः सत्यवाक्यकालशक्त्या पदा

به پدر خلقان ضرورت دشمنان نیست  
 بخوابد شد ترا آتشش ضرورت نیست  
 نیفتد بباد و آفتاب هیچ حاجت نیست  
 غنی تر کیست در گدایان اسوار  
 بگوید حاجت ملک ملکین نیست  
 به جود دان ضرورت داردی نیست

خلیقان را ضرورت ترکش نیست  
 به عین خود اگر داری گوشت نیست  
 اگر ببرد داری با ضرورت نیست  
 به به عینیت چه خوف از مار باز یاد  
 ز نور رونق ششم و حیاست  
 به چمنان ضرورت آنست نیست

दाक्षिण्यस्वजने दयापरजने शास्त्रं  
 सदा दुर्जने प्रीतिः साधुजने न यो नृ  
 पजने विदुर्जने ध्वज्जवम् ॥ प्रो  
 य्यं शत्रुजने क्षमागुरुजने नारीजने  
 धूर्तता ये चैव पुरुषाः कलासुकु  
 शलास्तेष्वेव लोका स्थितिः ॥ २२ ॥

به نیکان نیکوئی و با بدان قهر  
 شهور با عدو ازین مدارات  
 بروی دهر ماند از تو این یاد

بخویشان خود و با دیگر گسان مهر  
 به مشایان عجز اعلان رهبر است  
 بکن خدمات مرشد بادل شاد

जाडपंधियो हरति सिंचति वाचि स  
 त्यमानो न्नति दिशति पापमपाकरो  
 ति ॥ चेतः प्रसादयति दिक्कृतनो  
 ति कीर्तिसत्संगतिः कथय किं न क  
 रीति पुंसाम् ॥ २३ ॥

بہر پیش شاہان رساند کمال  
بہر شہرت در جہان سے گشت

بہر دست کجمنہ لاتہ وال  
بہر رونق جسم و جان میکند

विद्यानामनरस्यरूपमाधिकं प्रच्छि  
न्नगुप्तं धनविद्याभोगकरीयशः सु  
खकरीविद्यागुरूणां गुरुः ॥ विद्या  
बंधुजनो विदेशगमने विद्यापरं दे  
वते विद्याराजसु पूजितानहि धने  
विद्याविहीनः पशुः २०॥

زرقہ خود را نہان میکند  
بہر وصف انسان نشان میدہد  
بہر جان بہر باشد از دور و ریش  
بغیر از بہر بہت فاسخ نمجر  
بشر کہ بہر بہت چون جانور

بہر حسن مروت عیان میکند  
بہر عیش و آرام ہائے وہد  
بہر بہت بر شد بہر با ز خویش  
قدر میکند پیش سلطان بہر  
بود قدر مردم ز علم و نہر

प्राप्तिश्चेद्दृष्टनेन किं किमरिभिः को  
धोस्ति च द्वाहिना ज्ञातिश्चेदनेन  
किं यदि सुहृद्व्यौषधेः किं फल  
म् ॥ किं सपै यदि दुर्जनाः किं सुधने वि  
द्याऽनवद्या यदि व्रीडा चेत्किं सुभूष  
णैः सुकविता यद्यास्ति राज्ये न कि  
म् ॥ २१॥



بہین گو شود را ز دار و فقیر  
نہ بندد دل خویش را آن بشر  
نہ استزد شاخ کنون او گشت

خدا دوست را با گاہے فقیر  
نہ در خوہد و یان نہ از سیم فذر  
جو پیل دمان کو بہ گرد و در بشت

अम्भोजिनीवननिवासविलासमेव  
हंसस्यहान्तिनितरांकुपितोविधा  
ता ॥ नत्वस्यदुग्धजलभेदविधौ  
प्रसिद्धां वैदग्ध्यकीर्तिमपहतुमसौ  
समर्थः॥१९८॥

کند خشک ہم چشمہ و خلرا در را  
نبوئی ز طبعش نہ گردد بدور  
کند آب از شیر فوراً جدا

چو برہا شود خشکین ہنس را  
و نہ خوی ذاتی کہ دارد بر  
عجب چو ہری داد او را خدا

केयूरानविभूषयानिपुरुषंहारान्  
चन्द्रोज्ज्वलानस्नानविलेपनं  
नकुसुमंनलंकृतामूर्धजाः॥ वा  
ण्यकासमलंकरोतिपुरुषंयासं  
रुक्ताधार्यतेक्षीयतेखलभूषणा  
निसततंवाग्भूषणभूषणम् ॥१९९॥

نہ غسل کہ شوید رہ گہ در را  
نہ گلہا سے خوش رنگ ز نقین محمد

نہ باز و کند زینت سر در را  
نہما ز رصندل نہ تبسیم و در

و در تعلیم طفلان سبق بخوان  
نماند که سینه او گریه بکشد  
نمیزید شاه را اخلاستش از علم  
نه کرد و اصل آن کم مطلقا زان

نیامد هر چه کند عالم همه دان  
نشد و بیا هر ز علم و دانش عقل  
ز اخلاستش نه اگر و هیچ کم علم  
نمرد شد جوهری از زان چنان دان

हर्तुर्यातिनगोचरं किमपिशंपुष्पा  
तियत्सर्वदा ध्यार्थिभ्यप्रतिपाद्यमा  
नमानिशंप्राप्नोतिवृद्धिंपरां ॥ कल्या  
तेष्वपिनप्रयातिनिधनेविद्यारव्य  
मंतर्द्धनं येषांतात्प्रतिमानमुक्ततन्  
पाः कस्तैः सहस्यद्वते १६

بچه علم باشد با دتاب و تب  
که آگاه حق هست و هم نیک خو  
نه دزدی بگیرد از وی یک شتر  
ازین به نباشد درین روزگار

بر مین که دار و بدل یا در ب  
نه زبید ز شا بان تکبر باد  
به طلبا کند وقف علم و شهر  
به افزایش علم مصر و فکار

अधिगत परमा धन्यगिदितान्भाव  
मस्या स्तृणामिवलघुलक्ष्मीर्नैवता  
संरुणाद्धि ॥ अभिनवमदलेखा-  
प्रयामगराडस्थलानां नभवतिविस  
तत्तुवरिणवारणानामू ॥ १७ ॥

پشایخ و دم شود و فرقی از حیوان	بشکل مردمان باشند انسان
--------------------------------	-------------------------

येषां न विधानं तपो न दानम् ज्ञा  
नं न शीलं न गुणो न धर्मः ॥ ते मर्त्य  
लोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण  
मृगाश्चरन्ति ॥ १३ ॥

نه اهل حقیقت نه دانا سئ علم نه تعلیم مرشد نه جو و سخی اگر چه گشته شان در مردمان	ریاضت نیکوئیات سئ طبع علم چو بار زمین آمد آن بے حیا و لے خوشی شان بست شل و ان
---	---

वरं पर्यति दुर्गेषु भातं वनचरैः सह ॥  
न मूरवजनसंपर्कः सुरेन्द्रभवनेऽपि १४

بکوه بهایان به هم راه دو	به است از بهشت که بایه خرد
--------------------------	----------------------------

शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरागिरिः शि  
ष्यप्रदेयागमा विख्याताः कवयो  
वसन्ति विषये यस्य प्रभो निर्धनाः ॥  
तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य कवयो  
द्यर्थं विनापीश्वराः कृत्स्नाः स्युः कु  
परीक्षका हि मणयो यै रघतः पाति  
ताः ॥ १५ ॥

چو گنگا ز جنت میر آورد سر دزد آنجا کبوه جمال رسید چو شد نخل او از فلک بر زمین شکستی کوز میبود دارد نه یاد	به فرق به یاد شد جلوه گرا زمین پاک کرده بدر بار بار ز دور یا فرد شد بریر زمین خفا میشود زود در حدیث یاد
--	--

शक्यो वारायितुं जलेन हृतमुकच्छत्रे  
ण सूर्या तपो नागेन्द्रो निशिता कुश  
न समदो दण्डेन गोगर्दभो ॥ व्याधिर्म  
षजसं ग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्वि  
षम् सर्वस्यौषधमास्ति शास्त्रा विद्म  
तं सर्वस्य नास्यौषधं ॥ ११ ॥

ز آب آتش گرم گردد فرو نشود فیل مست از کیمیا چون غلام پای در درمان بود پیر اثر دست بجز جلاز پیر درد گار	بود پیر تو به سر در ظل گردد خرو گاو از چوب گردد تیرام بماران کثروم فسون کارگر نه شد دارد سه نافع سازگار
---	--

साहित्यसंगीतकलाविहीनः सा  
क्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ॥ तृ  
णं न खादन्नपि जीवमानः तद्वाग  
धेयं परमं पशूनाम् ॥ १२ ॥

نداند معنی و منطق نه آن کس نه نظم و شریب لغت بر آن کس	
--	--

<p>مرا چون شد گمان بر دانش خویش          به فہمیدم کہ من ہستم بہہ دان          چو بہ ششم بہ نزد عارفان باز          ہجان دم دور کشد از من غروم</p>	<p>بگر دیدم جو فیل مست دل پریش          بشیر طبعم جہالت خود بمیدان          بہ دانستم ز جمع خوشتن راز          چو آمد ہوشک حاصل شد ہر دم</p>
--	--

हमिकलचितलालाकिन्नविगंधि  
 जुगुप्सितम् निरुपमरसंप्रीत्याखा  
 दन्नरास्थानिरामिषम् ॥ सुरपति  
 मपिश्वापाश्वस्थां विलोक्य न शङ्क  
 ते नहि गणयति क्षुद्रोजन्तुः परिभ  
 हफल्यताम् ॥ ८ ॥

<p>سنگ کو خور و استخوان کین          بیابد و لذت یافت خوان          بعین طور شخص حماقت شعار</p>	<p>چو او تر شود از لعاب دین          نداند و سستد از اصلی نشان          نہ تابد ز شہوت پے یادگار</p>
---	--

शिरः शार्धस्वगत्यतिशिरसस्त  
 क्षितधरं महीध्रादुनुङ्गाद्वनिम्  
 वनेश्चापिजलधिम् ॥ अथोगंगास  
 यंपदमुपगतास्तोकमथवा विवे  
 कभाष्टानाभवतिविनिपातः शतसु  
 खः ॥ ११० ॥

मधुविन्दुनारचयितुं क्षारासुधेरीह  
ते नैतुवाञ्छति यः स्वलान्प्रायिसता  
सूक्तेः सुधास्यंदिभिः॥

کہ پیل دمان بند سار و بقور  
شود شترین از قطره سحر شور  
نه بخشد نفع از سبے عقل غوار

ز نیلو فرے مار گیر و لمهور  
کند چاک خار اگل برگ نور  
وسے ازدوا یسج در روزگار

स्वायत्तमेकांतगुणं विधात्रा विनि  
मित्तं वादनमज्ञतायाः ॥ विशेषतः  
सर्वविदां समाजे विमूषणं मौनमप  
शिडितानाम् ॥७॥

کہ آگاہ گردوز حال و امور  
نہ گردد بکس حال او آشکار

چہ تنہا نشیند اگر بے شعور  
گزیند خموشی پیش وقار

यदा किञ्चित्ज्ञोऽहं द्विपद्वयमदांधः  
समभवंतदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवद  
बलिप्तमममनः ॥ यदा किञ्चित्किं  
चिद्बुधजनसकाशादवगतंतदाम्  
र्षास्मीति ज्वरद्वयमदोमेव्यपग  
तः ॥८॥



نه دانا فهمد از اثنان گفتن  
چو دانا يسبح باشد از دانا کار

که دانا داد اند از را از شریف گفتن  
ز بهر بهر هم بفهمد کار

प्रसह्यमणिमुद्धरेन्मकरवक्रद्वेषाकु  
रात् समुद्रमपिसतरेत्यचलदमिमा  
लाकुलम् ॥ भुजङ्गमपिकोपितेशिर  
सिपुव्यवहारयत् नतुप्रतिनिविष्ट  
मूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥ ४ ॥

توان از شهبگان بر آورد  
توان مار را دوا شستن هم بر

توان کرد بر بحر پیاده گذر  
نه فهمد و نه پیچد ان از خبر

लभेत सिकतामुतेलमपियत्नतः पी  
डयन् अपिवेच्चमृगतृषिा कासुसलि  
लं पिपासादितः ॥ कदाचिदपि पर्य  
टञ्छशाविषाणमासादयेत् नतुप्र  
तिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ५

توان از زمین روغن در کشید  
توان یافت شلخ از بت از کوه و دشت

ز ریگ روان آب آید پدید  
نه فهمد و نه پیچد ان سرگزشت

व्यालंवालमृणालतन्तुभिरसौरोद्धं  
समुज्जृम्भते छेतुषज्जमणीं निहरी  
षकुसुमप्रान्तेन सन्नस्यते ॥ माधयं

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

## नीतशतकंप्रारम्भ्यते

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्र  
मूर्तये ॥ स्वानुभूत्यक्सारायनमः शा  
न्तायतजसे ॥१॥

کہ اور انہ پوشتہ حیات گیم  
ہویدہست از منبت روزگار

چشم سجدہ و ذوالجلال و سلیم  
نیار و کسی وصف او در شمار

यांचिन्नयामिसततंमयि साविरक्तासा  
प्यन्यमिच्छतिजनसजनोऽन्यसक्तः ॥  
अस्मत्कृतेचपरितुष्यतिकाचिदन्या  
धिकंचतंचमदनंचइमांचमाच ॥२॥

ہے دارد او انس بادگیران  
ہان زن بخواہد مرا از ہم  
تہرا بہ عشق زمان نیز ہم

ز نے را کہ بخواہد ہم جو جان  
ہمون ربط دارد بد گیر ز نے  
تہرا بر انہما بما نیز ہم

अज्ञःसुखमाराध्यःसुखतरमाराध्य  
तुविशेषज्ञः ॥ ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मा  
मिन्नं नरं नरं जयति ॥३॥

॥ श्रीगोपालो जयवितरुम ॥

بہتر ترہری

مول محمد ترجمہ فارسی نظم

۵۳۲  
میرزا جبار جگر کشیام سنگھ صاحب بہادر بریں سان ضلع علیگڑھ

भर्तृहरिशतक

फारसी अनुवाद सहित

श्री युत राजा घनश्याम सिंह साहिब बहादुर  
रद्वीस मुसनिगत

مطبوعہ مطبع شمیم کاشی مشہر بہاتہام لہ شیا مال مالک مطبع

मतवपु श्यामकाशीमथुरामेलाला

श्यामलालके भवंधसे

छपा



گ ۳۲ ب ۸۹۱۵۱۲۲

This book is due on the date  
last stamped. A fine of 1 anna  
will be charged for each day the  
book is kept over time.

۵۳۲

۸۹۱۵۱۴۴  
۵۳۲  
بخش ششمی شک  
گ

[illegible]